लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–6

रूसी लोगों की लोक कथाऐं

वीरा ऐक्स के डी ब्लूमैन्थल

1903

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-6
Book Title: Roosi Logon Ki Lok Kathayen (Folk Tales from the Russian)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

रूस के लोगों की लोक कथाऐं

“लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की यह पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है – रूस की लोक कथाओं का एक और संग्रह। इससे पहले हमने रूस की लोक कथाओं का एक संग्रह प्रकाशित किया था जो **1889** में अलैक्ज़ैन्डर अफ़ानासीव की लिखी हुई लोक कथाओं के संग्रह से लियोनार्ड आर्थर मैगनस द्वारा अनुवाद किया गया था और जो **1916** में प्रकाशित हुआ था।

अभी यह एक दूसरा संग्रह है जो वीरा क्ज़ैनाफोन्टोवना कैलैमाटियानो डी ब्लूमैन्थल ने **1903** में अंगेजी में प्रकाशित किया था उसकी सारी कथाऐं हिन्दी में अनुवाद कर के यहाँ प्रकाशित की जा रही हैं। इसमें रूस की नौ लोक कथाऐं दी गयी हैं।[2]

तो लीजिये पढ़िये रूस की पुरानी लोक कथाओं के एक और संग्रह का पहला हिन्दी अनुवाद।

---

[2] Folk Tales from the Russian. By Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales. This book is available in English on : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/index.htm

1 ज़ारेवना मेंढकी[3]

पुराने ज़ार के राज्य में, मुझे मालूम नहीं कब, एक राजा अपनी पत्नी राजकुमारी के साथ रहा करता था। उनके तीन बेटे थे तीनों नौजवान थे तीनों बहादुर थे इतने कि कोई उनकी बहादुरी का वर्णन नहीं कर सकता था।

उन तीनों में से जो सबसे छोटा राजकुमार था उसका नाम था इवान ज़ारेविच[4]। एक दिन उनके पिता ने उनसे कहा कि — "मेरे प्यारे बच्चों तुम लोग अपने अपने तीर कमान लो, अपने मजबूत कमान की डोरी खींचो और अपने तीरों को जाने दो। जिसके ऑगन में तुम्हारा तीर जा कर पड़ेगा उसी घर की लड़की से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी।

सबसे बड़े ज़ारेविच का तीर एक बोयर[5] के घर में जा कर पड़ा जहॉ स्त्रियॉ रहती थीं। दूसरे ज़ारेविच का तीर एक बहुत ही अमीर सौदागर के लाल छज्जे पर जा कर पड़ा जहॉ एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी।

सबसे छोटे ज़ारेविच इवान का तीर बदकिस्मती से एक दलदल में जा कर पड़ा जहॉ उसे एक टर्राती हुई मेंढकी ने पकड़ लिया।

---

[3] The Tsarevna Frog (Tale No 1)
Tsarevna or Tzarevna means princess.

[4] Tsarevich or Tzarevich means Prince

[5] Boyar means a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

इवान ज़ारेबिच अपने पिता के पास आया और वोला — "पिता जी मैं एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता हूँ। क्या वह मेरे बराबर की है? नहीं पिता जी निश्चित रूप से वह मेरे बराबर की नहीं है।"

पिता ने कहा — "चिन्ता मत करो। तुमको तो अब मेंढकी से ही शादी करनी पड़ेगी क्योंकि ऐसा लगता है कि यही तुम्हारी किस्मत है।"

इस तरह तीनों भाइयों की शादी कर दी गयी। सबसे बड़े बेटे की बोयर की वेटी से दूसरे बेटे की अमीर सौदागर की बेटी से और सबसे छोटे बेटे इवान की एक मेंढकी से।

कुछ समय वाद राज्य के राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "अपनी अपनी पत्नियों से कहो कि बे कल सुबह को मेरे लिये एक डबल रोटी बना कर रखें।"

इवान घर लौटा तो उसके चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं थी और उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

मेंढकी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या आज महल में कोई खराब बात हो गयी है?"

इवान ज़ारेविच बोला — "हॉ खराब बात ही तो हो गयी है। मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम कल सुबह को उनके लिये एक डबल रोटी बनाओ।"

"ज़ारेविच तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम आराम से जा कर सोओ। सुबह का समय काली शाम के समय से ज़्यादा अच्छा सलाहकार होता है।"

अपनी पत्नी की सलाह मान कर ज़ारेविच सोने चला गया। ज़ारेविच के जाने के बाद मेंढकी ने अपनी मेंढकी वाली खाल निकाल दी और अब वह एक बहुत सुन्दर लड़की बन गयी थी। उसका नाम था वासिलीसा।

वह घर के बाहर निकली और उसने आवाज लगायी — "ओ मेरी आयाओ और नौकरानियों तुरन्त आओ और मेरे लिये कल सुबह के लिये एक सफेद डबल रोटी बनाओ। बिल्कुल ऐसी ही डबल रोटी जैसी मैं अपने पिता के शाही महल में खाया करती थी।"

सुबह को जब इवान ज़ारेविच मुर्गे की बॉग के साथ सो कर उठा, और यह तो तुमको मालूम ही कि मुर्गे कभी अपनी बॉग लगाने में देर नहीं करते तो उसकी डबल रोटी भी तैयार थी।

वह डबल रोटी इतनी बढ़िया थी कि उसका वर्णन करना मुश्किल था। क्योंकि ऐसी डबल रोटियाँ तो केवल परियों के देश में हीं मिलती हैं। वह दोनों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर मूर्तियों और शहरों और किलों से सजी हुई थी और अन्दर वह बर्फ की तरह से सफेद और पंखों की तरह मुलायम थी।

पिता ज़ार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और ज़ारेविच को खास धन्यवाद मिला।

ज़ार फिर मुस्कुराते हुए बोला — "अब एक दूसरा काम और है। तुम सब अपनी अपनी पत्नियों से मुझे कल सुबह तक एक एक कालीन[6] बना कर दो।"

ज़ारेविच इवान फिर मुँह लटकाये हुए घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारे पिता उस डबल रोटी को देख कर खुश नहीं हुए?"

इवान ज़ारेविच बोला — "नहीं उससे तो वह बहुत खुश थे पर अब मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम उनके लिये कल सुबह तक एक कालीन बनाओ।"

"तुम चिन्ता न करो ज़ारेविच और सोने जाओ। सुबह का समय हमारी जरूर ही सहायता करेगा।"

यह सुन कर ज़ारेविच इवान सोने चला गया। मेंढकी फिर से वासिलीसा में बदली और बाहर आ कर ज़ोर से आवाज लगायी — "ओ मेरी प्यारी आयाओ और वफादार नौकरानियों, अबकी बार तुम मेरे पास मेरे एक नये काम के लिये आओ। और मेरे लिये एक ऐसा रेशम का कालीन बनाओ जैसे कालीन पर मैं अपने पिता राजा के महल में बैठा करती थी।"

---

[6] Translated for the word "Rug", not the carpet. Rug is a floor covering of thick woven material

जैसे ही वासिलीसा ने यह कहा कि तुरन्त ही उन्होंने उसके लिये रेशम का कालीन बना दिया।

सुबह को जब मुर्गों ने बॉग दी तब ज़ारेविच इवान जागा और लो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर रेशम का कालीन रखा हुआ था। एक ऐसा कालीन जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता था।

उस कालीन में चमकीले रेशम के तारों के बीच सोने चॉदी के तार भी बुने हुए थे। और वह कालीन तो बस सिवाय तारीफ के और किसी काबिल था ही नहीं।

ज़ार पिता उस कालीन को देख कर बहुत खुश था और अपने बेटे को इतने सुन्दर कालीन के लिये बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद उसने एक नया हुकुम जारी किया।

अबकी बार वह अपने सुन्दर बेटों की सुन्दर पत्नियों को देखना चाहता था। और इसके लिये उनको उन्हें अगले दिन पेश करना था।

"टर्र टर्र। प्रिय ज़ारेविच, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या किसी ने तुमको महल में कोई बुरी बात कह दी है?"

"हॉ बुरी बात तो कह दी है। मेरे पिता ज़ार ने हम सबको यह हुक्म दिया है कि हम तीनों अपनी अपनी पत्नियों को उनके सामने ले जा कर पेश करें। अब बताओ कि मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूॅ।"

मेंढकी धीरे से टर्रायी और बोली — "यह कोई बहुत बुरा तो नहीं हो सकता पर उससे बुरा भी हो सकता है। ऐसा करो कि तुम अकेले ही जाओ और मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।

जब तुम ज़ोर की आवाज सुनो तो तुम उससे डर मत जाना बस यही कहना "एक बदकिस्मत मेंढकी एक बदकिस्मत बक्से में आ रही है।"

इवान राजी हो गया हालाँकि उसकी समझ में कुछ नहीं आया। ज़ार के महल में उसके दोनों बड़े भाई अपनी अपनी सुन्दर चमकती हुई खुश खुश बढ़िया कपड़े पहने पत्नियों के साथ पहले आये।

दोनों ने आ कर इवान ज़ारेविच का बहुत मजाक बनाया क्योंकि वह तो अकेला ही आया था।

उन्होंने उससे हॅसते हुए पूछा — "भाई तुम अकेले क्यों आये हो? अपनी पत्नी को साथ ले कर क्यों नहीं आये? क्या तुम्हारे पास उसको ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं था? तुम्हें ऐसी सुन्दरता मिल भी कहाँ सकती थी?

हम इस बात की शर्त लगाते हैं कि उसके पिता के पूरे दलदल के राज्य में ऐसी सुन्दरता कोई दूसरी नहीं होगी।"

और फिर वे हॅसते रहे हॅसते रहे।

और फिर एक बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। सारा महल कॉप गया वहाँ बैठे सारे मेहमान डर गये। अकेला ज़ारेविच शान्त

खड़ा रहा फिर बोला — "डरने की कोई बात नहीं है। मेरी मेंढकी अपने बक्से में आ रही है।"

सबने देखा कि लाल पोर्च में छह सफेद घोड़ों से जुती हुई एक उड़ने वाली सुनहरी गाड़ी रुकी और उसमें से सुन्दर वासिलीसा ने अपना हाथ अपने पति की तरफ बढ़ाया।

इवान उसका हाथ पकड़ कर उसको ओक की लकड़ी की बनी हुई भारी भारी मेजों की तरफ ले गया जिन पर बर्फ की तरह से सफेद मेजपोश बिछे हुए थे और जिन पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे जो केवल परियों के देश में ही मिलते थे और वहीं खाये जाते थे। मेहमान लोग भी वहाँ खुशी से खाना खा रहे थे और बात कर रहे थे।

वासिलीसा ने गिलास में से थोड़ी सी शराब पी और जो बाकी बची वह उसने अपनी बॉयी आस्तीन में डाल ली। फिर उसने तले हुए हंस के कुछ टुकड़े खाये और उनकी हड्डियाँ अपनी दॉयी आस्तीन में डाल लीं। दोनों बड़े भाइयों की पत्नी ने यह देख लिया तो उन्होंने भी उसकी नकल करते हुए वैसा ही किया।

जब खाना खत्म हो गया तो सब लोग नाचने के लिये उठे। सुन्दर वासिलीसा जो वहाँ एक चमकता तारा लग रही थी सबसे पहले आगे आयी। पहले वह अपने राजा ज़ार के सामने झुकी फिर उसने मेहमानों के सामने सिर झुकाया उसके बाद अपने खुश पति ज़ारेविच इवान के साथ नाचने लगी।

नाचते समय वासिलीसा ने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कमरे के बीच में एक झील प्रगट हो गयी जिससे वहॉ की हवा ठंडी हो गयी। फिर उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से सफेद हंस निकल कर झील के पानी में तैरने लगे।

ज़ार, वहॉ बैठे मेहमान, नौकर, यहॉ तक कि भूरी बिल्ली भी जो वहॉ एक कोने में बैठी थी वह भी सुन्दर वासिलीसा की सुन्दरता को देख कर हैरान रह गये।

इवान के दोनों बड़े भाइयों की पत्नियॉ तो उसको देख कर बहुत ही जल रही थीं। जब उनके नाचने की बारी आयी तो उन्होंने भी अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी जैसे वासिलीसा ने हिलायी थी तो उन्होंने तो सारी तरफ शराब फैला दी।

उसके बाद उन्होंने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से बजाय हंसों के उनकी हड्डियॉ निकल कर पिता ज़ार के चेहरे पर जा पड़ीं। इससे पिता ज़ार बहुत गुस्सा हो गया और उसने उनको महल के बाहर निकाल दिया।

इस बीच इवान ज़ारेविच एक पल तो देखता रहा फिर वह वहॉ से किसी तरह बिना किसी के देखे निकल गया। वह तुरन्त अपने घर गया, अपनी पत्नी की मेंढकी की खाल ढूँढी और उसको आग में डाल कर जला दिया।

जब वासिलीसा घर वापस आयी तो अपनी खाल ढूँढने लगी पर वह उसको मिली नहीं तो वह बहुत दुखी हो गयी और उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

उसने अपने पति ज़ारेविच इवान से कहा — "ओ प्रिय ज़ारेविच, यह तुमने क्या किया। अब तो मेरे लिये इस मेंढक की बदसूरत खाल पहनने का बहुत थोड़ा सा ही समय बाकी रह गया था।

वह समय पास ही था जब हम हमेशा के लिये एक साथ खुशी खुशी रहते। पर अब तुम्हें मुझे एक दूर देश में ढूँढना पड़ेगा जिसका रास्ता कोई नहीं जानता – अमर कोशची[7] के महल का रास्ता।"

इतना कह कर वह एक सफेद हंस में बदल गयी और खिड़की के रास्ते उड़ गयी। ज़ारेविच इवान तो यह देख सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा। फिर उसने भगवान से प्रार्थना की उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम की तरफ क्रास बनाया और किसी अनजाने सफर पर निकल पड़ा।

कोई नहीं जानता कि यह सफर कितना लम्बा था पर चलते चलते एक दिन वह एक बूढ़े से मिला। उसने बूढ़े को सिर झुकाया तो बूढ़ा बोला — "गुड डे ओ बहादुर नौजवान। तू क्या ढूँढ रहा है और किधर जा रहा है?"

---

[7] Koschie or Koschev the Deathless – a villain in Russian folklores

ज़ारेविच इवान ने उसको बिना कुछ छिपाये हुए अपनी बदकिस्मती के बारे में सब सच सच बता दिया।

तो बूढ़े ने पूछा — "तो तूने उसकी वह मेंढकी वाली खाल जलायी ही क्यों? यह तूने कितना गलत काम किया।

अब तू मेरी बात सुन। वासिलीसा अपने पिता से भी ज़्यादा अक्लमन्द पैदा हुई थी। वह अपनी बेटी की अक्लमन्दी से बहुत जलता था इसलिये उसने अपनी बेटी को तीन साल तक मेंढकी बने रहने का शाप दे दिया।

पर मुझे तुझ पर दया आती है और मैं तेरी सहायता करना चाहता हूँ। ले यह एक जादू की गेंद ले। इस गेंद को अपने सामने फेंक देना और जिस तरफ यह जाये तू भी इसके पीछे पीछे चले जाना।"

ज़ारेविच इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसकी दी हुई गेंद अपने सामने फेंक दी। अब जिधर को भी वह गेंद चली वह उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह चलता गया चलता गया। चलते चलते वह एक फूलों वाले मैदान में निकल आया। वहाँ उसको एक भालू मिला, एक रूसी भालू।

इवान ज़ारेविच ने अपन तीर कमान लिया और उसको मारने ही वाला था कि भालू बोला — "ओ दयालु ज़ारेविच मुझे मत मारो।

कौन जानता है कि किसी दिन मैं तुम्हारे काम आ जाऊँ।" इवान ने उस भालू को छोड़ दिया।

वहाँ पर धूप में एक बतख उड़ी जा रही थी, एक सफेद प्यारी सी बतख। ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये एक बार फिर अपना तीर कमान उठाया कि वह बतख भी बोल पड़ी — "ओ भले ज़ारेविच मुझे मत मारो। मैं किसी दिन तुम्हारे काम जरूर आऊँगी।"

सो इवान ने उसको भी छोड़ दिया और आगे चल दिया। आगे चल कर उसको एक बड़ा खरगोश[8] मिला तो ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये फिर से अपना तीर कमान निकाला कि तभी उसने कहा — "मुझे मत मारो ओ बहादुर ज़ारेविच मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारी सहायता करूँगा।"

सो इवान ज़ारेविच ने उस बड़े खरगोश को भी छोड़ दिया। अब वह फिर आगे चला तो वह एक समुद्र के किनारे आ गया।

उस समुद्र के किनारे पर रेत में एक मछली पड़ी थी। मुझे उस मछली का नाम तो नहीं मालूम पर वह एक बहुत बड़ी मछली थी और उस रेत पर पड़ी पड़ी मरने वाली हो रही थी।

---

[8] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal, but a little bigger than rabbit – see its picture above.

मछली इवान से बोली — "ओ ज़ारेविच इवान मेरे ऊपर दया करो मुझे इस समुद्र के ठंडे पानी में फेंक दो।" ज़ारेविच इवान ने ऐसा ही किया और समुद्र के किनारे किनारे आगे चल दिया।

इवान के आगे चलती चलती गेंद इवान को एक झोंपड़ी के पास ले आयी। यह एक अजीब सी छोटी सी झोंपड़ी थी जो एक छोटी सी मुर्गी की टॉगों पर खड़ी हुई थी

इवान उसको देख कर बोला — "इज़बूष्का इज़बूष्का।" रूसी भाषा में इसका मतलब होता है छोटी झोंपड़ी। "इज़बूष्का मैं चाहता हूँ कि तू अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर ले।"

और लो उस झोंपड़ी ने तो अपना सामने का हिस्सा इवान के सामने कर लिया। इवान उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें तो एक जादूगरनी बैठी हुई है। वह जादूगरनी तो इतनी बदसूरत थी कि उसने इससे पहले कभी इतना बदसूरत कोई देखा नहीं था।

उस जादूगरनी ने उसको देखते ही पूछा — "ओ इवान ज़ारेविच तुम यहॉ क्यों आये हो?"

इवान गुस्से से चिल्ला कर बोला — "ओ बूढ़ी बुरा करने वाली, क्या रूस ने तुझे एक थके हुए मेहमान से इसी तरीके से सवाल करना सिखाया है? बजाय इसके कि तू उसको कुछ खाने को दे, कुछ पीने को दे, हाथ मुँह धोने के लिये थोड़ा सा गर्म पानी दे। तू उससे ऐसा सवाल कर रही है?"

वह जादूगरनी बाबा यागा[9] थी। तब बाबा यागा ने ज़ारेविच को बहुत सारा खाना दिया बहुत सारा पीने को दिया और मुँह हाथ धोने के लिये गर्म पानी दिया। ज़ारेविच इवान यह सब कर के ताजा हुआ।

जल्दी ही वह बात करने के लायक हो गया तो उसने उसको अपनी शादी की अजीब कहानी सुनायी। उसने उसे बताया कि कैसे उसकी पत्नी उससे खो गयी थी और अब उसकी बस एक ही इच्छा थी और वह थी उसको पाना।

जादूगरनी बोली — “मुझे सब मालूम है। आजकल वह अमर कोशची के महल में है। और तुम्हें यह पता होना चाहिये कि वह एक बहुत ही भयानक आदमी है।

वह उसकी दिन रात रखवाली करता है और कोई भी उसे कभी भी नहीं जीत सकता। उसकी मौत एक जादू की सुई में है। वह सुई एक बड़े खरगोश के अन्दर है वह खरगोश एक बड़े बक्से के अन्दर है। वह बक्सा ओक के पेड़ की डालियों के बीच छिपा हुआ है।

और वासिलीसा की तरह कोशची इस ओक के पेड़ की भी दिन रात रखवाली करता है। इसका मतलब है कि किसी भी खजाने से ज़्यादा।”

---

[9] Baba Yaga is one of the main evil characters of Russian folklores. Of course in this folktale she helps the Prince.

तब जादूगरनी ने इवान ज़ारेविच को बताया कि वह ओक का पेड़ उसे कहॉ मिलेगा। सुनते ही इवान उधर की तरफ चल दिया। पर जब उसने ओक का पेड़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ। उसे समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे और अपना काम कहॉ से शुरू करे।

लो तभी उसका जानने वाला रूसी भालू वहॉ आ गया। वह पेड़ के पास पहुॅचा और उसको जड़ से उखाड़ दिया।

जड़ से उखड़ते ही वह पेड़ नीचे गिर पड़ा और उस पर रखा बक्सा भी नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही वह बक्सा टूट गया। बक्से के टूटते ही उसमें एक बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया।

तभी इवान ने देखा कि उसका दोस्त बड़ा खरगोश कहीं से आया और उसके पीछे पीछे भागा। इवान वाले बड़े खरगोश ने कोश्ची वाले बड़े खरगोश को तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे फाड़ दिया।

खरगोश के फटते ही उसमें से एक भूरी बतख निकल कर भागी और आसमान में बहुत ऊॅची उड़ गयी और गायब हो गयी। पर इवान की सुन्दर सफेद बतख ने उसका पीछा किया और उसको मार दिया।

उसके मरते ही उसमें से एक अंडा निकल पड़ा और वह अंडा समुद्र के नीले पानी में गिर पड़ा। यह देख कर तो ज़ारेविच की जान ही निकल गयी। अब वह उसमें से सुई कैसे निकालेगा कैसे

वह अमर कोशची को मारेगा और फिर कैसे अपनी सुन्दर बासिलीसा को हासिल करेगा।

कि तभी उसने देखा कि वह बड़ी वाली मछली जिसको उसने समुद्र में फेंका था समुद्र में से बतख का अंडा लिये चली आ रही है। उसने अंडा ला कर समुद्र के किनारे की रेत पर फेंक दिया। इवान ज़ारेविच ने तुरन्त वह अंडा उठाया और उसे तोड़ कर उसमें से सुई निकाल ली जिस पर अमर कोशची की ज़िन्दगी निर्भर थी।

उसी समय अमर कोशची की सारी ताकत हमेशा के लिये जाती रही। इवान ज़ारेविच उस सुई को ले कर उसके राज्य में घुस गया और उसको उस जादुई सुई से मार दिया। उसके एक महल में उसको सुन्दर वासिलीसा भी मिल गयी।

वह उसको ले कर घर आ गया और फिर वे खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

2 सात साइमन[10]

एक बहुत बड़े राज्य के एक देश जो कई सागर कई द्वीप और कई नदियों के उस पार एक चौरस जमीन पर था और जो एक मेज जैसा दिखायी देता था उस पर एक बहुत बड़ा शहर था। उस शहर में एक ज़ार रहता था जिसका नाम आर्चिडी[11] था। क्योंकि वह ऐगी का बेटा था तो उसको लोग ऐगीविच कहते थे।

वह एक बहुत ही मशहूर ज़ार था और साथ में चतुर भी था। वह इतना अमीर था कि उसकी सम्पत्ति को गिनना मुश्किल था। उसके पास असंख्य योद्धा थे। उसके राज्य में 40 गुणा 40 शहर थे। उसके हर शहर में 10 महल थे जिनके चॉदी के दरवाजे थे सोने की छतें थीं और शानदार क्रिस्टल की खिड़कियॉ थीं।

उसके पास 12 सलाहकारों की एक मंडली थी जिनकी सबकी आधा गज लम्बी दाढ़ी थी और अक्लमन्दी भरा दिमाग था। उसके ये सलाहकार अपने राजा को सच के सिवा और कुछ सलाह नहीं देते थे। किसी की कोई झूठ बोलने की हिम्मत नहीं थी।

ऐसा ज़ार खुश रहने के सिवा और क्या कर सकता था। पर यह सच है कि न तो सम्पत्ति और न ही अक्लमन्दी उसको कोई

[10] Seven Simeons (Tale No 2)

[11] Tzar Archidei, because he was the son of Aggie, he was called Aggievich.

खुशी दे पा रही थी क्योंकि सोने के महलों में रह कर भी उसका गरीब दिल बेचैन था परेशान था।

ऐसा ही कुछ ज़ार आर्चिडी के साथ था। वह अमीर था वह अक्लमन्द था इसके अलावा बहुत सुन्दर था पर उसको उसकी पसन्द की कोई दुलहिन नहीं मिल रही थी। जो बात करने में चतुर हो उसके बराबर की सुन्दर हो। यही ज़ार आर्चिडी के दुख की वजह थी।

एक दिन वह अपनी सोने की आराम कुरसी में बैठा हुआ था। अपने विचारों में खोया हुआ अपनी खिड़की के बाहर झॉक रहा था। बहुत देर तक देखते रहने के बाद उसने देखा कि कुछ विदेशी जहाज़ उसके महल के सामने आ कर लगे।

मल्लाहों ने अपने जहाज़ किनारे पर लगाये पतवार उतारे और भारी लंगर समुद्र में डाल दिये। फिर उन्होंने जहाज़ से किनारे तक तख्ते लगाने शुरू किये जिससे वे किनारे पर आ सकें।

उन सबसे पहले एक बूढ़ा सौदागर उतरा। उसकी सफेद दाढ़ी थी और वह देखने में एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी लग रहा था। उसको देख कर ज़ार के मन में एक ख्याल आया "समुद्री सौदागरों को बहुत सारे मामलों की अक्सर ही जानकारी रहती है। अगर मैं इनसे पूछूँ तो हो सकता है कि इत्तफाक से इनको किसी ऐसी

राजकुमारी का पता हो जो सुन्दर हो चतुर हो और मेरे लिये यानी ज़ार आर्चिडी के लिये ठीक हो।"

तुरन्त ही उसने अपने लोगों को हुक्म दिया कि वे इस जहाज़ पर आये सब समुद्री सौदागरों को महल में ले कर आयें।

ज़ार का हुक्म सब सौदागर ज़ार के महल में आ कर इकट्ठा हो गये। उन्होंने कोने में रखी धार्मिक पवित्र मूर्तियों को सिर झुकाया फिर ज़ार के अक्लमन्द सलाहकारों को सिर झुकाया।

ज़ार ने अपने नौकरों से उन सबको हरी तेज़ शराब देने के लिये कहा। सब मेहमानों ने हरी तेज़ शराब पी और अपनी अपनी दाढ़ियाँ कढ़े हुए तौलियों से पोंछीं।

इसके बाद ज़ार उन सबसे बोला — "हमको मालूम है कि आप शानदार सौदागर लोग बड़े बड़े समुद्र पार करते हैं और बहुत सारी अद्भुत चीज़ें देखते हैं। मेरी इच्छा है कि आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ जिसका आप मुझे बिना किसी धोखाधड़ी के सीधा जवाब दें।"

मेहमान सौदागरों ने सिर झुका कर कहा — "जैसा आप चाहें ओ ताकतवर ज़ार आर्चिडी ऐगीविच।"

ज़ार बोला — "ठीक है तब क्या आप मुझे बता सकते हैं क्या कहीं कोई ऐसी राजकुमारी है जो मेरे जैसी चतुर और सुन्दर हो। एक ऐसी लड़की जो मेरी पत्नी बनने के लायक हो। इस देश की लायक ज़ारित्ज़ा।"

यह सुन कर मेहमान सौदागर थोड़े से उलझन में पड़ गये।

काफी देर की शान्ति के बाद उनमें से सबसे बड़ी उम्र वाला सौदागर बोला — "जरूर। मैंने सुना है कि बड़े समुद्र के उस पार बूयान[12] नाम का एक टापू है उस पर एक बहुत बड़ा देश है उस देश के राजा के एक बेटी है हेलेना[13] जो बहुत सुन्दर है। मैं कह सकता हूँ कि वह आपसे कम सुन्दर नहीं है साथ में वह अक्लमन्द भी बहुत है।

एक बार एक अक्लमन्द आदमी ने उसकी दी हुई पहेली को तीन साल तक सुलझाने की कोशिश की पर वह उसको सुलझा नहीं सका था।"

ज़ार बोला — "मेहरबानी कर के मुझे बताइये कि वह टापू यहाँ से कितनी दूर है और उस तरफ कौन सी सड़क जाती है।"

बूढ़े सौदागर ने जवाब दिया — "टापू तो पास नहीं है। अगर कोई समुद्र के रास्ते जाये तो उसे कम से कम 10 साल लगेंगे। और इसके अलावा उस टापू के लिये दूसरा कोई रास्ता हमें पता नहीं है। फिर भी अगर हम उसका कोई दूसरा रास्ता नहीं जानते तो इसका मतलब यह है कि राजकुमारी हेलेना फिर आपके लिये नहीं है।"

ज़ार आर्चिडी गुस्से से चिल्लाया — "तुम्हारी यह बात कहने की हिम्मत कैसे हुई ओ लम्बी दाढ़ी वाले।"

---

[12] Buyan island

[13] Helena – the daughter of the King of Buyan Island country

बूढ़ा बोला — “आपकी इच्छा पूरी हो पर आप अपने बारे में सोचिये। अगर आप अपना दूत बूयान द्वीप पर भेजते हैं तो वह वहाँ पहुँचने के लिये पूरे 10 साल लेगा और फिर 10 साल वहाँ से वापस आने में लेगा।

इसका मतलब यह है कि उसको यहाँ वापस आने में पूरे 20 साल लग जायेंगे। उस समय तक वह सुन्दर राजकुमारी 20 साल और बड़ी हो जायेगी। किसी लड़की की सुन्दरता तो चिड़िया की तरह होती है जो बहुत देर तक नहीं ठहरती।”

यह सुन कर ज़ार आर्चिडी सोच में पड़ गया। बूढ़ा तो सचमुच में ठीक कह रहा था।

वह अपने मेहमान सौदागरों से बोला — “आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद रास्ते के मेहमानों। व्यापार के आदरणीय सौदागरों। आप लोग भगवान का नाम ले कर जायें और देश में बिना किसी टैक्स के व्यापार करें। सुन्दरी हेलेना के बारे में क्या करना है यह मैं अपने आप ही सोचूँगा।”

सब सौदागरों ने ज़ार को सिर झुकाया और उसका कीमती महल छोड़ कर चले गये। उनके जाने के बाद ज़ार आर्चिडी चुपचाप बैठ गया और बहुत देर तक सोचता रहा पर उसको अपनी समस्या के हल का कोई ओर छोर नहीं मिला।

फिर उसने सोचा “चलूँ बाहर मैदान में घूम कर आता हूँ। मैं शिकार करने जाता हूँ थोड़ी देर के लिये शायद अपना दुख भूल

जाऊँ। हो सकता है कि मुझे रास्ते में ही कुछ रास्ता भी सुझायी दे जाये।" सो वह शिकार के लिये चला गया।

ज़ार आर्चिडी ऐगीविच अपने साथियों के साथ जंगल में आ गया। चीलें और बाज़ उसके साथियों के कन्धों पर बैठे हुए थे। लोग उनको छोड़ने का इन्तजार कर रहे थे। वे लम्बी टॉगों वाले सारस और सफेद छाती वाले हंसों की तलाश में थे।

अब कहानी सुनने वालो सुनो कि परियों की कहानी तो बहुत जल्दी कही जाती है पर ज़िन्दगी उतनी जल्दी आगे नहीं बढ़ती। ज़ार आर्चिडी घोड़े की पीठ पर बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा। घूमते घूमते वह एक घास की हरी घाटी में आ गया। वहॉ आ कर वह चारों तरफ देखने लगा तो उसे वहॉ एक बहुत ही बढ़िया तरीके से जोता हुआ खेत नजर आया जिसमें अन्न की पकी हुई सुनहरी बालें लहलहा रही थीं।

कितना सुन्दर लग रहा था वह खेत। ज़ार उसकी तारीफ करता वहॉ खड़ा रह गया। उसके मुॅह से निकला — "ऐसा लगता है कि इसके मालिक बहुत अच्छे लोग होंगे – ईमानदार मेहनती। काश मेरे देश में सारे ही किसान इतने ही ईमानदार और मेहनती हों तो मेरी जनता को यह कभी पता ही नहीं चले कि भूख क्या होती है।

साथ में वह इतना ज़्यादा भी होगा कि हम उसको बाहर भेज कर उससे सोना और चॉदी भी कमा सकेंगे।"

यह सोच कर ज़ार आर्चिडी ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि वे यह पता लगायें कि यह खेत किसके हैं और उनके क्या नाम हैं। उसका हुक्म पा कर शिकारी सईस और नौकर सभी चारों तरफ दौड़ पड़े और सात बहादुर आदमियों को ले आये। सब बहुत सुन्दर थे सबके लाल लाल गाल थे और सब खूब गोरे थे।

वे किसानों की तरह खाना खा रहे थे। इसका मतलब है कि वे राई[14] के आटे की रोटी प्याज के साथ खा रहे थे और साफ पानी पी रहे थे।

उनकी कमीजें लाल थीं और उनके गले में सुनहरे रंग की पट्टी पड़ी थी। वे सब इतने एक से लग रहे थे कि उनको एक दूसरे से अलग करना मुश्किल था।

शाही दूतों ने वहाँ पहुँच कर उनसे पूछा — "यह किसका खेत है यह सुनहरे गेहूँ वाला खेत?"

सातों बहादुर किसान खुशी से बोले — "यह हमारा खेत है। हमने इसे जोता है और हमने इसमें सुनहरा गेहूँ उगाया है।"

"और तुम लोग किस तरह के लोग हो?"

"हम ज़ार आर्चिडी ऐगीविच के किसान हैं। हम लोग भाई हैं और एक ही माता पिता के बच्चे हैं। हम सबका नाम साइमन[15] है इसलिये हम सात साइमन हैं।"

---

[14] A kind of grain whose flour is used to make bread. It is often black in color but a white variety is also available. It is vey common in Russia but it is considered a poor man's food.

[15] Simeon – name of all seven brothers

तुरन्त ही यह बात ज़ार तक पहुँचा दी गयी तो ज़ार ने उनको देखने की इच्छा प्रगट की। उनको हुक्म दिया कि वे उन भाइयों को तुरन्त उसके पास ले कर आयें।

सातों साइमन वहाँ आये और उन्होंने ज़ार के सामने सिर झुकाया। ज़ार ने उनको अपनी चमकीली आँखों से देखा और पूछा — "तुम लोग कैसे आदमी हो जिनके खेत इतने अच्छे जुते हुए हैं।"

सातों में से एक, सबसे बड़े भाई, ने जवाब दिया — "हम सब आप ही के किसान हैं मालिक। सीधे सादे, बिना बुद्धि वाले, किसान के बेटे हैं सगे भाई हैं और हम सबके एक ही नाम हैं। हमारे बूढ़े पिता ने हमें लगातार काम करने के अलावा हमें हमेशा भगवान की प्रार्थना करना, आपका कहा मानना और हमेशा टैक्स देना बताया है।

उन्होंने हममें से हर एक को एक कला सिखायी है। क्योंकि यह पुरानी कहावत है कि कला कभी बोझ नहीं होती बल्कि हमेशा ही फायदा करती है। हमारे पिता चाहते हैं कि यह कला हम अपने मुसीबत के दिनों के लिये बचा कर रखें पर हम कभी अपनी खेती न छोड़ें। उसे मेहनत से करें और उसी में सन्तुष्ट रहें।"

वे आगे बोले — "वह यह भी कहा करते थे अगर कोई धरती माँ की तरफ ध्यान देता है और उसे मेहनत से जोतता और बोता है

तो धरती मॉ भी उसको हमेशा के लिये आराम की जगह देने के अलावा खूब खाना देती है।”

ज़ार आर्चिंडी को उसका यह सीधा सादा जवाब बहुत अच्छा लगा। वह बोला — “बहुत अच्छे बहादुर नौजवानो, मेरे किसानो, जमीन जोतने वालो, सोना इकट्ठा करने वालो। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारे पिता ने तुम्हें क्या क्या कला सिखायी है। तुम लोग क्या क्या जानते हो?”

पहला साइमन बोला — “मेरी कला कोई बहुत अक्लमन्दी की कला तो नहीं है। अगर आप मुझे सामान और आदमी दे दें तो मैं सफेद पत्थर का एक बहुत बड़ा खम्भा बना सकता हूँ जो बादलों के उस पार आसमान तक जायेगा।”

ज़ार आर्चिंडी बोला — “यह तो बड़ा अच्छा है। और तुम नम्बर दो साइमन तुम क्या कला जानते है।”

दूसरा साइमन जल्दी से बोला — “मेरी कला तो बहुत सादी सी है। अगर मेरा भाई वह खम्भा बनायेगा तो मैं उस खम्भे पर सबसे ऊपर तक चढ़ जाऊँगा तो सूरज के नीचे जितने भी राज्य हैं उन सबको देख लूँगा कि उन सबमें क्या क्या हो रहा है।”

ज़ार हॅसते हुए बोला — “तुम्हारी कला भी कोई बुरी नहीं है। और तुम्हारी कला ओ तीसरे साइमन?”

तीसरा साइमन का जवाब तो तैयार था। उसने कहा — “मेरी कला भी बहुत सीधीसादी सी है। यह एक किसान की कला है।

अगर आपको जहाज़ों की जरूरत होगी तो आपके विदेशी बुद्धिमान लोग तो उसे वैसे ही बनायेंगे जैसी उनकी बुद्धि होगी।

पर अगर आप मुझसे कहेंगे तो मैं उनको इस तरह बनाऊँगा कि मैं कहूँगा "एक दो तीन" और जहाज़ बन कर तैयार हो जायेगा। मेरा जहाज़ एक किसान की तुरत बुद्धि का नतीजा होगा। जबकि वे विदेशी जहाज़ समुद्र में किसी जगह जाने के लिये एक साल तक चलेंगे मेरे जहाज़ एक घंटा चलेंगे। अगर दूसरे जहाज़ **10** साल चलेंगे तो मेरे केवल एक हफ्ता ही चलेंगे।"

यह सुन कर ज़ार बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "ठीक है ठीक है। और चौथे साइमन तुम्हारी कला क्या है?"

चौथा भाई सिर झुका कर बोला — "मेरी कला को भी कोई बुद्धि की जरूरत नहीं है। अगर मेरा भाई आपके लिये कोई जहाज़ बनायेगा तो मैं उसे चलाऊँगा।

अगर कोई दुश्मन उसका पीछा करता होगा या फिर कोई तूफान आता होगा तो मैं जहाज़ को पानी में डुबो दूँगा जहाँ हमेशा शान्ति रहती है और जब दुश्मन चला जायेगा या फिर तूफान शान्त हो जायेगा तब मैं उस जहाज़ को फिर से समुद्र के ऊपर ले आऊँगा।"

ज़ार बोला — "बहुत अच्छे। और तुम पाँचवें साइमन तुम क्या कला जानते हो? क्या तुम्हें भी कोई कला आती है?"

पाँचवा साइमन बोला — "मेरी कला ओ ज़ार आर्चिडी कोई बहुत सुन्दर कला नहीं है क्योंकि मैं लोहार हूँ। अगर आप मुझे कोई बन्दूक बनाने की इजाज़ात दे दें तो मैं आपको अपने आप चलने वाली बन्दूक बना कर दिखा सकता हूँ। कोई भी गरुड़ आसमान में कितना ही दूर क्यों न हो वह उससे बच नहीं पायेगा।"

"यह भी कोई बुरा नहीं है। और छठे साइमन तुम?"

छठा साइमन बोला — "मेरी कला कोई कला नहीं है। अगर मेरा भाई कोई चिड़िया या जानवर मारता है तो मैं उसे नीचे गिरने से पहले ही पकड़ लेता हूँ – शिकारी कुत्ते से भी ज़्यादा अच्छे तरीके से।

अगर शिकार नीले समुद्र में गिरता है तो मैं उसको समुद्र की तली से भी ले आता हूँ। अगर वह किसी घने जंगल में गिरता है तो मैं उसको रात के अँधेरे में भी ला सकता हूँ। और अगर वह कहीं बादलों में अटक जाये तो मैं उसको वहाँ से भी ढूँढ कर ला सकता हूँ।"

ज़ार आर्चिडी को छठे साइमन की कला बहुत अच्छी लगी। अगर देखो तो ये सब बहुत सादी सी कलाऐं थीं। इनमें किसी में किसी बुद्धि की जरूरत नहीं थी बल्कि ये सब दिल बहलाने वाली थीं।

ज़ार को उन किसानों के बोलने का ढंग भी बहुत अच्छा लगा तो उसने उनसे कहा — "बहुत बहुत धन्यवाद मेरे किसानो, जमीन

जोतने वालो, वफादार काम करने वालो। तुम्हारे पिता सच कहते हैं। कला कोई बोझ नहीं होती बल्कि फायदेमन्द ही होती है।

अब तुम लोग अपनी यह कला दिखाने के लिये मेरी राजधानी चलो। तुम्हारे जैसे लोगों का मेरे यहाँ स्वागत है। जब तुम्हारी फसल काटने का उनके गट्ठर बनाने का उनमें से गेहूँ निकालने का गेहूँ को बाजार ले जाने का समय आयेगा तो मैं तुमको घर वापस भेज दूँगा।"

इस पर सब साइमन ने ज़ार को नीचे तक सिर झुकाया और बोले — "जैसी आपकी इच्छा। हम तो आपकी आज्ञाकारी जनता हैं।

अब ज़ार को सबसे छोटे साइमन का ध्यान आया कि उसने उससे तो उसकी कला या हुनर पूछा ही नहीं था सो वह उससे बोला — "और सातवें साइमन तुम्हारा क्या हुनर है? तुम भी तो बताओ।"

"मेरे अन्दर कोई हुनर नहीं है ओ ज़ार आर्चिडी ऐगीविच। मैंने बहुत सारे हुनर सीखे पर मुझे कोई अच्छा नहीं लगा हालाँकि मैं सब कुछ थोड़ा थोड़ा जानता हूँ। मुझे मालूम नहीं कि योर मैजेस्टी इसे पसन्द भी करेंगे या नहीं।"

ज़ार आर्चिडी ऐगीविच बोला — "अरे अपना भेद बताओ तो।"

सातवाँ साइमन बोला — "नहीं ज़ार आर्चिडी ऐगीविच। पहले आप मुझसे अपना शाही वायदा कीजिये कि आप मेरे उस हुनर की वजह से आप मुझे मारेंगे नहीं बल्कि मेरे ऊपर दया करेंगे। उसके बाद ही मैं अपने हुनर का भेद आप पर खोलूँगा।"

ज़ार आर्चिडी बोला — "ठीक है। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। मैं तुमसे अपना शाही वायदा करता हूँ जो सच है और जिसे मैं तोड़ूँगा नहीं कि जो कुछ भी तुम मुझको बताओगे मैं तुम्हें उसके लिये माफ कर दूँगा।"

ऐसे दयावान शब्द सुन कर सातवाँ साइमन मुस्कुराया। उसने चारों तरफ देखा अपने घुँघराले बाल हिलाये और बोला — "मेरा हुनर वह है जिसके लिये आपके देश में कोई माफी नहीं है और बस मैं वही एक चीज़ कर सकता हूँ।

मेरा हुनर है चोरी करना और यह पता न लगने देना कि वह चोरी मैंने कब और कैसे की। ऐसा कोई खजाना नहीं है किसी के पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है यहाँ तक कि कोई जादू पड़ी हुई चीज़ भी नहीं है ऐसी कोई छिपी हुई जगह भी नहीं है जहाँ मैं न पहुँच सकूँ। अगर मेरी उसको चुराने की इच्छा हो तो।"

जैसे ही सातवें साइमन के ये शब्द ज़ार आर्चिडी के कानों में पड़े वह तो गुस्से से आग बबूला हो गया। वह चिल्लाया — "नहीं। मैं यकीनन तुझे इस बात के लिये कभी माफ नहीं करूँगा ओ चोर। और तेरी बेदर्द मौत का हुक्म सुना दूँगा।

मैं तुझे जंजीरों से बँधवा कर अपने जेल के तहखाने में फिंकवा दूँगा। खाने के लिये तुझे केवल रोटी और पानी ही मिलेगा जब तक तू अपना यह हुनर नहीं भूल जाता।"

सातवें साइमन ने विनती की — "ओ महान दयावान ज़ार आर्चिडी ऐगीविच। मेहरबानी कर के अपने हुक्म को ज़रा रोक लें और पहले मेरी बात सुन लें।

हमारी पुरानी रूसी कहावत यह कहती है "वह चोर नहीं है जो पकड़ा नहीं जाता और न ही वह चोर है जो चुराता है बल्कि चोर वह है जो दूसरों को चोरी करने के लिये उकसाता है।"

अगर मेरी इच्छा चोरी करने की रही होती तो मैंने बहुत दिन पहले चोरी कर ली होती। और आपके जज मुझसे अपना हिस्सा ले लेते और मैंने भी सफेद पत्थर की दीवार वाला महल बनवा लिया होता और बहुत अमीर हो गया होता।

लेकिन आप इस बात पर ध्यान दीजिये कि मैं नीचे घर में पैदा हुआ एक किसान का बेटा जरूर हूँ और मुझे चोरी करना भी बहुत अच्छी तरह से आता है पर मैं चोरी नहीं करूँगा। अगर आपको मेरा हुनर सीखने की इच्छा है तो मैं आपसे कैसे छिपा सकता हूँ।

और अगर आप मुझे केवल इस बात को आपके सामने मानने के लिये मौत की सजा दे देंगे तो फिर आपके शाही वायदे की क्या कीमत?"

ज़ार कुछ देर तक सोचता रहा।

फिर वह बोला — "ठीक है इस बार तो मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ क्योंकि इस बार मुझे खुशी है कि मैं तुमसे अपना शाही वायदा निभा रहा हूँ लेकिन आज से बल्कि अभी से न तो तुम दिन देखोगे न सूरज की रोशनी देखोगे और न चाँदी जैसा चाँद देखोगे।

तुम आजादी से खेतों और मैदानों में घूम भी नहीं सकोगे पर मेरे प्यारे मेहमान अबसे तुम ऐसे महल में रहोगे जहाँ सूरज की किरनें भी नहीं आतीं।

ओ मेरे नौकरों ले जाओ इसको और इसके हाथ पैर बाँध दो और इसको मेरे चीफ़ जेलर के पास ले जाओ। और तुम छह साइमन मेरे पीछे पीछे आओ। तुमको मेरे यहाँ इज़्ज़त और इनाम मिलेंगे। कल से तुम हर एक अपने अपने हुनर के अनुसार अपना अपना काम शुरू कर देना।"

छहों साइमन ज़ार के पीछे पीछे चल दिये। आर्चिडी ने उनका सातवाँ सबसे छोटा और सबसे प्यारा भाई नौकरों को सौंप दिया ताकि वे उसे ले जा कर जेल में बन्द कर सकें।

ज़ार आर्चिडी ने कुछ बढ़ई पहले साइमन के पास भेजे। साथ में कुछ राज और कुछ लोहार[16] भी भेजे। और भी कई तरह के काम करने वाले भेजे। उसने ईंट पत्थर लोहा मिट्टी सीमेन्ट आदि भी उसके पास भिजवाये। तुरन्त ही पहले साइमन ने उस सामान से एक खम्भा बनाना शुरू कर दिया।

---

[16] Translated for the words "Masons" and "Ironsmith" repectively.

अपने किसानों वाली सादा आदतों के अनुसार उसका काम जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगा। किसी भी काम में एक पल भी बेकार नहीं किया गया। जल्दी ही एक सफेद ऊँचा खम्भा बन कर तैयार हो गया।

और लो वह तो कितना ऊँचा था। लगता था जैसे आसमान में ग्रहों तक पहुँच गया हो। छोटे छोटे तारे भी उससे नीचे दिखायी देते थे और ऊपर से लोग कीड़े मकोड़ों की तरह दिखायी देते थे।

खम्भा बन जाने पर दूसरा साइमन आया खम्भे पर चढ़ा और उसने चारों तरफ देखा सब कुछ सुना और नीचे उतर आया। ज़ार आर्चिडी यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि सूरज के नीचे सारी धरती पर क्या हो रहा था।

सो उसने उसके नीचे उतरते ही उससे पूछा कि वह उसको सब कुछ बताये। साइमन ने वैसा ही किया। उसने ज़ार आर्चिडी को बहुत सारी बातें बतायीं। उसने बताया कि कैसे एक राजा दूसरे राजा से लड़ रहा था। लड़ाई कहाँ कहाँ हो रही थी और शान्ति कहाँ कहाँ थी।

इन सब बातों के साथ साथ उसने उसे कुछ ऐसे भेद भी बताये जो उसके लिये बहुत आश्चर्यजनक थे। उनको सुन कर ज़ार आर्चिडी मुस्कुरा दिया। दरबारियों ने जब ज़ार आर्चिडी को मुस्कुराते हुए देखा तो वे भी ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे।

इस बीच तीसरा साइमन अपनी कला का इस्तेमाल कर रहा था। उसने अपने आपको तीन बार क्रास किया, अपनी आस्तीनें ऊपर लपेटीं, एक छोटी कुल्हाड़ी ली और एक दो तीन तुरन्त ही एक जहाज़ तैयार कर दिया। कैसा सुन्दर जहाज़ था वह।

ज़ार आर्चिडी ने जब उसे देखा तो देखता ही रह गया। उसने उसको खेने का हुक्म दिया तो वह सफेद पंखों वाले बाज़ की तरह से बह निकला। उस पर से तोपें छूट रही थीं और उसके मस्तूलों पर से संगीत की आवाज आ रही थी।

जैसे ही यह अद्भुत जहाज़ खुले समुद्र की तरफ चला तो चौथे साइमन ने उसको पकड़ा और समुद्र की तह में ले गया जैसे कोई भारी पत्थर पानी में डूब गया हो। अब तो वह पानी पर दिखायी ही नहीं दे रहा था।

एक घंटे में ही साइमन ने अपने बॉये हाथ से जहाज़ नीले समुद्र की सतह पर खींच लिया और दॉये हाथ से ज़ार को रूस की मशहूर मछली की एक पाई भेंट की।

जब ज़ार जहाज़ को देखता हुआ उसकी तारीफ कर रहा था पॉचवें साइमन ने महल के पीछे वाले मैदान में एक लोहार की दूकान तैयार कर ली। वहॉ उसने धौंकनी[17] चला कर लोहा गर्म कर लिया।

[17] Translated for the word "Bellows". See its picture above.

उसके हथौड़े की आवाज बहुत तेज़ थी और उसके इस काम का नतीजा था एक अपने आप चलने वाली बन्दूक। ज़ार आर्चिडी ऐगीविच जंगल में चला गया तो वहाँ उसने आसमान में एक सफेद पंखों वाला गरुड़ उड़ता हुआ देखा।

तो ज़ार बोला — "देखो यह गरुड़ अपना सब कुछ भूल कर आसमान में उड़ रहा है इसको मारो। अगर तुम इसको मारने में सफल हो गये तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

साइमन ने अपने बाल हिलाये, अपनी बन्दूक में चाँदी की एक गोली रखी, निशाना लगाया और गोली चला दी। तुरन्त ही गरुड़ जमीन पर गिर पड़ा।

छठे साइमन ने उसको नीचे नहीं गिरने दिया। वह एक प्लेट ले कर दौड़ा और उसे बीच में ही प्लेट में ही लपक लिया और ज़ार आर्चिडी को भेंट कर दिया।

ज़ार आर्चिडी ख़ुशी से बोला — "धन्यवाद धन्यवाद मेरे बहादुर लोगों। वफादार किसानों जमीन जोतने वालो। मुझे पता चल गया है कि तुम लोग अपनी अपनी कला में बहुत होशियार हो। मैं अब तुम सबको इनाम देना चाहता हूँ। पर अभी तुम लोग खाना खाने चलो और फिर थोड़ा आराम कर लो।"

छहों साइमन ज़ार के सामने बहुत नीचे तक झुके धार्मिक मूर्तियों की प्रार्थना की और वहाँ से चले गये। वे जा कर मेज पर बैठ गये।

उनके हर एक के सामने तेज़ हरी शराब का एक एक गिलास था। हर एक के पास एक एक लकड़ी की चम्मच थी रूसी बन्दगोभी का सूप था।

लो तभी ज़ार का बेवकूफ भी गोल गोल घंटी लगी अपनी पट्टीदार टोपी हिलाता हुआ वहाँ भागा आ गया और चिल्ला कर बोला — "ओ अज्ञानी सीधे सादे किसानों। क्या यह खाना खाने का समय है जब ज़ार को तुम्हारी जरूरत है? जाओ जल्दी से ज़ार के पास जाओ।"

यह सुन कर अपने मन में यह सोचते हुए छहों महल की तरफ भाग लिये कि "क्या हुआ हो सकता है।"

वहाँ जा कर उन्होंने देखा तो महल के पहरेदार लोहे के भाले लिये खड़े हुए थे, कमरों में सारे अक्लमन्द लोग जमा थे और ज़ार खुद अपने सिंहासन पर दुखी सोच में बैठा हुआ था।

जब ये किसान उसके पास पहुँचे तो वह बोला — "सुनो मेरे बहादुर साथियो मेरे चतुर भाइयो साइमन। मुझे तुम लोगों के हुनर बहुत पसन्द आये।

मैं सोचता हूँ, और साथ में मेरे बुद्धिमान लोग भी यही सोचते हैं, कि तुम ओ दूसरे साइमन जो चारों तरफ देख सकते हो तो इस खम्भे पर चढ़ कर यह देखो कि तुम्हें बूयान टापू दिखायी देता है या नहीं।

और देखो वहाँ क्या हो रहा है। वहाँ एक बहुत ताकतवर राज्य है जिसमें एक बहुत ताकतवर राजा रहता है और अगर उस राजा के जैसा कि लोग कहते हैं एक बहुत सुन्दर बेटी है हेलेना।"

दूसरा साइमन तुरन्त ही उस खम्भे पर चढ़ गया। वह तो इतनी जल्दी में था कि अपनी टोपी पहनना भी भूल गया। वहाँ जा कर उसने चारों तरफ देखा और फिर नीचे आ कर बताया —

"ज़ार आर्चिडी ऐगीविच मैंने आपका शाही हुक्म माना। मैंने समुद्र में चारों तरफ देखा तो मैंने बूयान टापू भी देखा। एक ताकतवर राजा वहाँ है। वह बहुत घमंडी और बेरहम है। वह अपने महल में बैठा हुआ है और कह रहा है —

"मैं एक बहुत बड़ा राजा हूँ। मेरे एक बहुत सुन्दर बेटी है राजकुमारी हेलेना। पूरी दुनियाँ में उसके जैसा सुन्दर और अक्लमन्द और कोई नहीं है। इस सूरज के नीचे कोई ज़ार या कोई ज़ारेविच या कोई कोरोलेविच उसका दुलहा बनने लायक नहीं है।

मैं किसी को अपनी बेटी नहीं दूँगा। और जो भी उससे शादी करना चाहेगा मैं उससे युद्ध करूँगा उसका देश नष्ट कर दूँगा और उसको बन्दी बना लूँगा।"

ज़ार आर्चिडी ने पूछा — "और उसकी फौज कितनी बड़ी है? और वह राज्य मेरे राज्य से कितनी दूर है?"

"जहॉ तक मेरी ऑखें नाप सकती हैं मुझे लगता है कि वहॉ पहुँचने में किसी भी जहाज़ को 10 साल लगेंगे। और समुद्र तूफानी हुआ तो 10 साल से ज़्यादा भी लग सकते हैं।

इसके अलावा वहॉ के राजा के पास भी कोई छोटी मोटी फौज नहीं है। मुझे वहॉ 100 हजार भाले वाले, 100 हजार हथियारबन्द सिपाही तो दिखायी दे ही रहे हैं और 100 हजार राजा के दरबार के नौकरों आदि से भी लिये जा सकते हैं।

इनके अलावा राजा के पास पहरेदार भी बहुत हैं जो खास मौके के लिये तैयार कर के रखे हुए हैं।"

सुन कर ज़ार आर्चिडी बहुत देर तक चुपचाप कुछ सोचता बैठा रहा फिर अपने दरबारियों से बोला — "मेरे योद्धाओ और सलाहकारो। मेरी केवल एक इच्छा है कि मुझे राजकुमारी हेलेना चाहिये। मुझे उससे शादी करनी है। अब आप सब मुझे यह बतायें कि उस तक कैसे पहुँचा जा सकता है।"

उसके अक्लमन्द सलाहकार तो चुप रहे बल्कि वे तो एक दूसरे के पीछे छिप गये।

तीसरे साइमन ने चारों तरफ देखा और ज़ार के सामने झुक कर कहा — "ज़ार आर्चिडी ऐगीविच। मेहरबानी कर के मेरे सादे से शब्दों को माफ करें। बूयान द्वीप कैसे पहुँचा जायेगा इसकी आप बिल्कुल चिन्ता न करें। आप मेरे जहाज़ पर बैठ जायें। वह बहुत

सादा सा बना हुआ है और उसको बनाने में कोई खास तरकीब भी इस्तेमाल नहीं की गयी है।

जहाँ जाने के लिये दूसरे जहाज़ एक साल लेते हैं यह केवल एक दिन लेगा। जहाँ दूसरे जहाज़ 10 साल लेंगे यह केवल एक हफ्ता लेगा। आप अपने सलाहकारों से बस यह पूछ लीजिये कि आपको उसके पिता से लड़ना है या फिर शान्ति से राजकुमारी से शादी करनी है।"

यह सुन कर ज़ार आर्चिडी अपने दरबारियों से बोला — "मेरे बहादुर योद्धाओ और अक्लमन्द सलाहकारो। तुम लोगों की इस मामले में क्या राय है।

तुम लोगों में से कौन राजकुमारी के लिये लड़ना पसन्द करेगा या फिर कौन इतना चतुर है जो उसको शान्तिपूर्वक यहाँ ले कर आयेगा। मैं उसको सोने और चाँदी से लाद दूँगा। मैं उसको अपने सरदारों का भी सरदार बना दूँगा।"

बहादुर योद्धा और अक्लमन्द सलाहकार फिर चुप खड़े रह गये। यह देख कर ज़ार गुस्सा होने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे वह गुस्से में कुछ बोलने वाला है।

तभी ऐसा लगा जैसे कि ज़ार के बेवकूफ से किसी ने कुछ पूछा हो तो वह अक्लमन्द लोगों के पीछे से कूद कर बाहर आया अपनी पट्टी वाली टोपी हिलायी तो उसमें लगी बहुत सारी घंटियाँ बज उठीं।

वह बोला — “अरे अक्लमन्द लोगों आप लोग चुप क्यों हैं। आप लोग क्या विचार कर रहे हैं। आप लोगों के बड़े बड़े सिर हैं लम्बी लम्बी दाढ़ी है। ऐसा लगता है कि आप सब बहुत अक्लमन्द हैं तो आप अपनी उस अक्लमन्दी को इस्तेमाल क्यों नहीं करते।

बूयान टापू जाना और वहॉ से दुलहिन लाने का मतलब सोने और फौज को खोना ही नहीं है। आप अपने सातवें साइमन को बिल्कुल ही भूल गये क्या।

उसके लिये तो यह बहुत ही आसान होगा कि वह राजकुमारी हेलेना को चुरा लाये। उसके बाद बूयान टापू का राजा यहॉ लड़ने के लिये आता रहे फिर हम उसका आदर सहित स्वागत करेंगे।

पर यह मत भूलियेगा कि उसको हमारे पास आने में कम से कम 10 साल तो लग जायेंगे। और उन 10 सालों में कहीं तो कुछ तो अक्लमन्द लोग ऐसे होंगे जो घोड़े को भी बोलना सिखा सकते होंगे।”

ज़ार आर्चिडी तो यह सुनते ही बहुत खुश हो गया। खुशी के मारे वह तो उछल पड़ा। वह अपना गुस्सा भूल गया।

वह बोला — “ओ बेवकूफ तेरा बहुत बहुत धन्यवाद। मैं तुझे जरूर इनाम दूॅगा। मैं तुझे एक नयी टोपी दूॅगा जिसकी घंटियॉ और और ज़ोर से बजेंगी और तेरे हर एक बच्चे को अदरख की

पैनकेक[18] दूँगा। ओ मेरे वफादार नौकरों दौड़ कर जाओ और तुरन्त ही सातवें साइमन को यहाँ ले कर आओ।"

ज़ार के हुक्म के अनुसार अँधेरी जेल के भारी भारी लोहे के दरवाजे खोले गये उसकी जंजीरें खोली गयीं और सातवाँ साइमन ज़ार आर्चिडी के सामने लाया गया।

ज़ार आर्चिडी ने उससे कहा — "तुम मेरी बात ध्यान से सुनो ओ सातवें साइमन। क्योंकि मैंने तुझको अपने दरबार में सबसे ऊँचा दर्जा देने का सोच लिया है तो अब मैं तुझे ज़िन्दगी भर तो जेल में नहीं रख सकता न।

पर अगर तू मेरे लिये कुछ फायदेमन्द साबित हो तो मैं तुझे आजाद करने के लिये तैयार हूँ। आजादी के अलावा तू मेरे खजाने का भी भागीदार होगा। क्या तू सुन्दर राजकुमारी हेलेना को उसके पिता के घर बूयान टापू से चुरा कर यहाँ ला सकता है?"

सातवाँ साइमन खुशी से उछल कर बोला — "क्यों नहीं। इसमें तो कोई मुश्किल ही नहीं है। वह कोई मोती थोड़े ही है और फिर मेरे ख्याल से वह तालों में भी बन्द नहीं होगी।

जो जहाज़ मेरे भाई ने बनाया है आप बस उसे सिल्क, मखमल और ब्रोकेड[19] से भर दीजिये। उसके साथ ईरानी कालीन सुन्दर

---

[18] A pancake is made of white flour mixed with milk and sugar and is shallow fried on a griddle from both sides. A syrup or honey or butter tops it. See its picture above.

[19] Brocade is a type of cloth in which at least one thread is of gold or silver or both.

मोती और कुछ जवाहरात भी रखवा दीजिये। और मेरे सारे भाइयों को मेरे साथ आने दीजिये। मेरे दोनों सबसे बड़े भाइयों को आप बन्धक के रूप में रख सकते हैं।"

जैसे ही यह कहा गया वैसे ही सब कुछ हो गया। ज़ार आर्चिडी ने जैसे ही हुक्म दिया तो सब लोगों ने इधर उधर भागना शुरू कर दिया। यह सब काम इतनी जल्दी हो गया जितनी देर में कोई छोटे बालों वाली लड़की भी अपनी चोटी नहीं बना पाती।

जहाज़ सिल्क, मखमल और ब्रोकेड ईरानी कालीन सुन्दर मोती और कुछ जवाहरात से तुरन्त ही भर दिया गया और किनारा छोड़ने के लिये तैयार था।

पॉचों बहादुर साइमन भी तैयार थे। सबने ज़ार को सिर झुकाया और जहाज़ खे दिया गया। पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। जहाज़ पानी के ऊपर तेज़ तेज़ तैरता चला जा रहा था। दूसरे व्यापारिक जहाज़ों की तुलना में वह बाज़ की तरह उड़ता जा रहा था।

पॉच दिन बाद इन सबको बूयान टापू दिखायी पड़ा। उन्होंने देखा कि टापू मटर के बराबर मोटी तोपों से घिरा हुआ था। बहुत बड़े बड़े पहरेदार अपनी बड़ी बड़ी मूँछों पर ताव देते हुए इधर से उधर उनकी पहरेदारी करते घूम रहे थे।

जैसे ही किनारे के लोगों को समुद्र पर जहाज़ दिखायी दिया तो उन्होंने डच बिगुल बजा कर सबको सावधान किया और इन लोगों

से पूछा — "रुक जाओ। रुक जाओ। तुम लोग कौन हो? तुम यहाँ क्यों आये हो?"

जहाज़ से सातवें साइमन ने जवाब दिया — "हम लोग शान्तिप्रिय लोग हैं। हम दुश्मन नहीं हैं हम दोस्त हैं। सौदागरों का हर जगह मेहमान की तरह से स्वागत होता है। हम लोग कुछ विदेशी माल ले कर उसका सौदा करने आये हैं।

कुछ माल हम बेचना चाहते हैं। कुछ माल हम खरीदना चाहते हैं और कुछ माल हम आपस में एक दूसरे से बदलना चाहते हैं। हमारे पास तुम्हारे राजा और राजकुमारी जी के लिये भी भेंटें हैं।"

हमारे पाँचों बहादुर साइमन भाइयों ने जहाज़ से अपनी नाव नीचे उतारी और उसमें सबसे बढ़िया किस्म की वेनिस की मखमल ब्रोकेड मोती और जवाहरात भरे और उनको ईरानी कालीनों से ढक लिया।

अपनी नाव वे महल के पास के किनारे के एक तरफ ले गये और वहाँ ले जा कर उसे लगा दिया। उन्होंने तुरन्त ही राजा के लिये जो भेंटें ले कर आये थे वे निकालीं और उनको राजा के पास ले गये।

सुन्दर कोरोलेवना हेलेना अपने कमरे में बैठी हुई थी। वह एक गोरी सुन्दर लड़की थी जिसकी आँखें तारों जैसी चमकीली थीं और उसकी भौंहें कीमती सेबिल[20] जैसी थीं।

[20] Sable is a fur animal whose fur is used for wearing.

वह देखती थी तो वह जिसको देखती थी वह निहाल हो जाता था। और जब वह चलती थी तो लगता था जैसे कोई हंस तैर रहा हो। कोरोलेवना ने बहुत जल्दी ही साइमन भाइयों को देख लिया तो उसने अपनी दासियों को बुलाया।

"सुनो दासियों देखो तो ज़रा कि ये किस तरह के अजनबी हमारे महल की तरफ बढ़े चले आ रहे हैं।" सारी दासियाँ वहाँ से अजनबियों के बारे में जानने के लिये चली गयीं।

जवाब दिया उनको सातवें साइमन ने — "हम सौदागर मेहमान हैं। शान्तिप्रिय लोग हैं। हम ज़ार आर्चिडी ऐगीविच के देश से आये हैं जो एक बहुत बड़ा ज़ार है। हम लोग खरीदने बेचने और कुछ बदले मे देने के लिये आये हैं। इसके अलावा हम राजा और उसकी राजकुमारी के लिये कुछ भेंटें भी ले कर आये हैं।

हमको पूरी आशा है कि राजा हमारे ऊपर दया करेंगे और ये छोटी छोटी चीज़ें स्वीकार करेंगे। अगर अपने लिये नहीं तो कम से कम अपने दरबार की सुन्दर लड़कियों के लिये ही सही।"

जब राजकुमारी हेलेना ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही उनको अन्दर आने दिया। व्यापारी लोग अन्दर आये तो वे राजकुमारी के सामने नीचे तक झुके और उन्होंने उसे ऐसे मखमल और जवाहरात, सुनहरा ब्रोकेड, मोती की मालाऐं उसको दिखायीं जैसे बूयान द्वीप में कभी किसी ने देखी नहीं थीं।

यह सब देख कर दासियों के मुँह तो खुले के खुले रह गये। यहाँ तक कि राजकुमारी भी आश्चर्य से उनको देखती रह गयी। वह उनको देख कर बहुत खुश थी।

सातवाँ साइमन यह सब देख कर तुरन्त ही समझ गया कि उसका काम बन गया। वह मुस्कुराया और बोला — "हम सब जानते हैं कि आप कितनी सुन्दर और कितनी अक्लमन्द हैं पर ऐसा लग रहा है कि आप हमारे साथ मजाक कर रही हैं।

ये सादी सी चीज़ें आपके इस्तेमाल के लिये तो बहुत ही मामूली हैं। इनको तो आप अपनी दासियों के रोज के पहनने के लिये रख लीजिये। और ये पत्थर आप अपने रसोईघर के लड़कों को उनके खेलने के लिये दे दीजिये।

पर अगर आप मेरी बात मानें तो हमारे जहाज़ पर इससे भी बढ़िया दूसरे किस्म की मखमल ब्रोकेड और कीमती जवाहरात हैं – इतने कीमती कि किसी ने वैसी चीज़ें कभी देखी नहीं होंगी। हमारी उनको यहाँ लाने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं आपको यह सब अच्छा न लगे।

अगर आप खुद आ कर उन्हें देखना चाहें और उनमें से खुद अपने लिये कोई चीज़ चुनना चाहें तो वह सब आपका है। हम आपकी चमकीली नजरों के लिये आपके सामने बहुत ही नम्रतापूर्वक सिर झुकाते हैं।"

शाही लड़की ने उसकी इस नम्रता भरी बोली की बहुत प्रशंसा की और अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता राजा। विदेश से कुछ सौदागर आये हैं। वे बहुत अच्छा माल ले कर आये हैं जैसा कि बूयान में पहले कभी नहीं देखा गया।

आप मुझे उनके जहाज़ पर जाने की इजाज़त दें तो मैं उनमें से अपनी पसन्द की कुछ चीज़ें चुन लाऊँ। उनके पास आपके लिये भी कीमती भेंटें हैं।"

जवाब देने से पहले राजा कुछ हिचकिचाया फिर गुस्से से अपने कान के पीछे खुजाते हुए बोला — "ठीक है। जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो मेरी बेटी। मेरी सुन्दर कोरोलेवना।"

उसने अपने सलाहकारों से कहा — "तुम लोग मेरा एक जहाज़ भी तैयार रखो। उसमें तोपें लदी हों और मेरे सबसे ज़्यादा बहादुर 100 योद्धा हों।

इसके अलावा कोरोलेवना की रक्षा के लिये 1000 योद्धा और भेज दो जो उसकी किनारे से ले कर उस सौदागर के जहाज़ तक उसकी देखभाल करें।"

उसके बाद राजा का जहाज़ बूयान टापू से चला। बहुत सारी तोपें और योद्धा कोरोलेवना की रक्षा कर रहे थे। राजा शान्ति से अपने घर बैठा था।

जब कोरोलेवना का जहाज़ सौदागरों के जहाज़ के पास पहुँचा तो कोरोलेवना हेलेन अपने जहाज़ से नीचे उतरी तो तुरन्त ही एक

क्रिस्टल का पुल उसके सामने आ गया जिस पर से चल कर वह खुद और उसकी दासियॉ सौदागर के जहाज़ पर गयीं। ऐसा पुल तो उन्होंने कभी देखा ही नहीं था, सपने में भी नहीं। इस बीच रक्षक पहरा देते रहे।

सातवॉ साइमन कोरोलेवना को चारों तरफ अपना सामान दिखा रहा था। वह बड़े आराम से अपनी चीज़ें दिखाता हुआ और उनके बारे में बताता हुआ घूम रहा था। कोरोलेवना भी उसकी बातें ध्यान से सुन रही थी और उत्सुकतापूर्वक इधर उधर देख रही थी। वह उन सब चीज़ों को देख कर बहुत खुश नजर आ रही थी।

कि उसी समय ठीक समय जान कर चौथे साइमन ने जहाज़ को पकड़ कर समुद्र की गहराइयों में डुबो दिया। वहॉ उसको अब कोई देख नहीं सकता था।

यह देख कर राजा के जहाज़ पर चढ़े लोग डर के मारे चीख पड़े। योद्धा लोग कुछ बेवकूफ से दिखायी देने लगे थे। पहरेदारों की ऑखें जहाज़ को देखने के लिये खुल कर और चौड़ी हो गयी थीं। पर जहाज़ कही किसी को दिखायी नहीं दे रहा था। वह अभी तो था और अभी अभी उनकी ऑखों के सामने सामने गायब हो गया था। कहॉ?

अब वे लोग क्या करें। वे अपने जहाज़ को जमीन की तरफ वापस ले गये और राजा को जा कर यह भयानक कहानी सुनायी।

"उफ़ मेरी बेटी। उफ़ मेरी बेटी। भगवान ने ही मेरे घमंड की यह सजा मुझे दी है। मैं तेरी शादी नहीं करना चाहता था। मुझे कोई राजा कोई राजकुमार तेरे लायक लगता ही नहीं था।

अब मुझे पता चल रहा है कि तेरी शादी तो समुद्र की गहराइयों से हो चुकी है। और जहॉ तक मेरा सवाल है मैं तो अब अपनी बची हुई सारी ज़िन्दगी दुख में ही गुजरूँगा।"

अचानक उसने अपना सिर उठाया और अपने आदमियों से बोला — "ओ बेवकूफों। अब तुम लोग क्या सोच रहे हो। तुम लोगों को सबको मार दिया जायेगा। ओ मेरे पहरेदारो इन सबको तहखाने में डाल दो। इनको मैं बहुत दर्द वाली मौत दूँगा। इतनी दर्द वाली कि इनके पोतों के बच्चे भी उस कहानी को सुन कर कॉप जायेंगे।"

जिस समय बूयान का राजा इस तरह से गुस्सा हो रहा था दुखी हो रहा था साइमन भाइयों का जहाज़ सुनहरी मछली की तरह समुद्र

के नीले पानी में नीचे नीचे तैर रहा था। जब टापू ऑखों से ओझल हो गया तब चौथा साइमन उसको समुद्र की सतह पर ले आया। वह समुद्र पर सफेद पंखों वाली समुद्री चिड़िया[21] की तरह से समुद्र के ऊपर प्रगट हो गया।

[21] Translated for the words "Sea Gull". See its picture above.

अब कोरोलेवना को चिन्ता होने लगी थी कि उसको वहाँ आये काफी देर हो गयी थी अब उसे घर जाना चाहिये सो वह अपनी दासियों से बोली — "हम लोग तो बड़े आराम से चीज़ें देख रहे थे पर मुझे चिन्ता हो रही है कि मेरे बिना मेरे पिता का इतना लम्बा समय कैसा बीता होगा। चलो जल्दी घर चलते हैं।"

सो वह जल्दी से जहाज़ के डैक पर आयी और लो देखो उसके सामने तो सारा समुद्र एक शीशे की तरह दिखायी दे रहा था।

उसका अपना टापू कहाँ गया। उसका अपना शाही जहाज़ कहाँ गया। वहाँ तो कुछ भी नहीं था सिवाय समुद्र के। कोरोलेवना तो चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी। फिर उसने अपने आपको एक सफेद हंसिनी में बदल लिया और आसमान में उड़ गयी।

पाँचवाँ साइमन यह सब बड़े ध्यान से देख रहा था उसने बिना समय खोये हुए अपनी बन्दूक निकाली और उससे उस हंसिनी का निशान लगा कर चला दी। हंसिनी नीचे गिर पड़ी।

छठा साइमन पहले से ही तैयार था उसने हंसिनी को समुद्र में गिरने से पहले ही पकड़ लिया। पर यह क्या वहाँ तो हंसिनी भी नहीं थी उसके हाथ में तो एक सफेद चाँदी जैसी चमचमाती मछली थी जो उसके हाथ से फिसल गयी।

साइमन ने मछली तो पकड़ ली पर अब वह एक सुन्दर चूहे में बदल गयी और जहाज़ में चारों तरफ भागने लगी। साइमन ने उसको किसी छेद की तरफ नहीं जाने दिया और बिल्ली से भी जल्दी

उसको पकड़ लिया। अब वह सुन्दर कोरोलेवना हेलेना बन गयी थी।

एक हफ्ते बाद एक सुन्दर सुबह ज़ार आर्चिडी अपनी खिड़की के पास बैठा हुआ विचारों में डूबा हुआ था कि उसकी नजर समुद्र की तरफ चली गयी तो वह उस नीले समुद्र को देख कर कुछ दुखी हो गया।

उस दिन वह खाना भी नहीं खा सका। अच्छे अच्छे खानों से भी उसका मन नहीं बहला। मॅहगे से मॅहगे खाने में भी उसको स्वाद नहीं आ रहा था। शहद भी उसको बहुत हल्का लग रहा था। उसका सारा दिमाग कोरोलेवना हेलेना की तरफ ही लगा हुआ था।

तभी उसको पानी पर दूर कुछ दिखायी दिया तो उसने अपने मन में सोचा "यह पानी पर इतना दूर क्या है? क्या यह कोई समुद्री चिड़िया है? नहीं नहीं ये सफेद पंख तो नहीं दिखायी दे रहे ये तो किसी जहाज़ के पाल दिखायी दे रहे हैं।

अरे यह तो उन साइमन भाइयों का जहाज़ है। और यह तो बहुत तेज़ी से किनारे की तरफ आ रहा है।"

जल्दी ही जहाज़ किनारे पर आ लगा और किनारे पर उतरने के लिये क्रिस्टल का पुल लगाया गया। उस पर से कोरोलेवना हेलेना ऐसे उतरी जैसे कोई न छिपने वाला सूरज हो। उसकी ऑखें चमकीले सितारे जैसी चमक रही हैं। ज़ार आर्चिडी तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया।

"मेरे नौकरों जल्दी से दौड़ो, मेरे राज्य के आफीसर भी, और मेरे पहरेदारों तुम भी। जा कर कोरोलेवना हेलेना का स्वागत करो।"

सब तुरन्त ही अपने अपने काम पर लग गये। कोरोलेवना के स्वागत के लिये घंटियाँ बज गयीं दरवाजे खोल दिये गये। ज़ार खुद उसके स्वागत के लिये बाहर निकल कर आया। वह उसका गोरा हाथ पकड़ कर अपने महल में ले गया।

ज़ार आर्चिडी बोला — "आओ आओ कोरोलेवना हेलेन। तुम्हारी तारीफ मेरे कानों तक पहुँची तो पर मुझे इतनी ज़्यादा सुन्दरता की कल्पना नहीं थी। तो भी मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ।

में तुमको तुम्हारे पिता से अलग नहीं करना चाहता। बस एक शब्द बोल देना और मेरे वफादार नौकर तुम्हें तुम्हारे पिता के पास वापस ले जायेंगे। अगर तुम मेरे साथ मेरे राज्य में रहना चाहो तो मेरे राज्य की ज़ारिट्ज़ा बन जाओ और मेरे राज्य के साथ साथ मेरे यानी ज़ार आर्चिडी पर भी राज करो।"

ज़ार के ये शब्द सुन कर कोरोलेवना हेलेना ने उसकी तरफ कुछ इस तरह देखा कि ज़ार को लगा जैसे सूरज उसके ऊपर हँस रहा हो, चाँद गा रहा हो और सितारे चारों तरफ नाच रहे हों।

खैर अब इससे ज़्यादा और क्या कहना। आप लोग सब बाकी की बात समझ ही सकते हैं। उनका प्यार बहुत दिनों तक नहीं चला। दोनों की शादी जल्दी ही हो गयी। क्योंकि यह तो आप

सबको मालूम ही है कि राजा के हुक्म पर तो सारा काम बहुत जल्दी हो जाता है।

साइमन भाइयों को तुरन्त ही कोरोलेवना का यह सन्देश ले कर बूयान टापू पर भेज दिया गया — "प्रिय पिता जी और ताकतवर राजा। मैंने अपनी इच्छा के अनुसार अपना पति पा लिया है और अब मैं आपसे आपका आशीर्वाद चाहती हूँ। मेरे पति ज़ार आर्चिडी ऐगीविच आपको हमारी शादी में बुलाने के लिये अपने सलाहकार भेज रहे हैं।"

जब सौदागरों का जहाज़ बूयान टापू पर आया तो उसी समय वह भीड़ जिनके सामने सामने कोरोलेवना गायब हुई थी उन लोगों की मौत का नजारा देखने के लिये इकट्ठी हो गयी थी।

यह देख कर सातवॉ साइमन जहाज़ के डैक से ही चिल्लाया — "रुक जाओ। हम कोरोलेवना हेलेना की तरफ से एक सन्देश ले कर आये हैं।"

टापू का राजा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। साथ में उसकी जनता भी बहुत खुश थी। कोरोलेवना का सन्देश पढ़ा गया और जिनको सजा के लिये लाया गया था उन सबको छोड़ दिया गया।

राजा बोला — "ऐसा लगता है कि मेरी बेटी की शादी ज़ार आर्चिडी ऐगीविच से ही होनी लिखी थी।"

तब राजा ने साइमन भाइयों का और उनके साथ में आये लोगों का सबका बहुत अच्छे से स्वागत किया और उनके हाथ अपना आशीर्वाद उन दोनों के लिये भेज दिया क्योंकि वह बूढ़ा होने की वजह से खुद वहाँ जाना नहीं चाहता था।

जहाज़ जल्दी ही वापस लौट आया। ज़ार आर्चिडी ने अपनी शादी बहुत धूमधाम से की।

शादी से पहले उसने सातों साइमन भाइयों को बुलाया और कहा — "शाबाश और धन्यवाद मेरे किसानों। तुमको जो चाहिये वह माँग लो। मैं तुम्हें वही दे दूँगा। क्या तुम लोग बोयर[22] बनना चाहोगे? तुम सबसे बड़े लोगों में भी सबसे बड़े रहोगे। या फिर तुम गवर्नर बनना चाहोगे? मैं तुममें से हर एक को एक एक शहर दे दूँगा।"

पहले साइमन ने ज़ार के आगे सिर झुकाया और खुशी खुशी बोला — "आपको भी बहुत बहुत धन्यवाद ओ ज़ार आर्चिडी। हम लोग बहुत सादे लोग हैं और हमारे तौर तरीके भी सादे ही हैं। हमको बोयर और गवर्नर नहीं होना। हम इनका क्या करेंगे।

हमको आपका खजाना भी नहीं चाहिये। हमारे पिता के पास बहुत सारे खेत हैं जिनसे हमारे खाने के लिये अनाज और दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिये पैसा मिलता रहेगा।

---

[22] A status next to Prince.

अब आप हमको घर जाने की इजाज़त दें। हमारे लिये आपने जो कुछ अच्छा कहा है वही हमारे लिये काफी है। अगर आप हम पर बहुत मेहरबान हैं तो आप हमारे लिये कुछ ऐसा हुक्म दें जिससे हमें जज और टैक्स इकट्ठा करने वाले परेशान न करें। और अगर हम किसी जुर्म में पकड़े भी जायें तो उसका फैसला आप खुद करें।

इसके अलावा हम अपने सबसे छोटे भाई सातवें साइमन की माफी के लिये प्रार्थना करते हैं। उसकी यह कला सचमुच में बहुत बुरी है पर वह कोई पहला और आखिरी आदमी नहीं है जिसको यह हुनर मिला हो।"

ज़ार बोला — "जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा।"
और उनकी सारी इच्छाऐं पूरी की गयीं। हर एक को हरी तेज़ शराब का एक एक बड़ा गिलास ज़ार के हाथों से मिला। इसके तुरन्त बाद ही शादी का जश्न मनाया गया।

अब ओ देवियो और सज्जनो। इस कहानी को बहुत गम्भीर रूप से मत पढ़ना। अगर आपको अच्छी लगी हो तो इसकी तारीफ करना और अच्छी नहीं लगी हो तो इसे जाने देना भूल जाना।

कहानी तो हमने कह दी है और शब्द तो चिड़िया की तरह होते हैं एक बार बाहर निकले तो बाहर निकले।

3 चिड़ियों की भाषा[23]

एक बार की बात है कि पवित्र रूस के किसी शहर में एक बहुत ही अमीर सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक अकेला बेटा था जो बहुत ही प्यारा होनहार और बहादुर था। उसका नाम था इवान।

एक दिन इवान अपने माता पिता के साथ खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसी कमरे में खिड़की के पास एक पिंजरा टॅगा हुआ था जिसमें एक मैना और एक मीठा बोलने वाली भूरे रंग की चिड़िया बन्द थीं।

मैना ने अपनी ऊँची आवाज में अपना मीठा गाना गाना शुरू किया। सौदागर ने उसका गाना सुना और सुना और सुन कर बोला — "काश मैं सब चिड़ियों के गानों के मतलब समझ सकता। अगर कहीं कोई ऐसा आदमी होता जो मुझे सारी चिड़ियों के सारे गानों के मतलब समझा देता तो मैं उस आदमी को अपनी आधा पैसा दे देता।"

इवान ने अपने पिता के ये शब्द अपने दिमाग में रख लिये और इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह कहॉ गया, कोई मतलब नहीं वह कहॉ था, कोई मतलब नहीं उसने क्या किया वह हमेशा यही सोचता रहा कि वह किस तरह से चिड़ियों की भाषा सीख सकता था

[23] The Language of the Birds (Tale No 3)

कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन इवान एक जंगल में शिकार खेलने के लिये गया कि तेज़ हवा बह निकली बादल आसमान पर छा गये बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे और बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी।

इस तूफान से बचने के लिये इवान एक बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहाँ उसने उस पेड़ की शाखाओं मे एक घोंसला देखा। उस घोंसले में चार छोटी छोटी चिड़ियें बैठी थीं। वे वहाँ अकेली ही थीं क्योंकि वहाँ उनके माता पिता कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। वहाँ कोई उनको ठंड और पानी से बचाने वाला भी नहीं था।

भले इवान को उन पर दया आ गयी। वह पेड़ पर चढ़ गया और अपने काफ्तान से उन बच्चों को ढक दिया। काफ्तान रूसी किसानों और सौदागरों के पहनने का एक लम्बा सा कोट होता है।

कुछ देर बाद तूफान थम गया तो एक बड़ी चिड़िया वहाँ उड़ती हुई आयी और घोंसले के पास की एक शाख पर बैठ गयी।

वह बड़े प्यार से इवान से बोली — "इवान तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने ठंड और बारिश से मेरे छोटे छोटे बच्चों की रक्षा की। इसके बदले में मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती हूँ। कहो तुम्हारी क्या इच्छा है।"

इवान बोला — “मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। मेरी अपनी सुख सुविधा के लिये मेरे पास सब कुछ है पर तुम मुझे चिड़ियों की भाषा सिखा दो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।”

वह चिड़िया बोली — “तुम मेरे साथ तीन दिन ठहरो तो तुम उसके बारे में सब जान जाओगे।”

इवान तीन दिन जंगल में रहा उसने उस बड़ी चिड़िया का सिखाया हुआ सब कुछ ठीक से सीख लिया। और इस तरह वह घर पहले से कहीं ज़्यादा होशियार हो कर लौटा।

एक दिन जब वह अपने माता पिता के साथ फिर से बैठा हुआ था तो मैना ने कुछ गाया। उसका गाना बहुत दुख का था इतने दुख का था कि उसका गाना सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी भी दुखी हो गये।

और उनका बेटे भले इवान पर जो उसका गाना बड़े ध्यान से सुन रहा था उस पर तो उसका और भी ज़्यादा असर पड़ा। उसके तो ऑसू ही बहने लगे।

इवान के माता पिता ने इवान से पूछा — “प्यारे बेटे तुम क्यों रो रहे हो क्या बात है?”

रोते रोते इवान बोला — “ऐसा इसलिये है कि मैं इस मैना के गीत का मतलब समझता हूॅ। इस गीत का मतलब हम सबके लिये दुख का है।”

उसके माता पिता ने कहा — "क्या मतलब है इसके गीत का बेटा? तुम हमको सब कुछ सच सच बताओ। कोई बात हमसे छिपाना नहीं।"

इवान बोला — "कितने दुख की बात है। कितना अच्छा होता कि मैं कभी पैदा ही न हुआ होता।"

माता पिता ने कहा — "बेटा अब तुम हमें और ज़्यादा डराओ नहीं। अगर तुम सचमुच में ही इस गीत का मतलब समझते हो तो हमको तुरन्त ही बतलाओ कि यह मैना क्या गा रही है।"

इवान बोला — "क्या आपको खुद पता नहीं चल रहा है कि यह मैना यह कह रही है कि वह समय आने वाला है जब सौदागर का बेटा इवान एक राजा का बेटा इवान बन जायेगा और उसका पिता उसके यहाँ एक सादा से नौकर की हैसियत से काम करेगा।"

सौदागर और उसकी पत्नी दोनों ही यह सुन कर परेशान हो गये और उन्होंने अपने भले बेटे इवान का विश्वास नहीं किया। पर फिर भी उनके मन में कहीं कुछ खटका लगा रहा।

सो एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सुलाने वाला एक पेय पिला दिया और जब वह गहरी नींद सो गया तो वे उसको नाव में रख कर समुद्र में ले गये। वहाँ ले जा कर उन्होंने नाव की पाल खोल दीं और उसको समुद्र में धकेल दिया।

काफी समय तक नाव समुद्र में बहती रही। आखीर में वह एक सौदागर के जहाज़ के पास आ गयी और उससे टकरा गयी। वह इतनी ज़ोर से टकरायी कि इवान की ऑख खुल गयी।

उधर उस बड़े जहाज़ पर काम करने वालों ने भी इवान को देखा तो उन्हें उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसको अपने साथ ले जाने का निश्चय किया सो उन्होंने उसको अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

फिर उन्होंने आसमान में बहुत ऊँचे उड़ते हुए सारस देखे तो इवान उन लोगों से बोला — "सावधान रहना। ये सारस तूफान आने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। हमको किसी बन्दरगाह पर चले जाना चाहिये वरना हम खतरे में पड़ जायेंगे और हमारे जहाज़ को बहुत नुकसान पहुँचेगा। हमारे पाल फट जायेंगे और मस्तूल टूट जायेंगे।"

पर इवान के कहने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया और वे चलते रहे। कुछ ही देर में तूफान आ गया। हवा ने जहाज़ तोड़ दिया और उनको अपना जहाज़ मरम्मत करने में काफी मेहनत करनी पड़ी। जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तब उन्होंने बहुत सारे जंगली हंस अपने ऊपर उड़ते हुए देखे और आपस में बात करते हुए सुने।

इस बार जहाज़ के लोगों ने बड़ी रुचि से इवान से पूछा कि वे जंगली हंस क्या कह रहे थे।

इवान ने कहा — “वे कह रहे हैं कि सावधान रहना। वे क्या कह रहे है यह मैं साफ तरीके से सुन सकता हूँ कि समुद्री डाकू पास ही हैं और अगर हम पास के किसी बन्दरगाह में जा कर शरण नहीं ले लेते तो वे हमें बन्दी बना लेंगे और फिर मार देंगे।”

इस बार जहाज़ के लोगों ने बिल्कुल भी देर नहीं की वे तुरन्त ही बन्दरगाह की तरफ मुड़ गये। जैसे ही वे बन्दरगाह में पहुँचे कि समुद्री डाकुओं की नावें उनके सामने से गुजर गयीं। उन्होंने उन डाकुओं को कई और नावों को पकड़ते हुए और लूटते हुए देखा।

जब समुद्री डाकुओं का खतरा टल गया तो जहाज़ के लोग इवान के साथ और आगे तक चलते चले गये। अन्त में उनके जहाज़ ने एक शहर में अपना लंगर डाला। यह शहर बड़ा था और सौदागरों के लिये अनजाना था।

इस शहर के राजा को तीन काले कौओं ने तंग कर रखा था। वह उनसे बहुत परेशान था। ये तीन कौए हमेशा ही राजा के महल की खिड़की पर बैठे रहते थे और कुछ कुछ बोलते रहते थे।

किसी को नहीं पता था कि उनको वहाँ से कैसे भगाया जाये और कोई उनको मार भी नहीं सकता था।

राजा ने अपने शहर हर चौराहे पर और हर मुख्य इमारत पर यह नोटिस लगवा दिया था कि जो भी कोई इन शोर मचाने वाली

चिड़ियों को राजा के महल से हटाने में कामयाब होगा उसकी शादी राजा की सबसे छोटी कोरोलेवना[24] यानी बेटी से कर दी जायेगी।

और जो कोई इस काम को करने का साहस करेगा और महल से उनको हटाने में नाकामयाब रहेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

इवान ने यह नोटिस बड़े ध्यान से पढ़ा एक बार, दो बार, तीन बार... । आखीर में उसने क्रास का निशान बनाया और महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने नौकरों से कहा "खिड़की खोलो मैं ज़रा सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बात करते हैं।"

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा इवान ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने खिड़की खोल दी। वे कौए तभी भी वहीं बैठे हुए थे और शोर मचा रहे थे। इवान ने कुछ देर तक उनको सुना और फिर नौकरों से कहा कि वे उसको राजा के पास ले चलें।

नौकर उसको राजा के पास ले गये। जब वह राजा के कमरे में पहुँचा तो राजा अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। इवान ने उसको सिर झुकाया और कहा — "योर मैजेस्टी यहाँ तीन कौए बैठे हैं। एक पिता कौआ है एक माता कौवी है और एक बेटा कौआ है।

अब मुश्किल यह है कि वे इस बारे में आपका शाही हुक्म लेना चाहते हैं कि बेटे कौए को अपने पिता कौए की बात माननी चाहिये या माता कौवी की।"

---

[24] Korolevna – Princess, the daughter of a King

राजा ने जवाब दिया कि बेटे कौए को तो अपने पिता कौए की ही बात माननी चाहिये।

जैसे ही राजा ने अपना यह शाही हुक्म सुनाया पिता कौआ और बेटा कौआ दोनों एक तरफ को उड़ गये। और माँ कौवी दूसरी तरफ को गायब हो गयी। उसके बाद से उन कौओं को फिर कभी किसी ने वहाँ नहीं देखा।

राजा ने इवान को अपना आधा राज्य दे दिया और सबसे छोटी कोरोलेवना ब्याह दी।

इधर इवान की माँ चल वसी और उसका पिता भी गरीब हो गया। अब उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रह गया था। अब वह बूढ़ा बेचारा सब जगह भीख माँग माँग कर गुजारा करता था। वह एक घर से दूसरे घर जाता एक गाँव से दूसरे गाँव जाता और एक शहर से दूसरे शहर जाता।

एक दिन वह उस शहर में आ निकला जिसमें इवान रहता था। वह महल के पास से भीख माँगता गुजर रहा था कि इवान ने उसे देख लिया। उसने उसको पहचान लिया और अन्दर आने का हुक्म दिया। उसने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको पहनने के लिये अच्छे कपड़े दिये।

फिर उसने उससे पूछा — "मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।"

गरीब पिता ने अपने बेटे को पहचाना नहीं और कहा — “अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो तुम मुझे यहाँ रहने की जगह दे दो और अपने वफादार नौकरों के साथ मुझे भी अपना नौकर रख लो।”

तब इवान बोला — “मेरे प्यारे पिता जी, वह मैना उस समय जो गाना गा रही थी तो उस समय तो आपने उस पर शक किया और आज आप वही होता देख रहे हैं।”

यह सुन कर वह बूढ़ा डर गया और अपने बेटे के पैरों में पड़ गया। पर उसका बेटा इवान अभी भी पहले जैसा ही अच्छा बेटा रहा। उसने अपने पिता को अपनी बाँहों में ले कर अपने गले लगा लिया। दोनों अपने अपने दुखों पर कुछ देर तक रोते रहे।

पिता को वहाँ रहते रहते कई दिन हो गये तो एक दिन उसने हिम्मत कर के अपने बेटे कोरोलेविच[25] से पूछा — “बेटा ज़रा बताओ तो कि ऐसा कैसे हुआ कि तुम उस नाव में मरे नहीं।”

इवान कोरोलेविच बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — “मुझे लगता है पिता जी कि वह मेरी किस्मत में था ही नहीं कि मैं उस नाव में मर जाऊँ। मेरी किस्मत में तो यह था कि मैं अपनी सुन्दर पत्नी कोरोलेवना से शादी करूँ और अपने पिता का बुढ़ापा सुखी करूँ।

[25] Korolevich – Prince

4 सीधा इवानुष्का[26]

हमारे देश से कहीं बहुत दूर एक राज्य में एक शहर था जहाँ ज़ार मटर अपनी ज़ारिट्ज़ा गाजर[27] के साथ रहता था। उसके दरबार में बहुत सारे अक्लमन्द दरबारी लोग थे और अमीर राजकुमार थे। उसके पास बहुत सारे ताकतवर योद्धा थे 100 हजार से एक कम सादे सिपाही थे।

उसके शहर में भी बहुत सारी तरीके के लोग रहते थे – ईमानदार लोग, लम्बी दाढ़ी वाले लोग, हर चीज़ के बारे में जानने की इच्छा रखने वाले गधे, जर्मन सौदागर, सुन्दर लड़कियाँ, रूसी, शराबी आदि आदि।

उस शहर में बाहर की तरफ किसान खेत जोतते थे उनमें गेहूँ उगाते थे आटा पीसते थे फिर उसको बाजार में बेचते थे और उससे जो पैसा आता था उससे शराब पीते थे।

ऐसे ही बाहर की जगह में एक बहुत गरीब बूढ़ा किसान अपने तीन बेटों के साथ रहता था – थोमस, पाखोम और इवान।[28] यह बूढ़ा किसान न केवल बहुत चतुर था बल्कि बहुत अक्लमन्द भी था। एक बार उसने शैतान से भी बातें की थीं।

---

[26] Ivanoushka the Simpleton (Tale No 4)

[27] Tsar or Tzar Pea lived with his Tsaritza Carrot.

[28] Thomas, Pakhom and Ivan were the names of the farmer's three sons

बूढ़े ने उसको एक गिलास शराब का दिया और उससे बातें कीं। उसने उससे इस शराब के बदले में उसके बहुत सारे भेद जान लिये। इस घटना के बाद तो उस किसान ने इतने आश्चर्यजनक काम करने शुरू कर दिये कि उसके पड़ोसी तो उसको टोना करने वाला[29], जादूगर या फिर शैतान का रिश्तेदार ही कहने लगे।

यह बिल्कुल सच है कि उस किसान ने बहुत आश्चर्यजनक काम किये। अगर तुमको प्यार चाहिये तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ वह तुमको कोई अजीब सी जड़ दे देगा और तुम्हारा प्यार तुम्हारे पास आ जायेगा।

अगर किसी के घर में चोरी हो गयी है तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ अपनी कहानी बताओ तो वह पानी के ऊपर किसी आत्मा को बुलायेगा एक औफीसर को पकड़ कर चोर के पास ले जायेगा और बस तुम्हारी खोयी हुई चीज़ तुम्हें मिल जायेगी। बस तुम्हें यह देखना है कि कहीं औफीसर ही उसको न चुरा ले।

वह बूढ़ा सचमुच अक्लमन्द भी बहुत था पर उसके बच्चे उसके बराबर के नहीं थे। हॉ उनमें से उसके दो बेटे करीब करीब उसके जैसे अक्लमन्द थे। वे शादीशुदा थे उनके बच्चे थे। पर उसका सबसे छोटा बेटा इवान अभी कुँआरा था।

[29] Translated for the word “Sorcerer”

कोई उसकी ज़्यादा परवाह भी नहीं करता था क्योंकि वह कुछ बेवकूफ सा ज़्यादा था। वह एक दो तीन भी ठीक से नहीं गिन पाता था। बस वह खाता था पीता था सोता था और इधर उधर लेटा रहता था। ऐसे आदमी की कोई परवाह क्यों करता।

हर एक जानता था कि कुछ लोगों की ज़िन्दगी उससे ज़्यादा अच्छी थी। पर इवान अच्छे दिल वाला था और शान्त स्वभाव का था।

उससे एक बैल्ट[30] माँगो तो वह अपना काफ्तान देने को भी तैयार रहता था। उससे उसके दस्ताने लो तो वह तुमको अपनी टोपी भी दे देगा। और इसी लिये सब उसको प्यार करते थे।

उसको लोग सीधा इवानुष्का कह कर बुलाते थे। हालाँकि इस नाम का मतलब था बेवकूफ फिर भी इसका मतलब था कि वह बहुत ही दयालु था।

हमारा यह बूढ़ा अपने बच्चों के साथ रहता रहा जब तक वह ज़िन्दा रहा। जब उसके मरने का समय आया तो उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे प्यारे बच्चों अब मेरे मरने का समय आ गया है। तुम लोगों को मेरी इच्छा पूरी करने चाहिये।

जब मैं मर जाऊँ तो तुम तीनों को मेरी कब्र पर आना चाहिये और वहाँ एक रात गुजारनी चाहिये। थोमस तुम पहली रात को

[30] Belt is which is tied on the waist to hold something at the place.

आओगे पाखोम तुम दूसरी रात को आओगे और सीधा इवानुष्का तीसरी रात को आयेगा।"

बड़े दोनों बेटों ने होशियार बेटों की तरह से अपने पिता से वायदा किया कि वे उसकी कब्र पर जरूर आयेंगे पर सीधे इवान ने ऐसा कोई वायदा नहीं किया उसने बस अपना सिर खुजलाया।

उसके बाद वह बूढ़ा मर गया और उसको दफ़ना दिया गया। उसके मरने की खुशी में लोगों ने बहुत सारे पैनकेक[31] खाये और बहुत सारी व्हिस्की पी।

अब अगर तुम्हें याद हो तो पहली रात को थोमस को अपने पिता की कब्र पर जाना था पर वह बहुत आलसी था या फिर डरपोक भी हो सकता है सो उसने इवान से कहा — "मुझे कल सुबह सवेरे जल्दी उठना है और उठ कर गेहूँ से भूसा निकालना है सो तुम मेरी जगह आज पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

सीधे इवानुष्का ने कहा "ठीक है।" उसने काली राई[32] की डबल रोटी का एक टुकड़ा लिया और पिता की कब्र पर चल दिया। वहॉ जा कर वह लेट गया और जल्दी ही खर्राटे मारने लगा।

---

[31] Pancake is flat kind of bread which is made of white flour is eaten with honey or syrup or butter. See its picture above.

[32] Rye is a kind of grain use to make bread and other things. It may be black or white.

चर्च की घड़ी ने रात के बारह बजे का घंटा बजाया तो हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी, बूढ़े ने पूछा "यहाँ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तुझको तेरे इस कहना मानने पर जरूर कुछ इनाम दूँगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और अँगीठी के पास उसकी गर्मी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहाँ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब दूसरी रात आयी। इस रात अपने पिता की कब्र पर जाने की पाखोम की बारी थी। वह भी कुछ देर सोचता रहा फिर इवान से बोला — "कल तो मेरे लिये बहुत काम है इवान। मेहरबानी कर के तुम आज मेरी जगह पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

इवानुष्का बोला "ठीक है।" उस दिन उसने मछली की एक पाई ली और अपने पिता की कब्र पर चला गया। वहाँ जा कर वह पिछले दिन की तरह से लेट गया और लेटते ही सो गया और जल्दी ही खर्राटे भी मारने लगा।

आधी रात हुई तो पहली रात की तरह से फिर हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी। बूढ़े ने बाहर निकल कर पूछा "यहॉ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तेरे इस कहना मानने को कभी नहीं भूलूॅगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और ॲगीठी के पास उसकी गर्मी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहॉ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब तीसरी रात आयी तो भाइयों ने इवानुष्का से कहा — "आज तो तुम्हारी ही बारी है पिता जी की कब्र पर जाने की सो तुम वहॉ जाओ। पिताजी की इच्छा तो पूरी करनी ही चाहिये न।"

इवान बोला "ठीक है।" इस बार उसने कुछ बिस्किट लिये अपनी भेड़ की खाल ओढ़ी और कब्र पर आ पहुॅचा। आधी रात को उसका पिता कब्र में से बाहर निकला और पूछा "यहॉ कौन है?"

"पिता जी मैं हूॅ इवानुष्का।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे, तुमको तुम्हारा इनाम मिलेगा।" कह कर बूढ़ा अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ बे घोड़े

उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

और लो इवानुष्का ने एक भागता हुआ घोड़ा देखा। उसके खुरों के नीचे जमीन हिल रही थी। उसकी ऑखें तारों की तरह चमक रही थीं। उसके मुँह और कानों से धुँआ बादलों की तरह से निकल रहा था।

घोड़ा आ कर बूढ़े के पास खड़ा हो गया। उसने आदमी की आवाज में पूछा — "बता तेरी क्या इच्छा है।"

बूढ़ा उसके बॉये कान में घुस गया वहॉ वह नहाया धोया तैयार हुआ और एक बहादुर नौजवान के रूप में उसके दॉये कान में से कूद कर बाहर आ गया। इवान ने उस नौजवान को पहले कभी देखा नहीं था।

बाहर आ कर वह बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरे बेटे मैं तुम्हें यह घोड़ा देता हूँ और ओ मेरे वफादार घोड़े और दोस्त तू मेरे बेटे की भी वैसे ही सेवा करना जैसे तूने मेरी सेवा की है।"

जैसे ही बूढ़े ने यह कहा कि मुर्गा बोला और वह टोना करने वाला अपनी कब्र में गिर पड़ा। हमारा सीधा इवानुष्का घर चला गया। घर जा कर वह लेट गया और कुछ ही देर में खर्राटे मारने लगा।

उसके भाइयों ने फिर पूछा — "आज क्या हुआ?"

सीधा इवानुष्का कुछ नहीं बोला बस उसने अपना हाथ हिला दिया। तीनों भाई अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी गुजारने लगे – दो अपनी होशियारी से और सबसे छोटा अपनी बेवकूफी से। वे लोग रोज अपने दिन एक ही तरह से गुजारते थे।

पर एक दिन और दूसरे दिनों से अलग दिन आया। उन्होंने सुना कि बड़े बड़े लोग बिगुल बजाने वाले और कई और संगीत के वाद्य बजाने वालों के साथ सारे देश में घूमने जा रहे थे।

वे लोग सबसे यह कहने जा रहे थे कि "ज़ार की इच्छा यह थी कि ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के एक अकेली बेटी थी ज़ारेवना बक्त्रियाना[33] जो उनकी राजगद्दी की भी मालिक थी।

उनकी बेटी इतनी सुन्दर थी कि जब वह सूरज की तरफ देखती थी तो सूरज भी उसको देख कर शर्मा जाता था। वह उसकी ऑखों से छिप जाता था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा को यह निश्चय करने में बहुत मुश्किल पड़ रही थी कि वे किससे अपनी बेटी की शादी करें।

वह आदमी एक ऐसा आदमी होना चाहिये जो किसी अच्छे खासे देश का राजा हो, लड़ाई के मैदान में बहादुर योद्धा हो, दरबार में अच्छा न्याय करने वाला हो, ज़ार को ठीक सलाह देने वाला हो और उसकी मौत के बाद उसके राज्य का काबिल वारिस हो।

---

[33] Tzarevna Baktriana – the daughter of Tzar – Tzar is the title of the King of Russia before 1917. Tzaritza is the wife of Tzar.

इसके अलावा वे यह भी चाहते थे कि दुलहा नौजवान हो, बहादुर हो, सुन्दर हो और उनकी ज़ारेवना[34] को बहुत प्यार करे।

यह सब आसान हो सकता था पर परेशानी यह थी कि सुन्दर ज़ारेवना को किसी से प्यार नहीं था। कभी ज़ार उसको यह लड़का बताता तो कभी वह लड़का बताता पर वह हमेशा यही जवाब देती "मैं उससे प्यार नहीं करती।" ज़ारिट्ज़ा ने भी कई बार कोशिश की पर हमेशा उसका वही जवाब आता "मुझे वह पसन्द नहीं है।"

एक दिन ऐसा आया जब ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर ने अपनी बेटी से शादी के मामले पर गम्भीरतापूर्वक बात की।

"हमारी प्यारी बच्ची, हमारी सुन्दर ज़ारेवना बक्त्रियाना, अब समय आ गया है जब तुमको अपना पति चुन लेना चाहिये। बहुत तरीके के लोगों ने, राजाओं से ले कर ज़ार राजकुमारों तक ने, हमारे घर की देहरियाँ पार कर कर के घिस दी हैं शराब के कमरे के कमरे खाली कर दिये हैं और तुमको अभी तक कोई तुम्हारी पसन्द का लड़का ही नहीं मिला है।"

ज़ारेवना बोली — "मेरे पिता राजा ज़ार और मेरी प्यारी माँ ज़ारिट्ज़ा, मुझे आप दोनों के लिये बहुत दुख है और मेरी इच्छा आपका कहा मानने की है। इसलिये किस्मत को निश्चय करने दो कि मेरा दुलहा कौन बनता है।

---

[34] Tzarevna means the daughter of Tzar

मैं चाहती हूँ कि आप मेरे लिये एक बड़ा कमरा बनवायें, एक बहुत ऊँचा कमरा, **32** घेरे का जिसके ऊपर एक खिड़की हो। मैं उस खिड़की में बैठूँगी और आप सब तरह के लोगों को वहाँ बुलायें – ज़ार, राजा, ज़ारेविच, कोरोलेविच, बहादुर योद्धा, सुन्दर नौजवान।

जो कोई भी उन **32** घेरों में से हो कर मेरी खिड़की के पास आयेगा और मुझसे अपनी अँगूठी बदलेगा वही मेरा पति और आपका बेटा और वारिस होगा।"

ज़ार और ज़ारिट्ज़ा दोनों ने अपनी बेटी की बातें ध्यान से सुनी और बोले — "बेटी तुम्हारी इच्छा का पालन किया जायेगा।"

जल्दी ही वैसा ही एक बड़ा कमरा बनवा दिया गया एक बहुत ऊँचा कमरा जिसमें वैनेशियन मखमल[35] के परदे लगे हुए थे जिनमें मोती के फुँदने[36] लगे हुए थे। जिनमें सुनहरे डिजाइन बने हुए थे। खिड़की के दोनों तरफ **32** गोले बने हुए थे।

नौकर लोग सब लोगों के पास जा रहे थे। कबूतर ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के शहर में उनका स्वागत करने लिये उड़ रहे थे। सभी जगह यह घोषित कर दिया गया था कि जो कोई भी उन

[35] Venetian velvet

[36] Translated for the word "Tassels". See its picture above

32 गोलों में से हो कर ज़ारेवना बक्त्रियाना के पास पहुँच कर उससे अपनी अँगूठी बदलेगा वही उसका पति बनेगा।

इस मुकाबले में उसके ओहदे को ध्यान में नहीं रखा जायेगा। वह ज़ार भी हो सकता है राजा भी और योद्धा भी ज़ारेविच भी कोरोलेविच भी सादा नागरिक भी हो सकता है और किसी भी देश का हो सकता है।

सो वह दिन भी आ पहुँचा। भीड़ मैदान में आ कर जमा होने लगी जहाँ तारे की तरह से चमकता हुआ नया बना कमरा था। ऊँची बनी खिड़की पर जवाहरातों से सजी हुई मखमल और मोती के कपड़े पहने हुए ज़ारेवना बैठी हुई थी।

नीचे लोग समुद्र की तरह से उमड़े पड़ रहे थे। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा अपनी राजगद्दी पर बैठे थे। उनके आसपास बोयर[37], योद्धा और बहुत से लोग थे। सुन्दर बहादुर और गर्व से अपना सीना ताने उम्मीदवार सीटी बजाते हुए अपने अपने घोड़ों पर सवार इधर से उधर घूम रहे थे। पर जब भी वह उस ऊँची खिड़की की तरफ देखते थे तो उनका दिल डूबने लगता था।

उनमें से कई लोग पहले कोशिश भी कर चुके थे। वे बहुत दूर से आते अपने आपको सँभालते, कूदते पर फिर पत्थर की तरह से गिर जाते और देखने वाले हँस पड़ते।

---

[37] Boyar is a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

सीधे इवानुष्का के दोनों भाई भी इस मैदान में आने के लिये तैयार हुए तो इवान ने कहा कि अपने साथ मुझे भी ले चलो।

भाइयों ने हँस कर कहा — "तू तो बेवकूफ है। तू घर पर रह और मुर्गों की देखभाल कर।"

वह बोला "ठीक है।" और मुर्गों के बाड़े की तरफ चला गया और वहॉ जा कर लेट गया।

पर जैसे ही उसके भाई वहॉ से गये वह सीधा इवानुष्का मैदान में बाहर आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहॉ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी ऑखों में ॲगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुँआ बादलों की तरह निकल रहा था।

घोड़े ने आदमी की आवाज में उससे पूछा — "आपकी क्या इच्छा है?"

सीधा इवानुष्का उस घोड़े के बॉये कान में घुस गया अपने आपको बदला और उसके दॉये कान से फिर से प्रगट हो गया। वह इतना सुन्दर हो गया कि किसी भी किताब में उसकी सुन्दरता का वर्णन नहीं मिलेगा क्योंकि कभी किसी ने इतना सुन्दर नौजवान देखा ही नहीं था तो उसका वर्णन कौन करता।

वह तुरन्त घोड़े पर कूद कर चढ़ गया और उसको रेशम के कोड़े से हॉका। घोड़े का धीरज छूट गया वह जमीन से ऊपर कूदा ऊपर और ऊपर अँधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे। वह बड़ी बड़ी नदियों के ऊपर से गया छोटी छोटी नदियों को और पहाड़ों को कूद कर पार किया।

घोड़े पर सवार इवानुष्का ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुँचा। वह चील की तरह ऊपर उड़ा **30** गोलों में से तो गुजरा पर आखीर के दो गोलों से नहीं गुजर सका और भँवर की तरह से वापस चला गया।

यह देख कर नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार भी अपनी राजगद्दी से कूद कर खड़ा हो गया। ज़ारिट्ज़ा भी चिल्ला पड़ी। हर आदमी आश्चर्य से चिल्ला रहा था।

इवानुष्का के भाई कोशिश कर के घर चले गये थे और बस अब एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहे थे कि उन्होंने कितना शानदार आदमी देखा था। तीस गोलों में से हो कर जाने की कितनी बढ़िया शुरूआत थी।

इवानुष्का जो बहुत पहले ही वहाँ आ चुका था बोला — "भाइयो वह शानदार आदमी मैं था।"

उसके भाई बोले — "चुप रहो और हमारा बेवकूफ मत बनाओ।"

अगले दिन दोनों भाई फिर से उसी मैदान में जाने लगे तो इवानुष्का ने फिर कहा "मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

"हम तुझे ले चलें, अरे तेरी जगह तो यही है। घर में शान्ति से बैठ और पुतले की बजाय तू मटर के खेत से चिड़ियों को भगा।"

इवान बोला — "ठीक है।" वह मटर के खेत चला गया और खेत से चिड़ियों को भगाने लगा।

पर जैसे ही उसके भाई घर से गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहाँ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी आँखों में अँगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुँआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बाँये कान में से घुसा अपने आपको बदला और उसके दाँये कान में से प्रगट हो गया। जब वह उसके दाँये कान में से बाहर निकला तो वह तो बस क्या ही लग रहा था। परियों की दुनियाँ में भी कोई ऐसा आदमी नहीं होगा रोजमर्रा की ज़िन्दगी में तो क्या।

इवानुष्का उसकी पीठ पर कूद कर बैठ गया और उसको अपने मजबूत कोड़े से मारा। वह कुलीन घोड़ा गुस्सा हो गया उसने एक कुदान मारी और वह जमीन से ऊपर कूदा, फिर ऊपर और ऊपर, ॲधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे।

वह एक बार कूद मारता तो एक मील आगे पहुॅच जाता। उसने दूसरी कूद मारी तो नदी पीछे छोड़ दी और तीसरी कूद मारी तो वह ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुॅचा।

फिर वह घोड़ा इवानुष्का को लिये हुए चील की तरह से ऊपर उड़ा, **31** गोलों में से हो कर गुजरा पर आखीर के गोले से नहीं गुजर सका और भॅवर की तरह से वापस चला गया।

लोग फिर चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार एक बार फिर से कूद पड़ा। जारिट्ज़ा एक बार फिर चिल्ला पड़ी। बोयर और राजकुमारों के मुॅह खुले के खुले रह गये।

सीधे इवानुष्का के भाई घर आ गये थे। वे उस आदमी की बहुत तारीफ कर रहे थे। वाकई वह एक आश्चर्यजनक आदमी था। उससे केवल एक गोला ही छूट गया।

इवानुष्का बोला — "वहॉ वह आदमी मैं था।"

वे गुस्से से बोले — "ओ बेवकूफ अपनी जगह शान्ति से रहो।"

तीसरे दिन इवानुष्का के भाई फिर वहीं ज़ार के यहाँ मजा लेने के लिये जा रहे थे तो इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

वे हँसे और बोले — "बेवकूफ अभी तो सूअरों को खाना देना है। अच्छा है कि तुम जा कर उनको खाना दो।"

इवान बोला "ठीक है।" और यह कह कर वह सूअरों को खाना देने चला गया।

पर जैसे ही वे घर से चले गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहाँ दौड़ता हुआ आ गया। उसके आने से जमीन काँपने लगी। उसकी आँखों में अँगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुँआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बाँये कान में घुसा अपने आपको बदला और उसके दाँये कान में से प्रगट हो गया। वह तो क्या ही सुन्दर आदमी बन गया था। कोई नौजवान लड़की तो इतना सुन्दर आदमी सोच भी नहीं सकती थी।

इवानुष्का ने घोड़े को एड़ लगायी उसकी लगाम सीधी खींची और लो वह तो हवा में ऊँचा उड़ चला। उसने तो हवा को भी पीछे छोड़ दिया। पंखों वाली चिड़ियों को भी पीछे छोड़ा दिया। अबकी बार तो हमारा सवार आसमान में बादलों की तरह जा रहा था।

उसकी वर्दी में चाँदी की जंजीरें लगी थीं वे सब बज रही थीं। उसके सुन्दर कपड़े हवा में उड़े जा रहे थे।

बह ज़ारेवना के ऊँचे कमरे के पास आ गया था। उसने अपने घोड़े को एक और चाबुक मारा तो घोड़े ने एक ऊँची कूद मारी और वह सारे गोले पार करके खिड़की के पास पहुँच गया।

इवान ने ज़ारेवना को अपनी मजबूत बाँहों में ले कर उसके होठों का चूमा, अँगूठी बदली और तूफान की तरह नीचे आ गया। इस समय वह अपने रास्ते में आये हर एक को कुचलता चला आ रहा था।

और ज़ारेवना? उसने तो उसको बिल्कुल भी विरोध नहीं किया वल्कि उसके माथे पर हीरे का एक तारा और लगा दिया।

नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ लो इसको पकड़ लो इसको।" पर वह तो वहाँ से पहले ही जा चुका था। उसने तो अपना कोई निशान भी नहीं छोड़ा था।

ज़ार मटर की शाही शान जा चुकी थी। ज़ारिट्ज़ा गाजर तो इस समय पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला पड़ी। ज़ार के अक्लमन्द सलाहकार केवल अपने अपने अक्लमन्द सिर हिला कर ही

रह गये। वे सब चुप थे। किसी की आवाज भी नहीं निकल रही थी।

इवानुष्का के भाई इस सब मामले पर बात करते घर आ गये। “वास्तव में। यह तो केवल सोचने वाली बात है। यह आदमी तो कामयाब हो गया और अब हमारी ज़ारेवना को उसका दुलहा मिल गया। पर वह है कौन और है कहाँ।”

इवानुष्का मुस्कुराया फिर बोला — “और वह नौजवान मैं हूँ और यहाँ हूँ।”

भाइयों ने उसको फिर चुप करते हुए कहा — “चुप रहो। तुम हर समय मैं मैं करते रहते हो।”

पर इस बार मामला कुछ गम्भीर था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा ने हुक्म जारी कर दिया कि शहर के चारों तरफ हथियारबन्द सिपाही तैनात कर दिये जायें जिनका काम यह हो कि जो कोई अन्दर आना चाहे तो उन सबको अन्दर तो आने दिया जाये पर किसी को बाहर न जाने दिया जाये।

इसके अलावा हर एक को शाही दरबार में पेश होना था और अपना माथा दिखाना था ताकि हीरे के तारे वाला आदमी ढूँढा जा सके।

सो अगले दिन सुबह से ही महल के पास लोगों की भीड़ इकट्ठी होनी शुरू हो गयी। हर एक का माथा देखा जा रहा था पर किसी माथे पर कोई तारा नहीं था।

शाम के खाने का समय हो रहा था और महल में लोग ओक की मेजों पर सफेद मेजपोश बिछाना ही भूल गये थे।

इवानुष्का के भाई भी अपना माथा दिखाने आने लगे तो अपने सीधे इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

तो उन्होंने उससे हँसी में कहा "तेरे लिये तो बस यही जगह ठीक है। पर ज़रा बता तो कि तेरे सिर को क्या हुआ है। जो तूने अपने सिर को कपड़ों से ढका हुआ है। क्या तुझे किसी ने मारा है?"

"ओह नहीं नहीं मुझे किसी ने नहीं मारा। मेरा माथा अपने आप ही दरवाजे से टकरा गया था। दरवाजे को तो कुछ नहीं हुआ पर मेरे माथे पर एक गूमड़ा[38] पड़ गया।"

उसकी इस बात पर उसके भाई हँस पड़े और महल की तरफ चले गये। उनके जाने के तुरन्त बाद ही इवानुष्का सीधा ज़ारेवना की खिड़की के पास गया। वहाँ ज़ारेवना खिड़की पर झुकी हुई बैठी हुई थी और अपने होने वाले दुलहे का इन्तजार कर रही थी।

जब इवानुष्का वहाँ पहुँचा तो सारे चौकीदार उसको देखते ही चिल्लाये – "यह रहा हमारा आदमी। अपना माथा दिखाओ। क्या तुम्हारे माथे पर तारा है?" कह कर वे खुद ही हँस पड़े।

इवानुष्का ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि उनको अपना माथा दिखाने से मना कर दिया।

---

[38] Goomadaa means a bump caused by some kind of hit.

यह देख कर चौकीदारों ने चिल्लाना शुरू किया तो शोर मचा। शोर मचा तो ज़ारेवना ने यह शोर सुना तो उस आदमी को अपने सामने लाने के लिये कहा।

अब तो कुछ किया नहीं जा सकता था सो उसको अपने सिर से कपड़ा हटाना ही पड़ा। लो उसके माथे के बीचोबीच तो हीरे का एक तारा चमक रहा था।

ज़ारेवना इवानुष्का को हाथ पकड़ कर ज़ार मटर के पास ले गयी और बोली — "पिता जी यह है वह जिसको मेरा पति बनना है और आपका दामाद और वारिस।"

अब तो उसको मना करने का समय ही नहीं था उसके लिये बहुत देर हो चुकी थी। सो ज़ार ने शादी की तैयारियॉ करने का हुक्म दे दिया। और हमारे सीधे इवानुष्का की शादी ज़ारेवना बक्त्रियाना से हो गयी।

ज़ार, ज़ारिट्ज़ा, नयी दुलहिन और दुलहा और इनके मेहमान सबने तीन दिन तक दावत खायी। उन दावतों में बहुत बढ़िया बढ़िया खाने बने थे। पीने को भी बहुत था। बहुत तरीके के आनन्द के साधन भी थे।

इवानुष्का के भाइयों को गवर्नर बना दिया गया और उन दोनों को एक एक गॉव और एक एक घर दे दिया गया।

कहानी कहने में तो समय नहीं लगता पर ज़िन्दगी जीने में तो समय भी लगता है और धीरज की भी जरूरत होती है।

जैसा कि हम जानते हैं सीधे इवानुष्का के भाई तो होशियार आदमी थे। जैसे ही वे अमीर आदमी बने हर आदमी यह बात अच्छी तरह समझ गया। इसके अलावा वे खुद भी यह बात जानते थे सो उनमें घमंड आना शुरू हो गया और वे अपनी शान बघारने लगे।

नम्र लोग उनके घर की तरफ देख भी नहीं सकते थे। बोयर लोग भी उनको देख कर अपनी फ़र की टोपी उतार देते थे।

एक बार कई बोयर ज़ार मटर के पास गये और कहा — "ज़ार आपके दामाद के भाई लोग इधर उधर अपनी बहुत शेखी बघार रहे हैं कि वे एक ऐसी जगह को जानते हैं जहाँ एक सेब का पेड़ उगता है जिसकी चाँदी की पत्तियाँ हैं और सोने के सेब हैं। वे यह पेड़ आपके लिये लाना चाहते हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही उन दोनों भाइयों को बुलवाया और उनसे तुरन्त ही वह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ लाने के लिये कहा जिसकी चाँदी की पत्तियाँ हैं और जिसके ऊपर सोने के सेब लगते हैं।

भाइयों ने बहुत बहाने बनाये पर ज़ार के भी अपने तरीके थे। उसने उनको शाही अस्तबल से बहुत अच्छे घोड़े दिये और उनको वह पेड़ लाने पर मजबूर किया सो वे अपने काम पर चल दिये।

हमारा दोस्त सीधे इवानुष्का को कहीं से कोई लंगड़ा सा घोड़ा मिल गया। वह उसकी पीठ पर उसकी पूँछ की तरफ मुँह कर के बैठ गया और वह भी चल दिया।

उस घोड़े पर सवार हो कर वह एक बड़े से खुले हुए मैदान में आ गया। वहाँ आ कर उसने उस घोड़े की पूँछ पकड़ कर उस घोड़े को घुमा कर फेंकते हुए कहा — "ओ कौओं और मैनाओं आओ देखो तुम्हारे लिये खाना तैयार है।"

इसके बाद उसने अपने घोड़े को बुलाया और हमेशा की तरह से उसके बाँये कान में से अन्दर जा कर उसके दाँये कान में से बाहर निकल आया। और फिर वे चल दिये।

कहाँ? पूर्व की ओर जहाँ यह चाँदी की पत्तियों वाला और सोने के सेब वाला सेब का पेड़ उगता था। यह पेड़ चाँदी के पानी के पास सोने की रेत में उगता था।

जब इवानुष्का उस जगह पहुँचा जहाँ पेड़ लगा था तो उसने वह पेड़ उखाड़ लिया और उसे घर ले चला। उसका रास्ता लम्बा था और वह थक गया था सो घर आने से पहले उसने अपना एक तम्बू लगाया और वहाँ आराम करने के लिये लेट गया।

उसी रास्ते से उसके भाई आ रहे थे। अब वे दोनों घमंडी नहीं रहे थे बल्कि कुछ दुखी हो गये थे क्योंकि वह यह नहीं जानते थे कि वे अब ज़ार को क्या जवाब देंगे।

तभी उन्होंने चॉदी की चोटी वाला एक तम्बू देखा और उसके पास देखा एक सेब का पेड़। वे उसके और पास आये तो वे दोनों चिल्लाये "अरे यह तो अपना सीधा है।" तब उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे सेब का पेड़ खरीदना चाहा। वे अमीर थे सो उन्होंने उसको तीन गाड़ी भर कर चॉदी देनी चाही।"

पर इवानुष्का बोला — "भाइयो यह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ बेचने के लिये नहीं है पर अगर तुम इसको पाना चाहते हो तो पा सकते हो। इसकी कीमत ज़्यादा नहीं है केवल तुम दोनों के दॉये पैर का एक एक ॲगूठा।"

भाइयों ने इस पर विचार किया और आखीर में उसकी मॉगी हुई कीमत देने पर राजी हो गये।

इवानुष्का ने उन दोनों के दॉये पैर के ॲगूठे काट लिये और उनको सेब का पेड़ दे दिया। खुश खुश दोनों भाई उस पेड़ को ज़ार के पास ले कर आये और उन्होंने वहॉ अपनी खूब शान बघारी।

वे बोले — "ओ ताकतवर ज़ार, हम इस पेड़ को लेने के लिये बहुत दूर गये। रास्ते में बहुत मुश्किलें सहीं पर किसी तरह से हम आपकी इच्छा पूरी करने में कामयाब हो गये।"

ज़ार मटर उस सेब के पेड़ को देख कर बहुत खुश हुआ और एक दावत का इन्तजाम किया। संगीत बजाने का हुक्म दिया और ढोल बजाने के लिये भी कहा। इवानुष्का के दोनों भाइयों को इनाम में उसने एक एक शहर दिया और उनकी बहुत तारीफ की।

यह देख कर तो बोयर और योद्धा लोग बहुत गुस्सा हो गये। उन्होंने ज़ार से कहा — "इस सेब के पेड़ में जिसमें चाँदी की पत्तियाँ हैं और सोने के सेब हैं ऐसी कौन सी आश्चर्यजनक बात है।

आपके दामाद के भाई तो शान बघार रहे हैं कि वे आपके लिये एक मादा सूअर ले कर आयेंगे जिसके सुनहरे बाल होंगे और चाँदी के दाँत होंगे। और केवल सूअर ही नहीं बल्कि उसके **12** बच्चे भी ले कर आयेंगे।"

यह सुन कर ज़ार ने उन दोनों भाइयों को बुलाया और उनको वह सुनहरे बाल वाला और चाँदी के दाँत वाला सूअर लाने के लिये कहा।

भाइयों ने बहाने बनाये पर उनके बहाने नहीं सुने गये सो उनको जाना ही पड़ा। एक बार फिर वे एक मुश्किल काम के लिये निकल पड़े – एक ऐसी सूअर को लाने के लिये जिसके सोने के बाल थे चाँदी के दाँत थे और बारह बच्चे थे।

उस समय सीधे इवानुष्का ने अपना मन कहीं और जाने का बनाया हुआ था। सो उसने एक गाय पर बैठने की सीट डाली और कूद कर उसकी पूँछ की तरफ मुँह करके बैठ गया। तुरन्त ही वह शहर छोड़ कर चल दिया।

वह एक खुले हुए मैदान में आया गाय को उसके सींगों से पकड़ कर दूर उछाल दिया और चिल्लाया — "आओ आओ ओ भूरे भेड़ियो और लाल लोमड़ियो तुम्हारा खाना तैयार है।"

फिर उसने अपने वफादार घोड़े को आने का हुक्म दिया। जब वह आ गया तो वह पहले की तरह से उसके बॉये कान में से घुसा और दॉये कान में से बाहर निकल आया।

वह उस घोड़े पर बैठ कर अपने काम पर चल दिया। इस बार वे दक्षिण की तरफ चले। एक दो तीन और वे घने जंगलों में थे। इन्हीं जंगलों में वह मादा सूअर इधर उधर घूम रही थी – सोने के बालों वाली और चॉदी के दॉतों वाली। उस समय वह वहॉ जड़ें खा रही थी। उसके पीछे थे उसके 12 बच्चे।

सीधे इवानुष्का ने उसके ऊपर रेशम की रस्सी का एक फन्दा बना कर फेंका और 12 सूअर के बच्चों को पकड़ कर एक टोकरी में रखा और घर चला गया।

पर इससे पहले कि वह ज़ार मटर के शहर पहुँच पाता उसने बीच रास्ते में सोने की चोटी वाला एक तम्बू गाड़ा और उसमें आराम करने के लिये लेट गया।

उसके तीनों भाई भी उदास चेहरे से उसी रास्ते से आ रहे थे। वे नहीं जानते थे कि ज़ार से क्या कहना था। रास्ते में उन्होंने एक तम्बू देखा और उसके पास देखी वह मादा सूअर जिसको वे ढूँढ रहे थे – सोने के बालों और चॉदी के दॉतों वाली।

वह एक रेशम की रस्सी से बॅधी हुई थी और वहीं पास में एक टोकरी में उसके 12 बच्चे रखे हुए थे।

भाइयों ने तम्बू में झाँका तो अरे यह तो फिर से इवानुष्का था। उन्होंने उसे जगाया और उस सूअर और उसके 12 बच्चों का सौदा किया। उनके लिये वे तीन गाड़ी भर कर कीमती जवाहरात देने को तैयार थे।

इवानुष्का ने फिर वही कहा — "भाइयो मेरे ये सूअर बिकाऊ नहीं हैं। पर अगर तुम इसको इतना ही चाहते हो तो तुम दोनों के दाँये हाथ की एक एक उँगली इसके लिये काफी है।"

इस बार दोनों ने कुछ ज़्यादा देर तक विचार किया फिर उन्होंने यह सोचा "लोग तो बिना दिमाग के भी खुशी खुशी रहते हैं तो हम बिना उँगलियों के क्यों नहीं रह सकते।" सो उन्होंने इवानुष्का को अपनी उँगलियाँ काटने की इजाज़त दे दी।

उँगलियाँ दे कर उन्होंने उससे सूअर और उसके बच्चे लिये और ज़ार के शहर चल दिये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने ज़ार को सूअर और उसके बच्चे दिये और अपनी खूब डींग हाँकी।

उन्होंने कहा — "ओ राजा ज़ार, हम हर जगह गये। नीले समुद्र के उस पार गये, घने जंगलों के उस पार गये गहरी रेत से हो कर गुजरे। हमने भूख सही प्यास सही पर आखीर में आपकी इच्छा पूरी की।"

ज़ार तो इतने अच्छे वफादार नौकर पा कर बहुत खुश हुआ। उसने फिर से एक दावत दी। सीधे इवानुष्का के भाइयों को इनाम दिया। उसने अबकी बार उनको बोयर का ओहदा दे दिया।

यह देख कर दूसरे बोयर और दरबार के लोगों ने ज़ार से कहा — "इस सूअर में क्या आश्चर्यजनक बात है। उसके सुनहरे बाल और चाँदी के दाँत अच्छे हैं पर सूअर तो हमेशा सूअर ही रहता है।

आपके दामाद के भाई तो इसकी भी शान बघार रहे हैं कि वे आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से एक घोड़ी चुरा कर ला देंगे जिसकी गर्दन के बाल सुनहरी हैं और खुर हीरे के हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही सीधे इवानुष्का के दोनों भाइयों को बुलाया और आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से वह वाली घोड़ी चुराने के लिये कहा जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल हैं और जिसके हीरे के खुर हैं।

दोनों भाइयों ने कसम खायी कि उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि वे ऐसी घोड़ी ला कर देंगे पर ज़ार उनकी बात कहाँ सुनने वाला था।

उसने कहा — "चाहे कितना भी सोना ले जाओ चाहे कितने भी योद्धा ले जाओ पर वह सुन्दर घोड़ी ला कर मुझे दो जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल हैं और हीरे के खुर हैं।

अगर तुम उसे मुझे ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दूँगा। और अगर नहीं ला कर दोगे तो तुम लोगों को फिर से किसान बना दिया जायेगा।"

दोनों भाई चल दिये दो दुखी हीरो की तरह से। वे बहुत धीरे धीरे जा रहे थे पर कहाँ जा रहे थे यह वे नहीं जानते थे। इवानुष्का

इस बार एक डंडी पर बैठा और कूदता हुआ एक खुले मैदान में पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने फिर से अपने घोड़े को बुलाया। उसके बाँये कान में से घुसा और दाँये कान में से निकल आया। और फिर दोनों एक दूर देश के लिये चल पड़े – एक टापू के लिये एक बहुत बड़े टापू के लिये।

उस टापू पर आग वाला ड्रैगन अपने एक लोहे के अस्तबल में रखे कीमती खजाने की देखभाल कर रहा था – वह घोड़ी जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे। जो सात भारी लोहे के दरवाजों के पीछे सात तालों में बन्द थी।

हमारा सीधा इवानुष्का चलता रहा चलता रहा, कब तक यह तो पता नहीं पर यकीनन वह तब तक चलता रहा जब तक वह उस टापू पर नहीं पहुँच गया।

वहाँ पर वह उस ड्रैगन से तीन दिन तक लड़ा और चौथे दिन उसे मारा। उसे मार कर उसने ताले खोलने शुरू किये। इसमें उसे तीन दिन और लग गये। ताले खोल कर उसने वह आश्चर्यजनक घोड़ी निकाली जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे और उसको ले कर घर लौट चला।

रास्ता बहुत लम्बा था इससे पहले कि वह अपने शहर पहुँच पाता उसने आराम करने के लिये रास्ते में अपना तम्बू गाड़ा जिसकी

चोटी पर उसने हीरा लगा दिया और आराम करने के लिये लेट गया।

उसके भाई भी उसी रास्ते से आये। वे बहुत उदास और दुखी थे क्योंकि वे सोच रहे थे कि वे शहर लौट कर ज़ार को क्या जवाब देंगे और उसके गुस्से को कैसे सहेंगे।

तभी उन्होंने किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनी जिससे सारी धरती कॉप उठी। उन्होंने देखा कि वह तो वह घोड़ी थी जिसकी गर्दन पर सुनहरी बाल थे। हालॉकि उसकी गर्दन के बाल उस समय शाम के धुँधलके में आग की तरह चमक रहे थे।

वे रुके उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे उस आश्चर्यजनक घोड़ी का सौदा करना चाहा। इस बार वह दोनों उसको उस घोड़ी के बदले में एक एक बुशैल भर कर जवाहरात देना चाहते थे और साथ में कुछ और भी।

इवानुष्का बोला — "हालॉकि मेरी घोड़ी बिकाऊ नहीं है पर अगर तुम उसे लेना ही चाहते हो तो मैं तुम्हें उसे तुम्हारे दॉये कान के बदले में दे दूँगा।"

इस बार भाइयों ने कुछ सोचा विचारा नहीं कुछ बहस भी नहीं की और इवानुष्का को अपने अपने दॉये कान काटने दिये। कान कटाने के बाद घोड़ी की लगाम पकड़ी और सीधे ज़ार के पास पहुँचे।

उन्होंने ज़ार को गर्दन पर सुनहरी बाल वाली और हीरे के खुर वाली घोड़ी दी और फिर अपनी ऊँची ऊँची शान बघारी। हम समुद्र के उस पार गये हम पहाड़ों के उस पार गये फिर हम आग वाले ड्रैगन से लड़े जिसने हमारे कान और उँगलियाँ काट लीं।

पर हमको इस बात का बिल्कुल डर नहीं था हमको तो बस आपकी सेवा करनी थी। हमने अपना खून भी बहाया और पैसा भी खोया।

ज़ार मटर ने उनको सोने से ढक दिया। उसने उनको अपने बाद का सबसे ऊँचा पद दे दिया और एक ऐसी दावत का इन्तजाम किया कि शाही रसोइये मेहमानों को खाना खिलाने के लिये खाना बनाते बनाते थक गये। शाही शराबखाने भी करीब करीब खाली हो गये।

ज़ार मटर अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। एक भाई उसके दाँयी तरफ बैठा था दूसरा भाई उसकी बाँयी तरफ बैठा था। दावत चल रही थी। सब बहुत खुश थे। सब बहुत पी रहे थे। सब बहुत शोर मचा रहे थे।

इस सबके बीच में हमारा सीधा इवानुष्का वहाँ घुसा। वही सीधा इवानुष्का जो एक बार में ही बत्तीस गोले पार कर सुन्दर ज़ारेविच बक्त्रियाना की खिड़की के पास पहुँच गया था।

जब भाइयों ने उसे देखा तो एक शराब पी रहा था। उसे देख कर उसका गला शराब से रुँध गया और दूसरा माँस खा रहा था सो

उसका गला मॉस से रुँध गया। उन्होंने उसे देखा तो उनकी ऑखें खुली की खुली रह गयीं।

सीधे इवानुष्का ने अपने ससुर जी को सिर झुकाया और फिर अपनी कहानी कुछ इस तरह सुनायी —

उसने उनको उस आश्चर्यजनक सेब के पेड़ की कहानी बतायी जिसके पत्ते चॉदी के थे और सेब सोने के थे। उसने उनको उस मादा सूअर की कहानी सुनायी जिसके बाल सोने के थे और दॉत चॉदी के थे और उसके **12** बच्चे थे। उसने उनको उस घोड़ी की कहानी भी सुनायी जिसकी गरदन के बाल सुनहरी थे और खुर हीरे के थे।

कहानियॉ खत्म करने के बाद उसने अपनी जेब से पैर के अँगूठे हाथ की उँगलियॉ और कान निकाले और ज़ार के सामने रख दिये और कहा कि "ये मैंने इन चीज़ों के बदले में लिये थे।"

यह सब देख कर तो ज़ार बहुत गुस्सा हो गया। उसने दोनों भाइयों को झाड़ू मार कर बाहर निकाल देने का हुक्म दिया। एक को उसने अपने सूअरों को खाना खिलाने के लिये रख लिया और दूसरे को अपनी टर्कियों की देखभाल के लिये रख लिया।

उसके वाद ज़ार ने सीधे इवानुष्का को अपने पास बिठाया और सबसे ऊँचे से भी ऊँचे का ओहदा दिया। इस खुशी में फिर एक दावत का इन्तजाम किया गया जो इतने दिनों तक चली जब तक लोग खाते खाते थक नहीं गये।

इवानुष्का अब ज़ार के राज्य को अक्लमन्दी से सँभालता था। अपने ससुर की मौत के बाद वह ज़ार बन गया। उसकी प्रजा उसको बहुत प्यार करती थी। उसके कई बच्चे हुए और उसकी ज़ारिट्ज़ा बक्त्रियाना हमेशा ही बहुत सुन्दर रही।

5 दुखी बोगोटिर[39]

एक बहुत छोटे से गाँव में, बस मुझसे यह मत पूछो कि कहाँ पर, पर रूस में ही, दो भाई रहते थे। इनमें से एक भाई अमीर था और दूसरा भाई गरीब था।

अमीर भाई की किस्मत अच्छी थी वह जो कोई भी काम करता उसको उसी में कामयाबी मिलती और उसको फायदा होता। जबकि गरीब भाई कितनी मुश्किलों से कोई काम करता पर उसको उसमें कुछ हासिल नहीं होता।

इस तरह से अमीर भाई और अमीर होता जा रहा था और अब वह एक अमीर आदमियों वाले शहर में चला गया था वहाँ उसने एक बड़ा मकान भी खरीद लिया था।

गरीब भाई अभी भी गरीब था और इतना गरीब था कि अक्सर उसके केबिन में डबल रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं होता था। उसके बच्चे बेचारे बहुत ही दुखी से खाने के लिये चिल्लाते रहते थे।

एक दिन गरीब भाई का धीरज छूट गया और वह अपनी बदकिस्मती की बड़े ज़ोर ज़ोर से रो कर शिकायत करने लगा कि

---

[39] Woe Bogotir (Tale No 5)

वह अब क्या करे। असल में अब उसकी सारी हिम्मत टूट गयी थी और उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया था।

सो एक दिन उसने अपने अमीर भाई के घर जाने का और उससे कुछ सहायता माँगने का फैसला किया। वह उसके घर गया और उससे बोला — "भाई मेरे ऊपर दया करो। क्योंकि अब मेरे पास बिल्कुल भी पैसे नहीं है।"

अमीर भाई बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। हम लोग कुछ ऐसे काम जरूर कर सकते हैं। हमारे पास पैसा है। पर देखो करने के लिये काम भी बहुत है। तुम मेरे घर पर ही रहो और मेरे काम में मेरा हाथ बॅटाओ।"

गरीब भाई राजी हो गया "ठीक है।" कह कर उसने तुरन्त ही अपने अमीर भाई के घर में काम करना शुरू कर दिया। वह उसका बड़ा सा मैदान साफ करता उसके घोड़ों की देखभाल करता कुॅए से पानी खींच कर लाता और लकड़ी काटता।

काम करते करते उसे एक हफ्ता बीत गया, दो हफ्ते बीत गये। तब उसके भाई ने उसको पच्चीस कोपैक्स[40] दिये। जिसका मतलब था केवल तेरह सैन्ट। उसने उसको काली राई[41] की एक डबल रोटी भी दी।

---

[40] Copeck is a monetary unit of Russia and some other countries of the former Soviet Union, equal to one hundredth of a ruble – which means only 13 cents.
[41] Rye is a kind of grain which is used to make bread etc.

गरीब भाई ने उसे ले लिया और नम्रतापूर्वक बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से अपने बदकिस्मत घर को जाने ही वाला था कि अमीर भाई की आत्मा कचोट उठी और उसने अपने गरीब भाई को वापस बुलाया और कहा — "अरे इतनी जल्दी भी क्या है। कल मेरा जन्मदिन है दावत खा कर जाना।"

यह सुन कर गरीब भाई रुक गया। पर इस खुशी के मौके पर भी उस बदकिस्मत की किस्मत अच्छी नहीं निकली। उसका अमीर भाई अपने मेहमानों और तारीफ करने वालों के स्वागत में बहुत ज़्यादा व्यस्त था जो आते जा रहे थे और कहते जा रहे थे कि वह कितना अच्छा था और वे उसको कितना प्यार करते थे।

अमीर भाई उन सबको उनके प्यार के लिये धन्यवाद दे रहा था और बहुत नीचे झुक झुक कर उन सबको खाने पीने और आनन्द करने के लिये कह रहा था।

पर उसके पास अपने भाई के लिये कोई समय नहीं था।

जब अमीर भाई ने उसको बिल्कुल ही अनदेखा कर दिया तो गरीब भाई एक कोने में जा कर बैठ गया। उसको न खाने के लिये पूछा गया और न पीने को।

जब सारी भीड़ जाने के लिये तैयार हुई तो जाने से पहले उन खुश लोगों ने अपने मेजबान को सिर झुकाया और बहुत अच्छी अच्छी बातें कहीं। तो गरीब भाई ने भी ऐसा ही किया। बल्कि

उसने उन लोगों से भी ज़्यादा नीचा सिर झुकाया और अपने अमीर भाई को और ज़्यादा धन्यवाद दिया।

मेहमान लोग अपनी अपनी किसानों वाली गाड़ियों में बैठ कर गाते हुए अपने अपने घर चले गये। गरीब भाई भूखा और दुखी अपने रास्ते चल दिया कि तभी उसके दिमाग में एक विचार आया।

"क्या हो अगर मैं भी खुशी का गीत गाऊँ। लोग सोचेंगे कि मैंने भी अपने भाई के घर में कुछ अच्छा समय गुजारा और मैं भी अब अपने घर खुशी खुशी जा रहा हूँ।"

उसने अपना गाना शुरू किया ही था कि वह तो बेहोश हो कर नीचे गिरने ही वाला था क्योंकि उसने अपने पीछे साफ साफ अपनी ही धुन किसी दूसरे की आवाज में चीखने की आवाज में सुनी।

उसने तुरन्त ही अपना गाना रोक दिया तो उस आवाज ने भी गाना रोक दिया। उसने फिर गाना शुरू किया तो उस आवाज ने भी गाना शुरू कर दिया।

गरीब भाई अपने बराबर में देख कर चिल्लाया — "कौन है वहाँ, तुरन्त बाहर आओ।"

"हा हा हा हा।" एक राक्षस[42] वहाँ फटे कपड़े पहने प्रगट हुआ पतला सा पीला सा बिल्कुल एक ढाँचे जैसा।

वह बेचारा गरीब आदमी उसे देख कर डर गया पर हिम्मत से उसने क्रास का निशान बनाया और बोला — "तू कौन है?"

[42] Translated for the word "Monster"

वह बोला — "मैं "बहुत ज़्यादा दुखी"[43] हूँ। मैं एक रूसी हीरो हूँ। मेरा नाम दुखी बोगोटिर[44] है। मैं सब कमजोर लोगों पर दया करता हूँ। मुझे तुझ पर भी दया आती है। मैं चलते चलते तेरी भी सहायता करूँगा।"

"ठीक है ओ बहुत ज़्यादा दुखी। चलो हम लोग एक दूसरे की बाँह में बाँह डाल कर चलते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है इस दुनियाँ में मेरा और कोई दोस्त ही नहीं है।"

राक्षस हँस कर बोला — "चल सवारी करते हैं ओ भले आदमी। मैं हमेशा तेरा वफादार साथी रहूँगा।"

"धन्यवाद पर हम सवारी किस पर करेंगे?"

"मुझे तेरा तो पता नहीं कि तू किस पर सवार होगा पर मैं तुझ पर सवारी करूँगा।" कह कर वह उस बदकिस्मत आदमी के कन्धों पर बैठ गया।

अब उस बेचारे गरीब आदमी के अन्दर तो ताकत ही नहीं थी कि वह उसको अपने कन्धे पर से उतार फेंके। वह बेचारा बहुत ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर बिठा कर अपने रास्ते पर रेंगता हुआ सा चलता रहा।

---

[43] Translated for the words "Bitter Woe"

[44] Woe Bogotir

वह गरीब आदमी तो बेचारा बहुत धीरे से चल पा रहा था पर बहुत ज़्यादा दुखी गाता हुआ सीटी बजाता हुआ उसको चाबुक मारता हुआ चला जा रहा था।

जब भी गरीब आदमी एक लम्बी सॉस भरता तो बहुत ज़्यादा दुखी पूछता — "मास्टर इतने दुखी क्यों हो। मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें एक गीत सिखाता हूॅ। यह मेरा बहुत प्यारा छोटा सा गीत है —

मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूॅ मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूॅ
जो मेरे साथ रहता है उसके दुख उसके काबू में रहते हैं
और जब पैसा नहीं होता तो मैं उसके लिये सोना ढूॅढ लेता हूॅ

ध्यान रखना मास्टर। तुम्हारे पास पच्चीस कोपैक्स हैं। चलो चल कर थोड़ी सी शराब खरीदते हैं। थोड़ा सा आनन्द मनाते हैं।"

गरीब आदमी ने उसकी बात मान ली। वे गये और उन्होंने सारे पैसों की शराब खरीद ली। शराब पीने के बाद यह बदकिस्मत आदमी बहुत ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर लादे लादे अपने घर आया।

घर में उसकी पत्नी दुखी थी। उसके बच्चे भूखे थे और रो रहे थे। पर वह बहुत ज़्यादा दुखी शराब के असर में गा रहा था और नाच रहा था।

अगले दिन बहुत ज़्यादा दुखी ने एक लम्बी सॉस भरी और बोला — "मुझे पीने की इच्छा हो रही है चलो चल कर पीते हैं।"

गरीब आदमी बोला — "पर मेरे पास पैसे नहीं है।"

"क्या तुम मेरा बताया गीत भूल गये हो? चलो तुम्हारे खेती के यन्त्र बेच कर उनके पैसे से शराब पीते हैं और कुछ अच्छा समय बिताते हैं।"

"ठीक है।"

बेचारा गरीब आदमी उसको मना करने की हिम्मत भी नहीं कर सका और सबसे ज़्यादा दुखी बोगोटिर उसका मालिक बन बैठा। वे एक शराब की दूकान पर गये वहाँ जा कर शराब पी गाया और कुछ समय अच्छे से गुजारा।

अगले दिन सबसे ज़्यादा दुखी ने फिर एक लम्बी साँस भरी ओर बोला "चलो चल कर पीते हैं। कुछ समय अच्छे से बिताते हैं। अबकी बार हम अपने आपको छोड़ कर सब बेच देते हैं।"

गरीब आदमी ने समझ लिया कि बस अब तो अपनी बरबादी ही है सो उसने सबसे ज़्यादा दुखी को धोखा देने का निश्चय किया।

सो वह बोला — "मैंने एक बार अपने बड़े बूढ़ों से सुना था कि गाँव के पीछे घने जंगल के पास एक खजाना गड़ा है। पर वह खजाना एक बहुत बड़े भारी पत्थर के नीचे दबा है। वह पत्थर इतना भारी है कि एक आदमी से तो हिल भी नहीं सकता।

अगर हम दोनों मिल कर उस पत्थर हटाने में कामयाब हो जायें यानी तुम और मैं तो ओ सबसे ज़यादा दुखी बोगोटिर तो हम उस पैसे से खूब पी सकते हैं और अच्छा समय गुजार सकते हैं।"

बोगोटिर चिल्लाया — "चलो चलो जल्दी करो। सबसे ज़्यादा दुखी तो अभी इतना ताकतवर है कि पत्थर हटाने से भी ज़्यादा मुश्किल काम कर सकता है।"

सो वे गाँव के पीछे एक चौराहे की तरफ गये तो वहाँ जा कर उन्होंने एक बहुत बड़ा पत्थर देखा। वह पत्थर इतना भारी लग रहा था कि उसको हिलाने के लिये कम से कम पाँच छह किसान तो चाहिये। पर हमारे गरीब आदमी ने अपने साथी बहुत ज़्यादा दुखी बोगोटिर की सहायता से उसको तुरन्त ही हटा लिया।

पत्थर हटा कर उन्होंने उसके नीचे देखा तो उसके नीचे एक गड्ढा था – अँधेरा गहरा गड्ढा। उस गड्ढे की तली में कुछ चमक रहा था।

किसान ने बहुत ज़्यादा दुखी से कहा — "ओ बहादुर दुखी अब तुम इसके अन्दर कूदो और इसका सोना मुझे बाहर निकाल कर फेंको। तब तक मैं पत्थर पकड़ता हूँ।"

दुखी गड्ढे के अन्दर कूद गया और फिर बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "मैं बता रहा हूँ मास्टर कि सोने का तो यहाँ कोई अन्त ही नहीं है। यहाँ तो सोने से भरे बीस से भी ज़्यादा बर्तन हैं।" और दुखी ने एक बर्तन उस गरीब आदमी को पकड़ा दिया।

गरीब आदमी ने जल्दी से वह बर्तन दुखी से लिया और अपने कमीज के अन्दर छिपा लिया और वह भारी पत्थर उसकी पुरानी जगह खिसका दिया।

इस तरह वह सबसे ज़्यादा दुखी उस गड्ढे के अन्दर ही रह गया और किसान ने सोचा कि मेरे साथी के लिये यही जगह ठीक है क्योंकि ऐसे साथी के साथ तो सोना भी कड़वा लगेगा।

सो उस चालाक आदमी ने क्रास का निशान बनाया और जल्दी जल्दी वहाँ से घर की तरफ चल दिया।

अब तो वह एक नया आदमी बन गया था हिम्मतवाला, नम्र और मेहनती। उसने अब फलों का एक बागीचा खरीद लिया था। अपना घर भी नया करवा लिया था। और एक नया व्यापार भी शुरू कर दिया था।

अब वह बहुत कामयाब हो गया था। एक साल के अन्दर अन्दर उसने बहुत पैसा कमा लिया था। पुरानी झोंपड़ी की जगह अब उसने एक नया केबिन बनवा लिया था।

एक सुन्दर दिन वह अपने भाई के बारे में जानने के लिये अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शहर गया ताकि वह उसको अपने घर उस दावत में बुला सके जो वह अपने नये घर में देने वाला था।

अमीर भाई बोला — "यह तो कुछ मजाक सा लगता है। ओ बेवकूफ जेब में एक रूबल के बिना भी तू अमीरों की नकल करता है।" और यह कह कर उसका अमीर भाई हँसता रहा हँसता रहा।

पर वह साथ में यह भी सोचता रहा कि उसके गरीब भाई के साथ ऐसा कैसे हुआ कि वह इतनी जल्दी अमीर बन गया सो वह तुरन्त ही अपने गरीब भाई के नये घर गया।

उसको तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसका वह गरीब भाई तो बहुत अमीर हो गया था। शायद उससे भी ज़्यादा। उसके घर की हर चीज़ में पैसा बोल रहा था।

गरीब भाई ने अपने अमीर भाई और उसके परिवार का बहुत ही नम्रता से स्वागत किया और बहुत अच्छी तरह से खातिरदारी की। उसने उनको बहुत अच्छा खाना खिलाया और शहद पीने को दिया। सब लोग बहुत देर तक बातें करते रहे।

गरीब भाई ने दुखी के बारे में अपने अमीर भाई को सब बता दिया कि उसने कैसे उसको धोखा देने का निश्चय किया था और फिर कैसे उस बोझे से बच कर वह एक खुश आदमी बना।

यह सब सुन कर अमीर भाई की उत्सुकता बढ़ती गयी। उसने सोचा "क्या वह बेवकूफ है कि इतने सारे बर्तनों में से वह केवल एक ही बर्तन ले कर आया। वह तो वाकई बेवकूफ है बिल्कुल ही बेवकूफ। अगर किसी के पास पैसा है तो वह दुखी भी बुरा नहीं है।"

सो तुरन्त ही उसने उस पत्थर की खोज में जाने का, उसको हटाने का, सारे खजाने को लेने का और दुखी बोगोटिर को अपने भाई के पास वापस भेजने का विचार बनाया।

जितना जल्दी इसको सोचा गया उससे कहीं ज़्यादा जल्दी कर लिया गया। अमीर भाई ने अपने गरीब भाई को विदा कहा और वहॉ से चला गया।

पर वहाँ से वह अपने घर नहीं गया वह जल्दी से पत्थर की तरफ भागा। उसको पत्थर तो मिल गया पर उसको हटाने के लिये उसको बहुत मेहनत करनी पड़ी।

जैसे ही उसने उसको बहुत थोड़ा सा हटाया कि उसने तुरन्त ही उसके नीचे देखा। लगा कि दुखी बोगोटिर उसका इन्तजार ही कर रहा था वह कूद कर बाहर आ गया और उसके कन्धे पर बैठ गया।

अमीर आदमी को वह बोझ लगा तो उसके मुँह से निकला "ओह कितना भारी बोझ है।" तो देखा तो उस राक्षस को अपने कन्धे पर बैठा पाया।

वह राक्षस उसके कान में फुसफुसा रहा था "तू तो बहुत होशियार निकला। तू मुझे उस गड्ढे में मरने के लिये छोड़ गया। पर अब मेरे प्यारे अबकी बार तू मुझसे छुटकारा नहीं पा सकता। अब हम साथ साथ रहेंगे।"

अमीर आदमी बोला — "ओ बेवकूफ दुखी, वह मैं नहीं था जो तुझे इस पत्थर के नीचे छोड़ गया था वह तो मेरा भाई था तू उसी के पास जा।"

पर नहीं वह दुखी तो उसके भाई के पास नहीं जायेगा। वह राक्षस तो बस फिर हँसता ही रहा हँसता ही रहा। उसने अमीर आदमी से कहा — "एक ही बात है। अब से हम एक दूसरे के साथी रहेंगे।"

अमीर आदमी उस बदकिस्मती देने वाले राक्षस का भारी बोझ उठाये हुए अपने घर चला गया। उस राक्षस की वजह से उसका सारा पैसा चला गया।

उसके भाई के सिवाय कौन जानता था कि उस दुखी से छुटकारा कैसे पाया जाये। और वह अभी तक भी अमीर था।
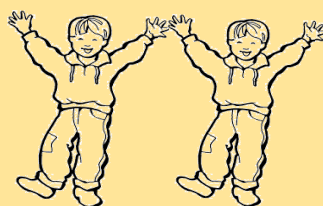
6 बाबा यागा[45]

कहीं किसी जगह, यह मैं ठीक से नहीं बता सकता कि कहाँ और किस जगह पर यकीनन यह इतने बड़े रूस में ही कहीं, एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके दो जुड़वाँ बच्चे थे – एक बेटा और एक बेटी।

एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि उस किसान की पत्नी मर गयी। किसान बेचारा बहुत दिनों तक दुखी रहा। एक साल गुजरा दो साल गुजरे फिर तीसरा भी गुजरा। किसान ने देखा कि उससे घर चल नहीं रहा था। उसे एक स्त्री की जरूरत थी।

और फिर एक दिन ऐसा आया कि किसान ने सोचा कि मैं अगर दोबारा शादी कर लूँ तो शायद घर में सब कुछ ठीक हो जाये। सो उसने वैसा ही किया। उसने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी के भी बच्चे थे।

सौतेली माँ अपने दोनों सौतेले बच्चों से बहुत जलती थी। वह उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी। वह उनको बिना किसी बात के डाँटती। जब चाहती अक्सर उनको घर के बाहर भेज देती। उनको पेट भर कर खाना भी नहीं देती भूखा रखती।

और फिर एक दिन ऐसा आया कि वह उनसे छुटकारा पाने के बारे में सोचने लगी।

---

[45] Baba Yaga (Tale No 6)

क्या आपको पता है कि जब कोई आदमी ऐसा सोचता है तो इसका क्या मतलब होता है? यह नीच विचार एक जहरीले पौधे की तरह बढ़ता रहता है और अच्छे विचारों को मारता रहता है।

इस तरह एक नीच विचार उस सौतेली माँ के दिल में पनप रहा था सो उसने यह सोच कर उन दोनों बच्चों को एक जादूगरनी[46] के पास भेजने का सोचा कि वे वहाँ से वापस लौट कर नहीं आयेंगे।

एक दिन उसने उन अनाथ बच्चों से कहा — "तुम लोग मेरी नानी के पास जाओ जो जंगल में एक झोंपड़ी में रहती है जो मुर्गी की टाँगों पर खड़ी है। जो भी काम वह तुमसे कराये उसके लिये वह तुम सब करना तो वह तुमको खाने के लिये मिठाई देगी और तुम लोग वहाँ बहुत खुश रहोगे।"

बच्चे चल दिये पर बजाय जादूगरनी के घर जाने के वह होशियार लड़की अपने भाई का हाथ पकड़ कर अपनी सगी बूढ़ी नानी के घर चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपनी नानी से जंगल जाने की बात कही।

भली बूढ़ी नानी उन पर दया करते हुए बोली — "ओह मेरे प्यारे बच्चों। मेरा दिल तुम्हारे लिये रोता है पर मैं क्या करूँ। यह मेरे बस में नहीं है कि मैं तुम्हारी कोई सहायता कर सकूँ।

तुमको वहाँ जाना ही पड़ेगा। वह कोई प्यारी नानी नहीं है बल्कि एक नीच जादूगरनी है। पर तुम मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें एक

[46] Translated for the word "Witch"

बात बताती हूँ – हमेशा हर एक के साथ अच्छे बन कर रहो। किसी की बुराई मत करो। कभी भी कमजोर की सहायता करने से नहीं बचो। और हमेशा अपने लिये भी सहायता की उम्मीद रखो।"

फिर नानी ने बच्चों को ताजा मीठा दूध पिलाया और दोनों को एक एक टुकड़ा सूअर के मॉस का दिया। उसने उनको कुछ बिस्किट भी दिये क्योंकि बिस्किट तो हर घर में होते हैं। बच्चे मॉस और बिस्किट ले कर चले गये।

जब बच्चे चले गये तो वह बाहर खड़ी खड़ी बहुत देर तक उनको जाते देखती रही।

बच्चे जंगल में पहुँचे तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये कि वहाँ तो एक झोंपड़ी खड़ी हुई थी। और वह तो कैसी अजीब थी। वह तो मुर्गी की छोटी छोटी टॉगों पर खड़ी थी। उसकी चोटी पर एक मुर्गे का सिर लगा हुआ था।

यह देख कर तो वे दोनों कॉप गये। अपनी कॉपती हुई बच्चों जैसी आवाज में उन्होंने पुकारा — "इज़बूष्का इज़बूष्का।[47] अपनी पीठ जंगल की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा हमारी तरफ करो।"

---

[47] Izboushka means hut in Russian.

झोंपड़ी ने वैसा ही किया जैसा बच्चों ने कहा। दोनों बच्चों ने उस झोंपड़ी के अन्दर झॉक कर देखा तो देखा कि जादूगरनी तो उसमें आराम कर रही थी।

उसका सिर घर की देहरी के पास था। उसका एक पैर एक कोने में था तो दूसरा पैर दूसरे कोने में। उसके घुटने उस झोंपड़ी के बीच के डंडे के पास थे।

जादूगरनी बोली — "फ़ू फ़ू फ़ू। मुझे किसी रूसी आत्मा की बू आ रही है।"

बच्चे यह सुन कर डर गये पर वे उसके पास ही खड़े रहे। डरने के बावजूद बच्चों ने नम्रतापूर्वक कहा — "ए नानी मॉ। हमारी सौतेली मॉ ने हमें आपकी सेवा करने भेजा है।"

जादूगरनी बोली — "मैं बच्चों को रखने के खिलाफ नहीं हूँ अगर तुम मेरा कहा मानो तो। अगर तुम मेरा कहा मानोगे तो मैं तुम्हें इनाम भी दूँगी और अगर नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊँगी।"

तुरन्त ही जादूगरनी ने लड़की को सूत कातने का काम दे दिया और उसके भाई को चलनी में पानी भर कर लाने और उससे एक बड़ा सा टब भरने का काम दे दिया।

बेचारी लड़की चरखे पर बैठ कर रोने लगी। वह रोती जाती थी और अपने ऑसू पोंछती जाती थी।

तभी उसको अपने चारों तरफ बहुत सारे छोटे छोटे चूहे इधर उधर घूमते दिखायी दिये। उन्होंने उससे कहा — "ओ छोटी लड़की। रोओ नहीं। तुम हमको बिस्किट खाने को दो तो हम तुम्हारी सहायता कर देंगे।"

लड़की ने ऐसा ही किया। खा पी कर चूहे बोले — "तुम जा कर बिल्ले को ढूँढो। वह बहुत भूखा है। उसको सूअर के मॉस का एक टुकड़ा देना तो वह तुम्हारी सहायता कर देगा।"

लड़की तुरन्त ही बिल्ले को ढूँढने चली गयी तो उसने देखा कि उसका भाई तो बहुत परेशानी में है। उसने कितनी बार छलनी में पानी भरा पर टब तो अभी भी सूखा था।

उसी समय उधर से कुछ छोटी छोटी चिड़ियें उड़ कर जा रही थीं तो उन्होंने बच्चों से कहा — "मिट्टी में थोड़ा पानी मिला कर उस गीली मिट्टी से चलनी के छेद बन्द कर लो।" और यह कह कर वे उड़ गयीं।"

बच्चों ने समझ लिया कि उन्हें क्या करना है। उन्होंने मिट्टी गीली कर के उसे चलनी पर पोत लिया जिससे उसके छेद बन्द हो गये और फिर उन्होंने चलनी में पानी भर कर टब को भर दिया।

यह करके वे दोनों घर वापस लौटे तो बाहर देहरी पर ही उनको काला बिल्ला मिल गया। उन्होंने उसको प्रेम से सूअर का मॉस खिलाया जो उनकी नानी ने उनको दिया था। उसको प्यार से

थपथपाया और उससे पूछा — "प्यारे काले सुन्दर बिल्ले। हमें बताओ कि हम अपनी इस मालकिन से कैसे छुटकारा पायें।"

बिल्ला कुछ गम्भीर हो कर बोला — "मैं तुम्हें एक तौलिया और एक कंघी देता हूँ। तुम उनको ले कर यहाँ से भाग जाओ। जब तुम सुनो कि जादूगरनी तुम्हारे पीछे आ रही है तो तुम अपने पीछे तौलिया फेंक देना तो जहाँ तौलिया गिरेगा वहाँ एक बहुत बड़ी नदी बहने लगेगी। वह उसको पार नहीं कर पायेगी।

पर अगर उसने उसको किसी तरह पार कर भी लिया तो जब तुम दोबारा उसके आने की आवाज सुनो तो फिर अपने पीछे कंघी फेंक देना। इससे वहाँ एक बहुत अँधेरा घना जंगल पैदा हो जायेगा। यह जंगल तुम्हें उस नीच जादूगरनी मेरी मालकिन से जरूर ही बचा लेगा।"

तभी बाबा यागा[48] घर वापस आ गयी बोली — "अरे क्या यह अच्छा नहीं है कि सब कुछ ठीकठाक है?"

फिर उसने बच्चों से कहा — "आज तो तुमने बहादुरी का काम किया है अब कल देखते हैं। कल तुम्हारा काम और मुश्किल होगा मुझे लगता है कि कल तो मैं तुम्हें खा ही जाऊँगी।"

बेचारे बच्चे रात को सोने चले गये। यह बिस्तर प्यार भरे हाथों से गर्म नहीं बनाया गया था बल्कि एक ठंडे कोने में भूसे का बना हुआ था। डर के मारे मरे हुए से वे वहाँ रात भर वहीं लेटे रहे। वे

[48] Baba Yaga was the name of that wicked witch.

इतने डरे हुए थे कि आपस में बात भी नहीं कर पा रहे थे यहाँ तक कि ठीक से साँस भी नहीं ले पा रहे थे।

अगली सुबह जादूगरनी ने उनसे कहा कि उस दिन उनको पूरी चादर बुननी है और जंगल से आग जलाने के लिये बहुत सारी लकड़ी लानी है और खुद वह वहाँ से चली गयी।

जैसे ही वह चली गयी बच्चों ने तौलिया और कंघी उठायी और वहाँ से जितनी तेज़ भाग सकते थे भाग लिये। कुत्ते उनके पीछे भाग रहे थे। बच्चों ने उनके पास जितने बिस्किट थे कुत्तों को डाल दिये।

आगे चल कर दरवाजे अपने आप नहीं खुले तो बच्चों ने उनमें तेल लगा दिया। सड़क के पास बिर्च का एक पेड़ था जो उनकी आँखें निकालने वाला था तो लड़की ने अपने बालों से खोल कर उसमें एक रिबन बाँध दिया।

वे जल्दी जल्दी आगे बढ़ते जा रहे थे। धीरे धीरे वे उस घने जंगल में से बाहर निकल गये और बाहर निकल धूप में मैदान में आ गये।

उधर बिल्ला खड्डी पर बैठ गया और उसने खुश हो कर सारा धागा तोड़ताड़ कर फेंक दिया।

बाबा यागा घर वापस लौट आयी थी।

आते ही उसने पूछा — "बच्चे कहाँ हैं।"

और बच्चों को वहाँ न देख कर उसने बिल्ले को पीटना शुरू कर दिया और बोली — "ओ नीच बिल्ले तूने उन्हें जाने ही क्यों दिया। तूने उनके चेहरे क्यों नहीं खसोटे?"

बिल्ला बोला — "मैंने तुम्हारी इतने दिनों सेवा की तुमने मुझे एक टुकड़ा भी खाने के लिये नहीं दिया जबकि बच्चों ने मुझे बहुत अच्छा सूअर का माँस खाने के लिये दिया मैं उनके चेहरे क्यों खसोटता।"

इसी तरह से जादूगरनी ने अपने कुत्तों को दरवाजे को और बिर्च के पेड़ को भी डाँटा। तो कुत्ते बोले — "तुम हमारी मालकिन जरूर हो पर तुमने हमें कभी प्यार नहीं किया और ये बच्चे हमारे ऊपर बहुत मेहरबान थे हम इनको कैसे काट सकते थे।"

दरवाजे बोले —"हमने हमेशा तुम्हारा कहना माना पर तुमने हमारी कभी कोई परवाह ही नहीं की। देखो बच्चों ने हमारे कब्जों मे तेल लगाया तो हम उनको कैसे रोक लेते।"

बिर्च का पेड़ अपनी पत्तियों से बोला — "तुमने तो कभी एक सादा सा धागा भी मेरी टहनी में नहीं बाँधा। देखो वह बच्ची अपना मेरी शाख में कितना सुन्दर रिबन बाँध कर गयी है मैं उसकी आँखें कैसे निकाल लेता।"

बाबा यागा को पता चल गया कि उसको किसी से सहायता नहीं मिलने वाली सो उसने खुद ही बच्चों का पीछा करने का फैसला

किया। वह इतनी जल्दी में थी कि वह अपना तौलिया और कंघी देखना भूल गयी। बस अपनी ओखली में बैठी और झाड़ू ले कर चल दी।

बच्चों ने उसके आने की आवाज सुनी तो बिल्ले के बताये अनुसार उन्होंने तौलिया अपने पीछे फेंक दिया।

लो वहॉ तो एक बहुत चौड़ी नदी बन गयी और सारे मैदान में पानी फैल गया। बाबा यागा उसके किनारे किनारे चलती रही जब तक उसको उसे पार करने के लिये एक उथली जगह नहीं मिल गयी। वहॉ से उसने उसे पार किया।

बच्चों ने फिर से उसके आने की आवाज सुनी तो इस बार उन्होंने अपने पीछे कंघी फेंक दी। कंघी फेंकते ही वहॉ एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो गया। एक ऐसा घना जंगल जिसमे उसके पेड़ों की जड़ें आपस में गुॅथी हुई थीं और जिनकी शाखाऐं भी एक दूसरे के अन्दर तक चली गयी थीं।

बाबा यागा ने उसको पार करने की बहुत कोशिश की पर कर न सकी और घर वापस लौट आयी। उधर बच्चे भी तब तक अपने घर पहुॅच गये थे।

घर पहुॅच कर उन्होंने अपने पिता को अपनी परेशानियों के बारे में बताया तो उसने उनकी सौतेली मॉ को घर से बाहर निकाल दिया और फिर नये सिरे से जिन्दगी शुरू की।

उस दिन के बाद से वह उनकी बहुत देखभाल करने लगा और कभी उनकी तरफ से लापरवाह नहीं हुआ।

यह मुझे कैसे पता कि यह कहानी सच्ची है? कोई वहाँ था जिसने मुझे यह कहानी सुनायी।

7 दिमियाँ किसान[49]

यह बहुत पहले की बात नहीं है, या कहो तो शायद बहुत पुरानी बात हो, मैं बहुत यकीन के साथ नहीं कह सकता पर रूस में ही कहीं पर एक गाँव में एक किसान रहता था – मूजिक[50]।

यह किसान बहुत जिद्दी था और इसको गुस्सा भी बहुत जल्दी आता था। इसका नाम था दिमियाँ। यह स्वभाव से ही बहुत कठोर स्वभाव का था और चाहता था कि सारे काम उसी की मर्जी से हों और उसी तरह से हों जैसे वह चाहता हो।

अगर कोई उसके खिलाफ कुछ करता हो या कहता हो तो वह उसका जवाब अपने घूँसे से देने को तैयार रहता था। उदाहरण के लिये कभी कभी वह अपने पड़ोसी को बुलाता तो उसकी बहुत अच्छी अच्छी खाने पीने की चीज़ों से खातिरदारी करता।

पड़ोसी अपने पुराने रीति रिवाज निभाने के लिये उनको मना करने का बहाना करता तो दिमियाँ बस उससे लड़ पड़ता। वह उससे कहता कि उसको मेजबान का कहना मानना चाहिये।

एक बार एक बहुत ही चतुर आदमी उसके घर आया तो हमारे मूजिक दिमियाँ ने मेज पर अपने सबसे अच्छे खाने लगा दिये और

---

[49] Dimian the Peasant (Tale No 7)

[50] Moujik means peasant

अच्छा समय गुजारा। मेहमान ने भी उसका लगाया सारा सामान जल्दी जल्दी खा लिया।

दिमियॉ तो यह देख कर दंग रह गया पर वह उसको छोड़ने वाला थोड़े ही था। वह अपना नया काफ्तान निकाल लाया और अपने मेहमान से कहा — "तुम अपनी यह भेड़ की खाल उतार दो और लो मेरा यह नया काफ्तान पहन लो।"

जब वह उससे यह कह रहा था तो वह सोच रहा था "मैं इस बार शर्त लगाता हूॅ कि यह इसको स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करेगा। और अगर इसने इसको वाकई स्वीकार नहीं किया तो फिर मैं इसको सबक सिखाता हूॅ।

पर उसके उस मेहमान ने तो तुरन्त ही उसका वह नया काफ्तान पहन लिया उसकी पेटी बॉध ली अपने घुॅघराले बालों वाला सिर हिलाया और बोला — "इस भेंट के लिये बहुत बहुत धन्यवाद चाचा जी। मैं इसको न लेने की हिम्मत कैसे कर सकता था। लोगों को अपने मेजबान का कहा तो मानना ही चाहिये।"

अन्दर ही अन्दर दिमियॉ का गुस्सा ऊपर चढ़ता जा रहा था। क्योंकि वह तो उसे अपने तरीके से ही व्यवहार करवाना चाह रहा था। मगर क्या करता।

वह तुरन्त ही अपने अस्तबल की तरफ दौड़ा वहॉ से अपना सबसे अच्छा घोड़ा निकाल कर लाया और अपने मेहमान से बोला — "तुम मेरी सारी चीज़ें ले सकते हो।"

पर मन में उसने सोचा "इस बार यह जरूर ही मना कर देगा तब मेरी बारी आयेगी।"

पर आश्चर्य उसने तो मना ही नहीं किया।

वह मुस्कुराते हुए बोला — "अपने घर में तो आप ही राजा हैं चाचा जी।" कह कर वह तुरन्त ही उस घोड़े पर कूद कर बैठ गया और दिमियॉ किसान पर चिल्ला कर बोला — "विदा मास्टर आपको किसी दूसरे ने जाल में नहीं फॉसा सिवाय आपने खुद ने।"

और यह कह कर वह वहॉ से चला गया। दिमियॉ उसके पीछे देखता रह गया। फिर बोला — "मैंने गलत आदमी पर निशाना लगाया।"

8 सोने का पहाड़[51]

एक बार की बात है कि एक सौदागर के बेटे ने काफी पैसा खर्च कर के वहुत दिन तक बहुत आनन्द किया। पर फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उसने देखा कि वह तो वर्बाद हो गया है उसका तो सारा पैसा खर्च हो गया है। उसके पास तो अब खाने पीने के लिये भी पैसा नहीं है।

तब उसने एक फावड़ा उठाया और बाजार की तरफ चल दिया यह देखने के लिये कि शायद कोई उसको मजदूर की तरह ही काम पर रख ले।

एक अमीर घमंडी सौदागर जिसकी कई हजारों की हैसियत थी आदमी सुनहरी गाड़ी में वहॉ आया। उसको देखते ही बाजार में बैठे सब लोग इधर उधर भागने लगे और जा कर कोनों में छिप गये। केवल एक ही आदमी वहॉ बचा खड़ा था और वह था हमारे सौदागर का गरीब बेटा।

उस अमीर सौदागर ने जब उसको देखा तो बोला — "क्या तुम यहॉ काम ढूॅढ रहे हो? चलो मैं तुमको काम पर रखता हूॅ।"

"ठीक है। मैं यहॉ इसी लिये आया था।"

"तुम क्या मजदूरी लोगे?"

[51] The Golden Mountain (Tale No 8)

"सौ रूबल[52] रोज के मेरे लिये काफी रहेंगे।"

"इतने ज़्यादा क्यों?"

सौदागर का बेटा बोला — "अगर ये पैसे आपको ज़्यादा लगते हैं तो कोई और आदमी देख लीजिये। यहाँ तो बहुत सारे लोग थे पर जब उन्होंने आपको आते देखा तो वे सब यहाँ से भाग गये।"

अमीर सौदागर बोला — "ठीक है कल बन्दरगाह पर आ जाना।"

अगले दिन सुबह सवेरे जब सौदागर का गरीब बेटा बन्दरगाह पर पहुँचा तो वह अमीर सौदागर पहले से ही वहाँ मौजूद था और उसका इन्तजार कर रहा था।

वे लोग एक जहाज़ पर चढ़े और समुद्र में चल दिये। वे लोग काफी समय तक उस जहाज़ में चलते रहे। आखिर वे एक टापू पर आ गये। उस टापू पर बहुत ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे।

किनारे के पास ही अपने सौदागर के गरीब बेटे को आग जलती दिखायी दी तो उसने अमीर सौदागर से कहा — "यह तो यहाँ पर आग सी दिखायी दे रही है।"

अमीर सौदागर बोला — "नहीं यह आग नहीं है। यह मेरा सोने का महल है।"

वे उस टापू पर उतर कर किनारे पर आये। तो देखो तो उस अमीर सौदागर की पत्नी तुरन्त ही उसका स्वागत करने के लिये उस

[52] Rouble is the currency of Russia

महल से बाहर आयी। साथ में उमकी छोटी बेटी भी थी – बहुत सुन्दर। इतनी प्यारी जितनी कि तुम सोचना तो दूर सपने में भी न देख सको।

परिवार आपस में मिला और फिर सब महल के अन्दर चले गये। साथ में गया उनका नया काम करने वाला भी। वे सब एक ओक की मेज के चारों तरफ बैठे। वहॉ उन्होंने खाया पिया और सब बहुत खुश थे।

अमीर सौदागर ने कहा — "एक दिन कोई खास मायने नहीं रखता। आज छोड़ो कल से काम शुरू करेंगे।"

अपना नौजवान काम करने वाला एक सुन्दर और बहादुर आदमी था। वह देखने में एक शाही परिवार का लगता था सो अमीर सौदागर की बेटी उसको पसन्द करने लगी।

जब वह उस कमरे से गयी तो इशारे से उस नौजवान को अपने पीछे आने का इशारा करती गयी। उसका इशारा पा कर वह उसके पीछे पीछे चला गया।

उसने उसको एक पारस पत्थर और एक चकमक पत्थर[53] दिया और कहा — "लो ये ले लो। जरूरत पड़ने पर ये तुम्हारे काम आयेंगे।"

[53] She gave him one Touchstone and one Flint stone. Touchstone converts the iron into gold, and Flint Stone is used to start fire.

अगले दिन वह अमीर सौदागर अपने नये मजदूर के साथ एक ऊँचे सोने के पहाड़ पर गया। हमारे नौजवान आदमी ने देखा कि उस पहाड़ पर चढ़ने का तो छोड़ो उस पर तो रेंग कर जाना भी मुमकिन नहीं था।

अमीर सौदागर बोला — "हिम्मत के लिये हम थोड़ा सा कुछ पी लेते हैं।" कह कर उसने नौजवान को एक नींद लाने वाला पेय पीने के लिये दिया। नौजवान ने वह पी लिया और वह सो गया।

अमीर सौदागर ने एक तेज़ चाकू लिया एक घोड़े को मारा उसे काट कर खोला और उस नौजवान को और उसके फावड़े को उसके अन्दर रख दिया। फिर उसने घोड़े की खाल को सिल दिया और खुद वहीं पास की झाड़ी में छिप कर बैठ गया।

कुछ पल बाद ही वहाँ कौए आ गये – काले कौए जिनकी लोहे की चोंचें थीं। तुरन्त ही उन्होंने घोड़े को खाना शुरू कर दिया। घोड़े को खा कर वे सौदागर के बेटे को खाने ही वाले थे कि वह जाग गया। उसने हाथ से कौओं को दूर भगाया चारों तरफ देखा और फिर ज़ोर से बोला — "मैं कहाँ हूँ?"

अमीर सौदागर जो नीचे खड़ा था बोला — "तुम एक सोने के पहाड़ पर हो। अपना फावड़ा उठाओ और सोना खोदो।"

नौजवान ने अपना फावड़ा उठाया और सोना खोदना शुरू कर दिया। जितना भी सोना उसने खोदा सब उसने नीचे फेंक दिया। अमीर सौदागर ने उसे उठा कर अपनी गाड़ियों में भर लिया।

बाद में मास्टर चिल्लाया — "बस काफी हो गया। तुम्हारी सहायता के लिये धन्यवाद। अब विदा।"

"और अब मैं उतरूँगा कैसे?"

"जैसे भी तुमको खुशी हो। वहाँ पर अब तक तुम्हारे जैसे 99 लोग मर चुके हैं। तुम्हारे साथ अब उन मरने वालों की गिनती 100 हो जायेगी।" कह कर वह घमंडी अमीर सौदागर वहाँ से चला गया।

गरीब सौदागर के बेटे ने सोचा "अब मैं क्या करूँ। यहाँ से नीचे जाना तो नामुमकिन है पर अगर मैं यहाँ ठहर गया तब तो मैं बिल्कुल ही मर जाऊँगा और वह भी बड़ी बेरहमी की मौत से – भूख से।"

और हमारा नौजवान वहीं उस सोने के पहाड़ पर ही खड़ा रह गया। उसके सिर के ऊपर अभी भी वे काले कौए मँडरा रहे थे – वे काले कौए जिनकी लोहे की चोंच थी। उनको ऐसा लग रहा था कि उनका शिकार अभी भी वहाँ मौजूद था।

फिर उस नौजवान ने सोचना शुरू किया कि यह सब हुआ कैसे। तब उसे याद आयी वह सुन्दर लड़की और उसका कहा हुआ जब उसने उसको पारस पत्थर और चकमक पत्थर दिये थे। उसे यह भी याद आया कि उसने ये शब्द कैसे कहे थे — "लो ये ले लो। जरूरत पड़ने पर ये तुम्हारे काम आयेंगे।"

मुझे लगता है कि उस समय उसके दिमाग में जरूर कुछ होगा। उनको इस्तेमाल कर के देखता हूँ।

सो गरीब सौदागर के बेटे ने पारस पत्थर निकाला और चकमक पत्थर निकाला। उन दोनों को एक एक बार मारा कि उनमें से दो बहादुर आदमी उसके सामने खड़े हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है। तुम्हारा क्या हुक्म है।"

"मुझे इस पहाड़ से नीचे समुद्र के किनारे ले चलो।" तुरन्त ही उन्होंने उसको उठाया और सॅभाल कर नीचे ले आये।

अब हमारा हीरो समुद्र के किनारे चक्कर काट रहा था कि तभी उसने एक जहाज़ उस टापू की तरफ आते देखा। जब वह जहाज़ टापू की तरफ आया तो उसने उस जहाज़ के लोगों से कहा — "ओ भले लोगों मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

उन्होंने कहा — "हमारे पास रुकने का समय नहीं है।" और वे अपना जहाज़ खेते हुए वहॉ से चले गये।

तभी बहुत ज़ोर से हवाऐं चलने लगीं तूफान भारी था। यह देख कर जहाज़ वालों ने सोचा "लगता है कि यह टापू वाला आदमी कोई मामूली आदमी नहीं था। अच्छा हो कि हम लोग वापस जा कर उसको अपने साथ ले लें।"

सो उन्होंने अपना जहाज़ टापू की तरफ मोड़ दिया। वहाँ जा कर उन्होंने जहाज़ रोका। उस आदमी को वहाँ से लिया और उसको उसके शहर छोड़ दिया।

काफी दिनों बाद या फिर केवल कुछ समय बाद ही – कौन बता सकता है, सौदागर के गरीब बेटे ने फिर से अपना फावड़ा उठाया और फिर से काम ढूँढने के लिये बाजार में जा कर बैठ गया।

वही अमीर सौदागर अपनी सुनहरी गाड़ी में फिर से वहाँ आया और फिर से पहले की तरह से वहाँ बैठे सब लोग वहाँ से भाग गये। गरीब सौदागर का बेटा ही वहाँ अकेला रह गया।

"क्या तुम मेरा काम करना पसन्द करोगे?"

"मुझे दो सौ रूबल एक दिन का चाहिये। अगर आप दे सकते हैं तो मैं आपके साथ चलता हूँ।"

"तुम तो बहुत मँहगे मजदूर हो।"

"अगर मैं आपको बहुत मँहगा लगता हूँ तो किसी दूसरे को ले लीजिये जो आपके लिये सस्ते में काम कर दे। अभी तो यहाँ बहुत सारे लोग बैठे हुए थे पर आपको आते देखते ही वे सब यहाँ से भाग गये। अब तो यहाँ एक भी आदमी नहीं है।"

"ठीक है कल बन्दरगाह पर आ जाना।"

अगले दिन सुबह ही सौदागर का गरीब बेटा बन्दरगाह पर पहुँच गया। वहाँ वे एक जहाज़ पर चढ़े और उसी टापू की तरफ चल

दिये जिसकी तरफ वे पहले गये थे। पहला दिन उन्होंने उस टापू पर आनन्द से मनाया। अगले दिन दोनों मास्टर और मजदूर काम पर गये।

जब वे उस सोने के पहाड़ के पास पहुँचे तो अमीर सौदागर ने अपने मजदूर को एक गिलास में शराब पीने को दी और कहा — "काम करने से पहले इसे पी लो। इसको पीने से तुम काम करने में अच्छा महसूस करोगे।"

"ज़रा रुकिये मालिक। आप मालिक हैं पहले इसे आप पीजिये। इस बार मैं आपको पिलाता हूँ।"

नौजवान ने पहले से ही एक सुलाने वाला पेय तैयार कर के रखा हुआ था सो उसने जल्दी से उसे शराब में मिला दिया और मास्टर को वह शराब दे दी। घमंडी सौदागर उसको पी गया और जल्दी ही सो गया।

हमारे नौजवान ने भी एक घोड़ा मारा उसे काट कर खोला और अपने मास्टर और फावड़े को उसमें धकेल दिया। घोड़े की खाल को सिला और खुद एक झाड़ी में छिप कर बैठ गया।

तुरन्त ही वहाँ कौए उड़ते हुए आ गये – लोहे की चोंच वाले काले कौए। उन्होंने सौदागर रखे मरे हुए घोड़े को उठाया और पहाड़ पर ले गये और अपने शिकार की हड्डियाँ खाने लगे।

जब सौदागर की आँख खुली तो उसने इधर देखा उधर देखा ऊपर देखा नीचे देखा और चिल्लाया — "मैं कहाँ हूँ?"

"सोने के पहाड़ पर। अब अगर आप में आराम करने के बाद कुछ ताकत आ गयी हो तो आप अपना समय बर्बाद मत कीजिये फावड़ा उठाइये और सोना खोदना शुरू कीजिये। और हॉ जल्दी जल्दी खोदिये फिर मैं आपको बताता हूॅ कि आपको नीचे कैसे आना है।

अब उस घमंडी अमीर सौदागर के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपने नौजवान मजदूर की बात मानता सो उसने फावड़ा उठाया और सोना खोदना शुरू किया। बारह गाड़ी सोना खोदा गया।

गरीब सौदागर का बेटा नीचे से चिल्लाया — "बस काफी है। इसके लिये आपको बहुत बहुत धन्यवाद। अब विदा।"

यह सुन कर वह घमंडी अमीर सौदागर बोला — "और मैं? मैं नीचे कैसे आऊॅगा?"

"आपकी जैसी इच्छा हो आप वैसा कर सकते हैं। निन्यानवे लोग तो वहॉ पहले ही मर चुके हैं और अब आप मर जायेंगे तो पूरे 100 हो जायेंगे।"

कह कर सौदागर के गरीब बेटे ने वे 12 गाड़ी भरा सोना लिया और सोने के महल आ पहुॅचा। वहॉ आ कर उसने अमीर सौदागर की सुन्दर लड़की से शादी की।

अमीर सौदागर की बेटी अब अपने पिता की मौत के बाद जायदाद और पैसे की अकेली मालिक बन चुकी थी।

गरीब सौदागर का बेटा जो अब गरीब नहीं रह गया था अपने परिवार के साथ एक बड़े शहर में रहने के लिये चला गया।

पर उस घमंडी अमीर सौदागर का क्या हुआ?

अपने दूसरे शिकारों की तरह से वह खुद सोने के पहाड़ पर काले कौओं का शिकार बन गया – वे काले कौए जिनकी लोहे की चोंचें थीं।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि कोई जाल किसी और के लिये फेंका जाता है पर वह अपने ऊपर ही आ कर पड़ जाता है। ऐसा ही कुछ इस घमंडी अमीर सौदागर के साथ भी हुआ। वह मारना तो चाहता था उस नौजवान को पर बेचारा खुद ही मर गया।
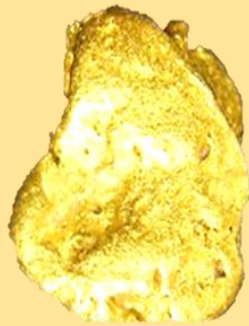
9 पिता पाला[54]

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक सौतेली माँ रहती थी जिसके एक सौतेली बेटी थी और एक उसकी अपनी बेटी थी।

उसको अपनी बेटी बहुत प्यारी थी। वह जो भी करती उसकी माँ पहली होती जो उसके उस काम की तारीफ करती। उसको शाबाशी देती पर सौतेली बेटी को कोई तारीफ या शाबाशी नहीं मिलती।

हालाँकि वह बहुत अच्छी और दयालु थी फिर भी उसको सिवाय बुरे शब्दों के और कुछ नहीं मिलता। अब इसके लिये क्या किया जा सकता था।

हवा का काम है चलना पर फिर भी कभी कभी वह रुक जाती है। पर वह बुरी औरत यह नहीं जानती थी कि वह अपने बुरेपन को कैसे रोके।

एक दिन बहुत ठंडा दिन था तो उस सौतेली माँ ने अपने पति से कहा — "ओ बूढ़े मैं चाहती हूँ कि तुम अपनी बेटी को मेरी नजरों से दूर ले जाओ मेरे कानों से दूर ले जाओ।

---

[54] The Father Frost (Tale No 9)

तुम उसे अपने लोगों में किसी गर्म जगह नहीं ले जाओगे। तुम उसे किसी खुले हुए बड़े मैदान में ले जाओगे जहाँ जानतोड़ पाला पड़ता है।"

यह सुन कर लड़की का पिता बहुत दुखी हुआ। यहाँ तक कि वह रो पड़ा पर फिर भी उसने उसको स्ले[55] में बिठाया और खुले मैदान की तरफ ले चला।

उसकी इच्छा थी कि वह उसको ठंड से बचाने के लिये भेड़ की खाल ओढ़ा दे पर फिर भी वह यह नहीं कर सका क्योंकि उसकी पत्नी खिड़की से उसे देख रही थी।

सो वह अपनी प्यारी बेटी को ले कर एक बहुत खुले हुए मैदान में चला गया। जंगल के पास उसको अकेला छोड़ा और तुरन्त ही वहाँ से जल्दी जल्दी चला आया। वह एक बहुत अच्छा आदमी था वह अपनी बेटी की मौत नहीं देख सकता था।

वह बेचारी प्यारी सी बेटी वहाँ अकेली बिल्कुल अकेली खड़ी रह गयी। उसका दिल टूट गया था वह बहुत डरी हुई थी। उसने जल्दी जल्दी जितनी भी प्रार्थनाऐं उसको याद थीं वे सब बोलीं।

पिता पाला[56] जो वहाँ का अकेला राजा था जो फ़र में लिपटा हुआ था जिसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी जिसके सिर पर

[55] Sleigh is wheelless carriage drawn by special dogs or deer espaecially in icy regions where other normal vehicles cannot run. See its picture above.
[56] Translated for the words "Father Frost"

चमकीला सफेद ताज था वह उसके पास और और पास आया। उसने अपने सुन्दर छोटे मेहमान की तरफ देखा और पूछा — "क्या तू मुझे जानती है? मैं लाल नाक वाला पाला।"

लड़की बड़ी नम्रता से बोली — "आपका स्वागत है पिता पाले। मुझे लगता है कि मेरे भगवान ने आपको मेरी पापपूर्ण आत्मा के लिये भेजा है।"

पाले ने फिर पूछा — "मेरी प्यारी बच्ची क्या तू यहाँ ठीक से है?" वह उसके प्यारी सी सूरत और कोमल स्वभाव से बहुत खुश था।

लड़की ठंड से ठीक से साँस भी नहीं ले पा रही थी फिर भी वह बोली — "हाँ पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और लड़की ठंडी होने के बावजूद यह कहती रही "मैं बिल्कुल ठीक हूँ मेरे प्रिय पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

पर पिता पाला आदमियों की कमजोरियों को जानता था। वह जानता था कि केवल कुछ आदमी ही ऐसे होते हैं जो अच्छे और दयालु होते हैं पर वह किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता था जो बहुत देर तक ठंड सह सकता हो या पाले की ताकत का मुकाबला कर सकता हो।

छोटी लड़की का दया भाव और उसकी नम्रता उसको इतनी प्रभावित कर गयी कि उसने सोचा कि वह उससे दूसरे लोगों की

तुलना में कुछ अलग तरीके से बर्ताव करेगा सो उसने उसको एक बड़ा बक्सा भर के बहुत सारी बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें दीं।

उसने उसको एक बहुत ही कीमती शूबा[57] दिया जिसके नीचे फ़र लगा हुआ था। उसने उसको रेशम की रजाइयाँ दीं जो पंखों की तरह से मुलायम थीं और माँ की गोद की तरह से गर्म थीं। उसने उसको और भी बहुत सारे सुन्दर और कीमती कपड़े दिये।

इन सब चीज़ों को पा कर वह तो क्या ही अमीर बच्ची बन गयी। और इस सबके अलावा बूढ़े पाले ने उसको नीले रंग का एक सैरैफान[58] भी दिया जिस पर चाँदी और मोतियों का काम हो रखा था।

जब उस लड़की ने उसको पहना तो वह तो इतनी सुन्दर लड़की हो गयी कि सूरज भी उसको देख कर मुस्कुरा दिया।

अब हम उसकी सौतेली माँ के पास चलते हैं। उसकी सौतेली माँ रसोईघर में काम कर रही थी। वह घर के लिये पैनकेक बनाने में लगी हुई थी। रूस में यह रिवाज है कि किसी की मौत के बाद ये पैनकेक पुजारी जी को खिलाये जाते हैं।

---

[57] Schouba is a large Russian type of fur-lined coat

[58] Sarafan is the Russian national costume for women

पत्नी ने पति से कहा — "अब ओ बूढ़े तुम उस बड़े मैदान में जाओ और अपनी बेटी की लाश ले कर आओ। हम उसको दफ़ना देंगे।"

बूढ़ा यह सुन कर चला गया और उनका छोटा कुत्ता जो वहीं एक कोने में बैठा था अपनी पूँछ हिला कर बोला — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी तो घर वापस आ रही है। वह इतनी खुश है और इतनी सुन्दर हो गयी है जितनी पहले कभी नहीं थी। और नीच मॉ की बेटी उतनी ही बुरी है जितनी कि वह पहले थी।"

यह सुन कर सौतेली मॉ ने उसको मारा और चिल्लायी — "चुप रह ओ बेवकूफ जंगली जानवर चुप रह। ले यह पैनकेक ले और इसे खा और कह "बुढ़िया की बेटी की शादी बहुत जल्दी होगी और बूढ़े की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।" कह कर उसने एक पैनकेक उसकी तरफ फेंक दिया।

अब उस कुत्ते ने कुछ नया कहना शुरू किया — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी अमीर और खुश हो कर जल्दी ही घर आ रही है जैसी वह पहले कभी नहीं थी। और बुढ़िया की बेटी अभी भी घरेलू और बुरी है जैसी कि वह पहले थी।"

बुढ़िया को कुत्ते पर बहुत ज़ोर से गुस्सा आ गया उसने फिर से उसको पैनकेक दिया और मारा पर पेनकेक देने और मारने के बावजूद वह कुत्ता वही शब्द बार बार दोहराता रहा। न तो वह चुप हुआ और न अपने कहे शब्द ही बदले।

तभी किसी ने घर का फाटक खोला। पत्नी को किसी की हॅसी की और बात करने की अवाज सुनायी पड़ी तो बुढ़िया ने बाहर झॉक कर देखा तो आश्चर्य में डूबी वहीं की वहीं बैठ गयी।

उसकी सौतेली बेटी तो राजकुमारी की तरह बहुत सुन्दर कपड़ों में सजी धजी चली आ रही थी। और उसका बूढ़ा पिता बड़ी मुश्किल से उसका वह भारी बक्सा उठा कर ला पा रहा था जिसमें उसकी बेटी के पहनने के कपड़े रखे थे।

सौतेली मॉ तो यह देख कर एक तरफ तो दुखी हो गयी कि उसकी सौतेली बेटी इतनी सर्दी में भी इतनी देर तक रहने के बाद भी ज़िन्दा ही घर वापस चली आ रही थी। पर दूसरी तरफ उसको सजी धजी देख कर जल उठी कि यह सब उसकी अपनी बेटी की किस्मत में भी तो हो सकता था।

सो उसने बड़ी बेचैनी से कहा — “ओ बूढ़े अपने सबसे अच्छे घोड़ों को अपनी सबसे अच्छी स्ले में जोतो और मेरी बेटी को भी वहीं उसी जगह ले जाओ बड़े बड़े खुले मैदान में जहॉ तुम अपनी बेटी को छोड़ कर आये थे।”

बूढ़े ने एक बार फिर अपनी पत्नी का कहना माना जैसे कि वह पहले मानता था और अपनी सौतेली बेटी को भी वहीं ले गया जहॉ वह अपनी बेटी को छोड़ कर आया था और उसको वहीं छोड़ कर घर आ गया।

बूढ़ा पाला अभी भी वहीं था। उसने अपने नये मेहमान को देखा। लाल नाक वाले पाले ने उससे पूछा — “ओ सुन्दर लड़की क्या तुम ठीक हो?”

लड़की ने बड़े गुस्से से जवाब दिया — “मुझे अकेला छोड़ दो। क्या तुम्हें दिखायी नहीं दे रहा कि मेरे हाथ पॉव ठंड से अकड़े जा रहे हैं?”

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और उस लड़की से कुछ सवाल पूछता रहा पर उससे उसे कोई नम्र जवाब नहीं मिला। इससे वह गुस्सा हो गया और उसने उसको ठंड में जमा कर मार दिया।

इधर कुछ देर बाद सौतेली मॉ ने अपने पति से कहा — “ओ बूढ़े जाओ और जा कर मेरी बेटी को ले कर आओ। उसके लिये सबसे अच्छे घोड़े ले कर जाना। स्ले चलाते समय ख्याल रखना कि स्ले कहीं उलट पलट न हो जाये। और वह बक्सा जो वह साथ ले कर आयेगी उसका भी ख्याल रखना।”

और कोने में बैठा कुत्ता बोला — “भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी की शादी जल्दी होगी। और बुढ़िया की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।”

बुढ़िया यह सुन कर गुस्से में बोली — “झूठ मत बोल। ले यह केक ले और खा और बोल कि “बुढ़िया की बेटी चॉदी और सोने लिपटी आयेगी।” तभी घर का फाटक खुला।

बुढ़िया घर से बाहर भागी गयी और अपनी बेटी की जमी हुई अकड़ी हुई लाश के ठंडे होठों को चूमा। वह उसको देख देख कर बहुत देर तक रोती रही पर अब उसकी सहायता कौन करता।

आखिर उसने यह भी समझ लिया कि उसकी और उसकी बेटी की नीचता और जलन ने ही उसकी बेटी की जान ली है। पर अब क्या हो सकता था।

Some Russian Folktale Books

Russian Folktales. by William Ralston S Ralston. London. **1873**. 51 folktales
Available in English at : https://archive.org/details/russianfolktales00ralsrich/page/n6 **AND**
https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
----
Russian Folk-tales (in Russian). by Afanasyev, Alexander Nikolaevich. **1889**. 73 tales
There are two translations of above book….
(A) Russian Wonder Tales. tr in English by George Post Wheeler. St Petersberg. 1911.
Available in English at : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Wonder_Tales/Foreword

(B) Russian Folk-tales. tr in English by Leonard Arthur Magnus. **1916**. 73 tales.
Available in English at : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
----
Russian Folk-tales. by Riordon, James. **2000**.

Folk Tales from the Russian. by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal, **1903**. 9 tales.
Available in English at : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap03.htm#page_66

Old Peter's Russian Tales. by Arthur Ransome. London : TC & EC Jack. **1916**.
Available in English at : http://www.surlalunefairytales.com/russian/oldpetersrussian.html
===

Russian Folktales in Hindi
1. "Roosi Lok Kathayen" by Madan Lal "Madhu" and Om Prakash Sangal with 33 folktales in 1960.
2. "Roopvati Vasilisa (Old Russian Folktales in Hindi)" with 16 folktales - no date.
3. "Roos Ki Lok Kathayen" by Rajendra Mohun Sastry and Mridula Sharma with 16 folktales in 2006.
4. "Heere Moti - Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen" by Soviet Stories. 2010. 36 folktales.

Web Site : http://www.oldrussia.net/vas.html

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियाँ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
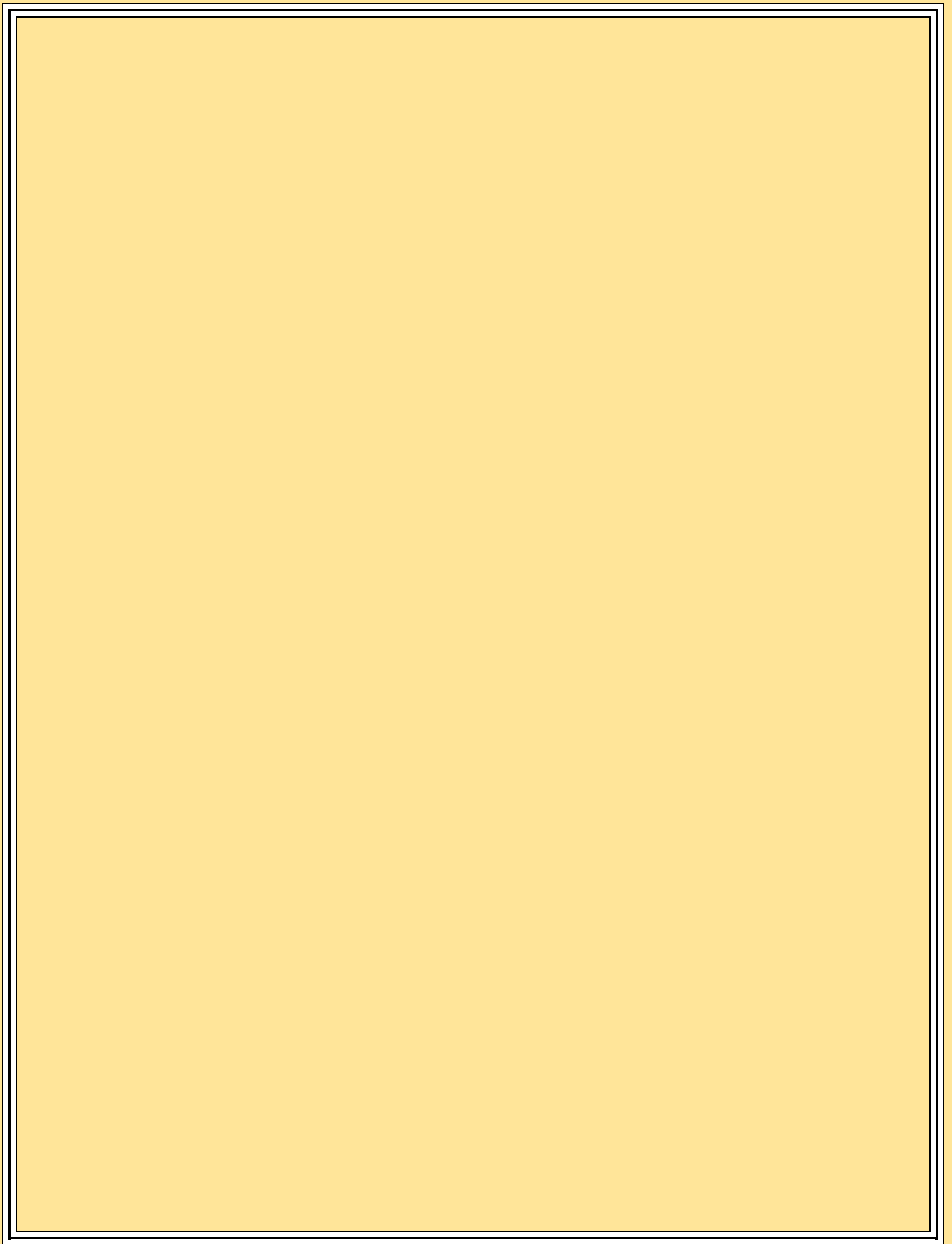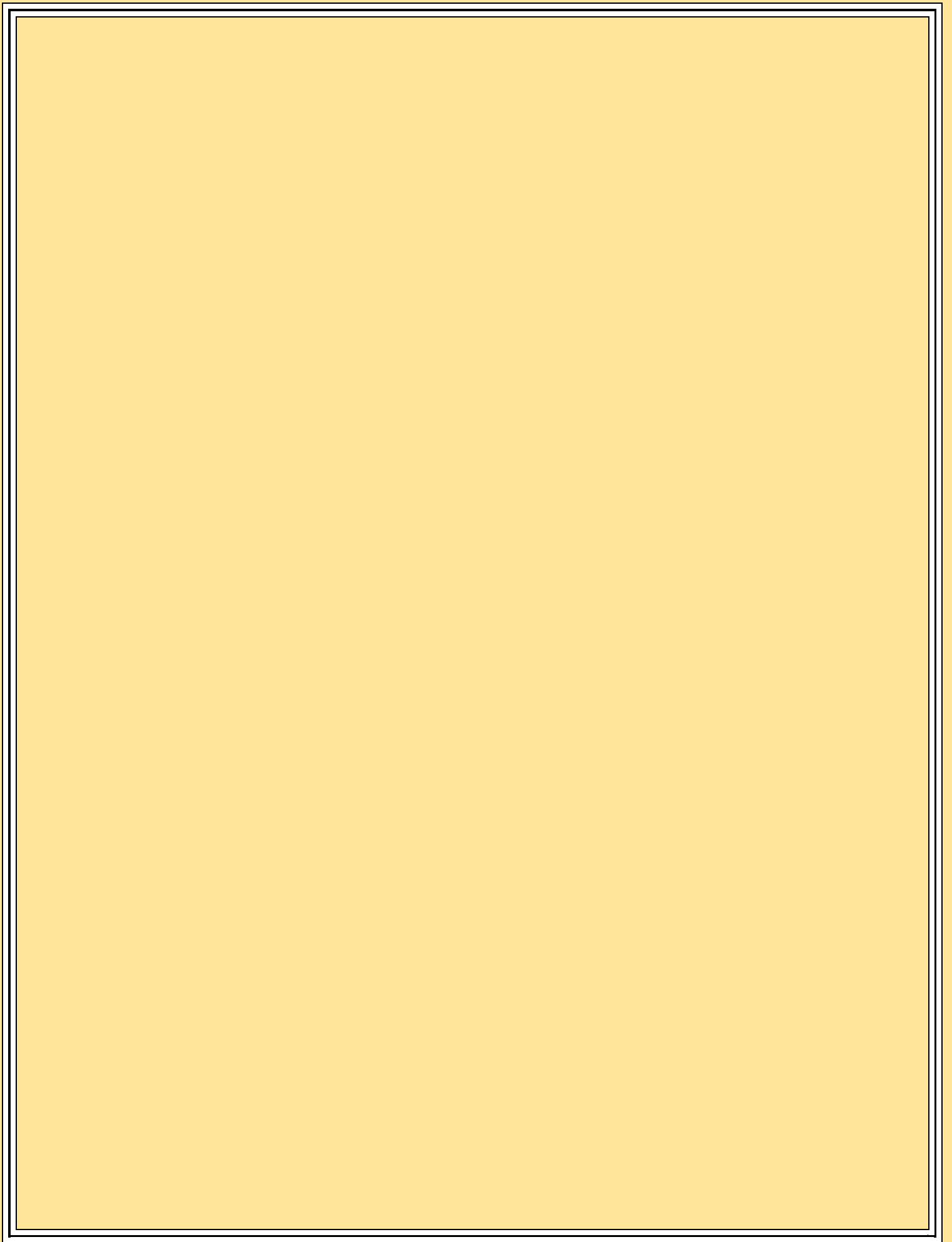
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022